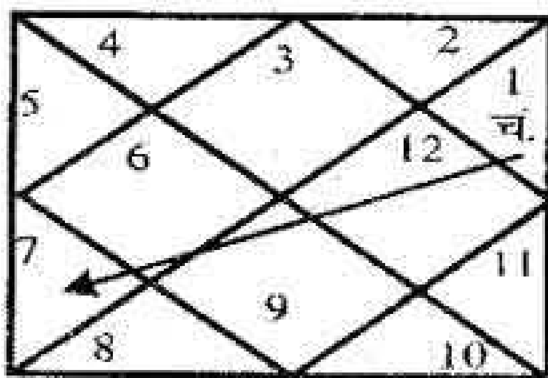
दशम स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या दोपहर 2 से 12 बजे के बीच होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव कन्या राशि पर होगी, जातक को उत्तम वाहन सुख एवं भवन सुख की प्राप्ति होगी। जातक का राज्य सरकार या राजनीति में दबदबा रहेगा, क्योंकि सूर्य यहां उच्चाभिलाषी है।

2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार दशम स्थान में मीन राशि गत दोनों ग्रहों की दृष्टि लग्न भाव (मिथुन राशि), चुतर्थ भाव (कन्या राशि) एवं पंचम भाव (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक को जीवन के सभी भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। कुलदीपक योग के कारण जातक को जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी पर जातक का सही भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक कुल का दीपक एवं चमकता सितारा होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के दशम स्थान में चंद्र+गुरु की युति वस्तुत: धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बृहस्पति स्वगृही होकर केन्द्रस्थ होने से 'हंस योग' की सृष्टि कर रहा है। दोनों ग्रह बली होकर धन स्थान, सुख स्थान एवं छठें भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलत: आपके पास चल-अचल सम्पत्ति बहुत होगी। आपको अनेक वाहनों का सुख भी होगा। आयु दीर्घ होगी। पद्मसिंहासन योग के कारण आप साधारण परिवार में जन्म लेकर भी उन्नति के पथ पर बहुत आगे बढ़ जायेंगे।
5. **चंद्र+शुक्र**–'मालव्य योग' के कारण जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक भाग्यशाली एवं धनी होगा।
7. **चंद्र+राहु**–सरकारी क्षेत्र में धोखा होगा।
8. **चंद्र+केतु**–सरकारी कार्य में बाधा आयेगी।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में



मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योग कारक ग्रह माना गया है। एकादश स्थान में चंद्रमा मेष राशि में होगा। मेष चंद्रमा की मित्र राशि है। ऐसा जातक थोड़ा

क्रोधी, उग्र स्वभाव का होगा। इसके कारण कई बार मानसिक संतुलन खो बैठता है। जातक महत्वकांक्षी होगा एवं धनवान होगा। जातक राज्य सरकार या सामाजिक संस्थानों द्वारा सम्मानित भी होगा।

दृष्टि–एकादश भावगत चंद्रमा की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक अध्यात्म विद्या, गूढ़ विद्या का जानकार होता है।

निशानी–जातक व्यापार-प्रिय होगा।

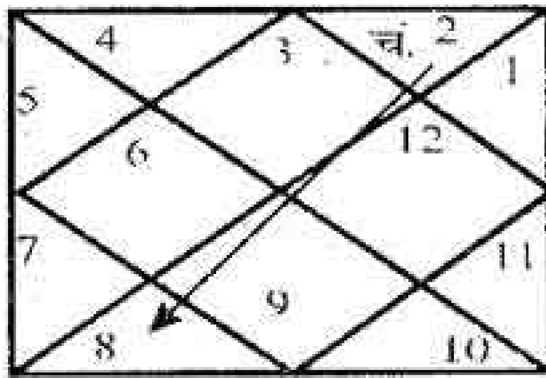
दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक को धन की प्राप्ति होगी। जातक का व्यापार-व्यवसाय बढ़ेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या के दिन के दस-ग्यारह बजे के लगभग होता है। यहां सूर्य उच्च का होगा। सूर्य दस अंशों में परमोच्च का होगा। फलतः 'रविकृत राजयोग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम स्थान (तुला राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक विद्यवान व तेजस्वी होगा। उसकी सन्तति भी तेजस्वी होगी। जातक निश्चय ही पराक्रमी होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार एकादश स्थान में मेष राशि गत मंगल स्वगृही होगा। फलतः 'महालक्ष्मी योग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन स्थान (कर्क राशि), पंचम भाव (तुला राशि) एवं छठे स्थान (वृश्चिक राशि) को देखेंगे। फलतः जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। अति धनवान होगा। उद्योगपति होगा एवं भाग्योदय प्रथम पुत्र सन्तति के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक व्यापार-प्रिय व्यक्ति होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के एकादश स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। ये दोनों शुभ ग्रह यहां बैठकर तृतीय स्थान, पंचम स्थान एवं सप्तम स्थान पर पूर्ण दृष्टिपात करेंगे। फलतः आपके पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि होगी। सन्तान उत्तम विद्यासुख श्रेष्ठ होगा। विवाह अच्छे घर-घराने में होगा। पत्नी सुन्दर मिलेगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी।

6. **चंद्र+शनि**–जातक धनी व उद्योगपति होगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक हिसंक स्वभाव का होगा। पागलपन के दौरे भी आ सकते हैं।
8. **चंद्र+केतु**–जातक मानसिक रूप से उद्विग्न रहेगा।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में



मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश हैं। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परमशत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न के योगकारक ग्रह माना गया है। द्वादश स्थान में चंद्रमा वृष राशि में होगा। चंद्रमा के कारण 'धनहीन योग' बनेगा। पर चंद्रमा यहां उच्च का होगा तथा 5 अंशों तक परमोच्च का है। इस भाव चंद्रमा अपनी कर्कराशि में एकादश स्थान में होने के कारण द्वितीय भाव के पूर्ण फल प्रदान करेगा। निश्चय ही जातक धनी, मानी और अभिमानी होगा। लालकिताब वाले इसे 'रात का तूफान' कहते हैं। जातक यात्राओं के द्वारा (विदेश यात्रा) धन कमायेगा।

दृष्टि–चंद्रमा की दृष्टि छठे स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–ऐसा जातक जीवन में स्वप्रयास से जो कुछ कमायेगा वह स्थाई रहेगा। माता-पिता की सम्पत्ति स्थाई काम न आ पायेगी।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में जातक यश-कीर्ति का अर्जन करेगा। यह दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

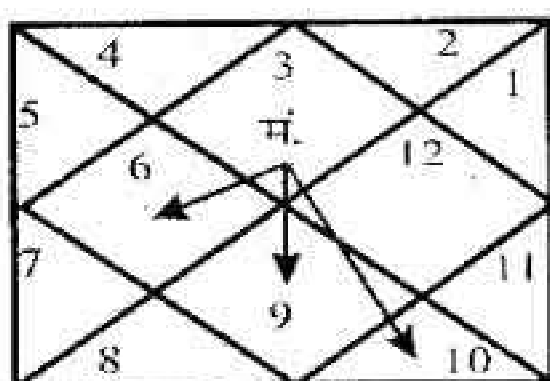
1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चंद्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह वृषराशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को प्रातः आठ बजे के आसपास होता है। यहां चंद्रमा उच्च का होगा। चंद्रमा तीन अंशों में परमोच्च का होगा। दोनों ग्रहों के द्वादश में जाने से 'पराक्रमभंगयोग' एवं 'धनहीनयोग' बनता है। परन्तु धनेश उच्च का होने से जातक के पास धन तो बहु आयेगा पर धन एकत्रित नहीं हो पायेगा, रुपयों की बरकत नहीं होगी।

2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार द्वादश स्थान में वृषराशिगत चंद्रमा उच्च का होगा। धनेश उच्च का होने से 'महालक्ष्मीयोग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान (सिंह राशि) छठास्थान (वृश्चिक राशि) एवं सप्तम स्थान (धनु राशि) में देखेंगे फलतः ऐसा जातक ऋणरोग व शत्रु का नाश करने में समर्थ होगा। महापराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–लग्नभंग योग के कारण परिश्रम का पूरा फल नहीं मिलेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के द्वादश स्थान में गुरु+चंद्र की युति गजकेसरी योग की सृष्टि कर रही है। यहां उच्च का है, चंद्रमा स्वगृही, इससे अधिक और क्या चाहिए? गुरु चंद्र की यह युति धनेश व दसमेश की युति है। आपके भाग्य में अद्वितीय वृद्धि कर रही है। यह युति संतति सुख देगी परंतु विवाह सुख में बाधक है। पत्नी फिजूल खर्च करने वाली होगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–यहां 'किम्बहुनायोग' बनेगा। चंद्रमा उच्च का, शुक्र स्वगृही जातक को ट्रेवलिंग ऐजेंसी से लाभ होगा। विदेश में धन कमायेगा।
6. **चंद्र+शनि**–'भाग्यभंग योग' बनेगा पर विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान एवं उत्तम वाहन का स्वामी होगा।
7. **चंद्र+राहु**–विदेश यात्र होगा जातक परदेश में कमायेगा।
8. **चंद्र+केतु**–जातक की यात्रा के दौरान संकट का सामना करना पड़ेगा।

❑❑❑

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में



मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां प्रथम स्थान में मिथुन राशि में होगा। मंगल की इस स्थिति से कुण्डली 'मांगलिक' कहलाती है। यह मंगल किस्मत जगाने वाला होता है। ऐसे जातक का 28 वर्ष की आयु के बाद भाग्योदय होता है। भाईयों के सहयोग से जातक की उन्नति होती है। ऐसा जातक किसी के भी बारे में अनायास अशुभ वचन बोल दे, तो वो पूरा जरूर होता है।

दृष्टि–लग्नस्थ मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (कन्या राशि), सप्तम भाव (धनु राशि) एवं अष्टम भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक को वाहन सुख, गृहस्थ सुख एवं दीर्घायु का लाभ जरूर मिलेगा।

निशानी–ऐसे जातक को गर्वीले व हठीले स्वभाव के कारण समाज में उचित स्थान नहीं मिलता।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक को वाहन सुख, मकान सुख की प्राप्ति होगी। जातक का सर्वांगीण विकास होगा।

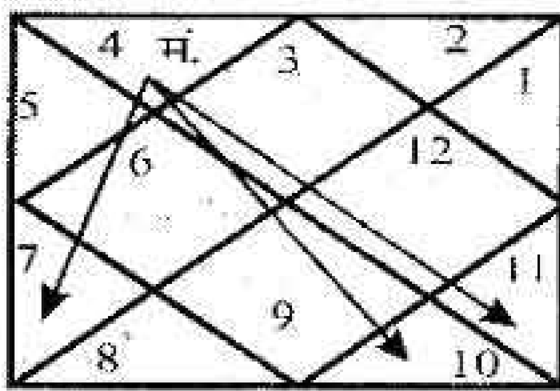
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक क्रोधी किन्तु पराक्रमी होगा। कुटुम्ब सुख श्रेष्ठ रहेगा।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुन लग्न में चंद्रमा धनेश है जबकि मंगल षष्टेश व लाभेश होने से पापी है। लग्न में चंद्र+मंगल की युति वस्तुत:

धनेश चंद्रमा की षष्टेश+लाभेश के साथ युति होगी। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। फिर भी 'लक्ष्मीयोग' बनता है यहां बैठकर दोनों ग्रह, सुख स्थान (कन्या राशि) सप्तम स्थान (धनु राशि) एवं अष्टम स्थान (मकर राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनवान होगा। उसे भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी तथा जातक लम्बी उम्र वाला होगा।

3. **मंगल+बुध**–जातक 'भद्रयोग' के कारण राजा जैसा पराक्रमी होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक का गृहस्थ सुख वैभवशाली होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक विद्यावान व सभ्य होगा।
6. **मंगल+शनि**–जातक भाग्यशाली, धनवान होगा।
7. **मंगल+राहु**–जातक पराक्रमी, हठी व लड़ाकू होगा।
8. **मंगल+केतु**–जातक का व्यक्तित्व संघर्षशील रहेगा।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में



मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां द्वितीयस्थ मंगल कर्क अपनी नीच राशि में होगा। कर्क राशि के 28 अंशों में मंगल परमनीच का कहलाता है। दूसरे घर में मंगल 'धर्म की मूरत' कहा गया है। ऐसे जातक को धन, यश, विद्या, बुद्धि, घर-परिवार के सुख की प्राप्ति होती है। जातक तामसी भोजन करेगा। अशुद्ध वाणी बोलेगा। जातक धार्मिक मनोवृत्ति वाला एवं समाजसेवी होगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ मंगल की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि), अष्टमभाव (मकर राशि) एवं भाग्यभवन (कुम्भ राशि) पर होगी। फलत: पुत्र संतान की प्राप्ति उत्तम भाग्य की प्राप्ति एवं दीर्घायु की प्राप्ति होगी।

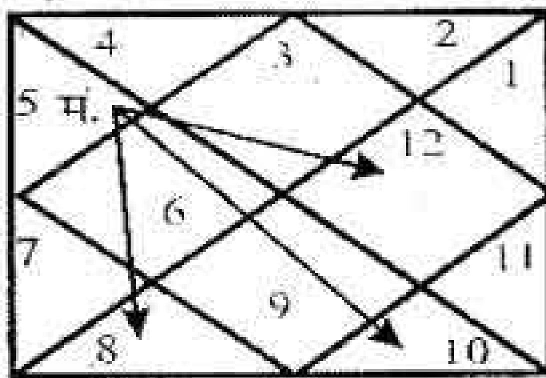
निशानी–जातक को जीवन में दौलत की कमी नहीं रहेगी। धन खुद-ब-खुद चलकर जातक के पास आएगा पर धनागमन बहुत कुछ चंद्रमा की स्थिति पर निर्भर करेगा।

दशा–मंगल की दशा में जातक धनवान होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक की वाणी प्रखर-तेज होगी।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार द्वितीय स्थान में चंद्रमा स्वगृही होगा एवं मंगल नीच के होने से 'नीचभंगराजयोग' बना। इसके कारण यहां 'महालक्ष्मी योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि), भाग्यभाव (कुम्भ राशि) एवं अष्टम भाव (मकर राशि) पर होगी। फलत: जातक भाग्यशाली होगा। महाधनी होगा परंतु इसका भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक पुरुषार्थी एवं विवेकी होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक महाधनी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक धनी एवं अभिमानी व्यक्ति होगा।
6. **मंगल+शनि**–कुटुम्ब में विवाद होगा, धन की तकलीफ रहेगी।
7. **मंगल+राहु**–धन के घड़े में छेद, रुपया खर्च होता चला जाएगा।
8. **मंगल+केतु**–कुटुम्ब में विवाद, धन संग्रह में कमी रहेगी।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में



मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर हैं फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। तृतीयस्थ मंगल सिंह राशि में होगा। फलत: जातक की तेजस्विता, पराक्रम शक्ति विलक्षण होगी। जातक शत्रुहंता होगा। उसमें साहस, शक्ति, उत्साह, परिश्रम एवं विजय की भावना प्रबल होगी। ऐसे मंगल को 'चिड़िया घर का कैदी शेर' कहा गया है। जो अपनी क्षमताओं का प्रयोग करने में असमर्थ होता है। जातक को भाई-बहन का सुख जरूर मिलता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि छठे भाव (वृश्चिक राशि), भाग्य भवन (कुंभ राशि) एवं दशम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलत: जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा। जातक राजनीति में महत्वपूर्ण व्यक्ति होगा।

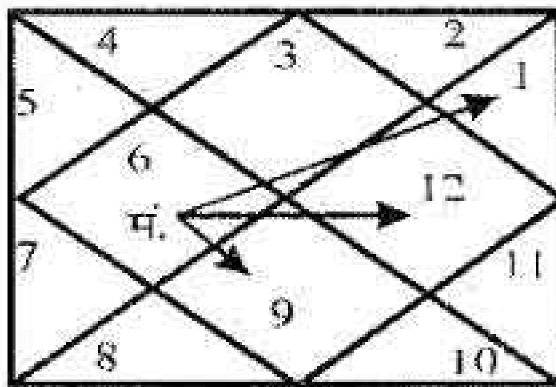
निशानी–जातक प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कार्य करने की अद्‌भुत क्षमता रखेगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–कुटुम्ब, सहोदर का सुख रहेगा। जातक आप अकेला नहीं होगा। बड़े भाई की मृत्यु संभव है।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार तृतीय स्थान में चंद्र+मंगल की युति 'सिंह राशि' में होगी। जहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव (वृश्चिक राशि), भाग्यभाव (कुम्भ राशि) एवं दशमभाव (मीन राशि) को देखेंगे फलत: ऐसा जातक भाग्यशाली तथा धनवान होगा एवं अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
3. **मंगल+बुध**–भाई-बहन का सुख रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मित्रों से लाभ होगा, पराक्रम तेज रहेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–भाई-बहनों का सुख रहेगा।
6. **मंगल+शनि**–परिवार में कलह रहेगा।
7. **मंगल+राहु**–परिवार में विग्रह रहेगा।
8. **मंगल+केतु**–कीर्ति उत्तम पर मित्रों से मनमुटाव रहेगा।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में



मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां चतुर्थस्थ मंगल 'कन्या राशि' मित्र राशि में होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को मांगलिक बनाती है। मंगल यहां दिक्बली है। अत: चौथे मंगल को 'जलती आग' कहा गया है। ऐसा व्यक्ति शत्रुओं को सूखी घास की तरह जला डालता है। ऐसा जातक कुशल गणितज्ञ, सर्जन, इंजीनियर, कम्प्यूटर कार्य में दक्ष, अनुशासन कार्य में कुशल होता है। ऐसा व्यक्ति अपने परिवार-कुटुम्ब का सच्चा सहायक होता है।

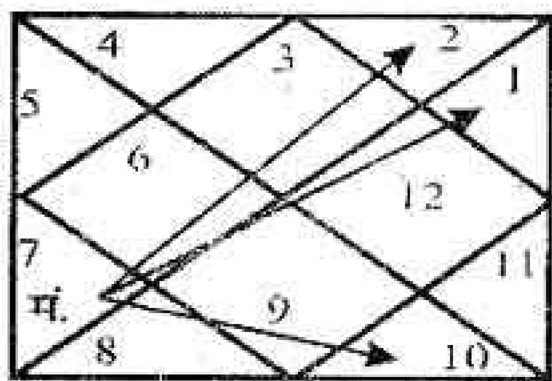
दृष्टि–चतुर्थस्थ मंगल की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि), दशम भाव (मीन राशि) एवं एकादश स्थान (मेष राशि) पर होगी। फलत: जातक को गृहस्थ सुख एवं व्यापार-व्यवसाय में यथेष्ट लाभ मिलता रहेगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक को भौतिक ऐश्वर्य व उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–भौतिक व पारिवारिक सुख मिलेंगे।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार चतुर्थ स्थान में चंद्रमा कन्या राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। फलत: 'यामिनीनाथ योग' बनेगा। मंगल यहां दिक्बली होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव (धनु राशि), दशम भाव (मीन राशि) एवं एकादश भाव (मेष राशि) को देखेंगे जो कि मंगल के स्वयं की राशि है। ऐस जातक धनी होगा। बड़ा व्यापारी होगा तथा उसका भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–'भद्रयोग' के कारण जातक राजातुल्य वैभव से सम्पन्न होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक का ससुराल अच्छा होगा। स्वयं की नौकरी अच्छी होगी।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक धनी व वैभवशाली होगा।
6. **मंगल+शनि**–जातक भाग्यशाली है। दो मंजिल वाले मकान का स्वामी होगा।
7. **मंगल+राहु**–माता सुख में कमी, अल्पायु में मृत्यु संभव।
8. **मंगल+केतु**–माता बीमार रहेगी।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में



मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां पंचम स्थान में मंगल तुला राशि (शत्रु) का होगा। ऐसा मंगल 'रईसों का बाप-दादा' कहलाता है। जातक धनवान, विद्यावान, बुद्धिमान होगा। परंतु विद्या में एक बार रुकावट आती है। दो-तीन पुत्र हो सकते हैं पर एकाध गर्भपात संभव है।

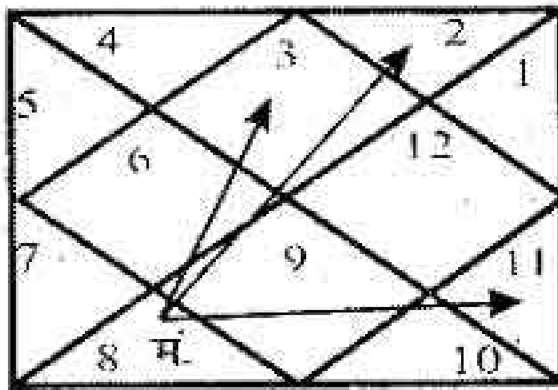
दृष्टि–पंचमस्थ मंगल की दृष्टि अष्टमभाव (मकर राशि), अपने घर मेष राशि (एकादश स्थान), द्वादश स्थान (वृष राशि) पर होगी। फलत: लम्बी आयु वाला, व्यापारी एवं खर्चीले स्वभाव का होता है।

निशानी–ऐसा व्यक्ति 28 वर्ष की आयु के बाद दिन-प्रतिदिन अमीर होता चला जाएगा। प्रथम संतान की उत्पत्ति के बाद जातक का भाग्य और अधिक चमकेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करता है। सरकारी नौकरी में कमी रहेगी।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार पंचम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। जहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (मकर राशि), लाभ स्थान (मेष राशि) एवं व्यय भाव (खर्च स्थान) को देखेंगे। फलत: जातक धनवान, लम्बी आयु का स्वामी होगा तथा खर्चीले स्वभाव का होगा।
3. **मंगल+बुध**–संतति सुख उत्तम। पुत्र-पुत्री दोनों का सुख रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**–पुत्र सुख निश्चित। विद्या में डिग्री मिलेगी।
5. **मंगल+शनि**–संतान एवं विद्या सुख श्रेष्ठ।
6. **मंगल+शनि**–विद्या में संघर्ष, रुकावट।
7. **मंगल+राहु**–संतान में बाधा, गर्भपात संभव।
8. **मंगल+केतु**–गर्भक्षय एवं रुकावट के साथ विद्या का संकेत मिलता है।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति षष्ट्म स्थान में



मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर हैं फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां छठे स्थान में मंगल वृश्चिक राशि में स्वगृही है। षष्टेश षष्टम में स्वगृही होने से 'हर्षयोग' बनता है। जातक युद्ध विद्या व षड्यंत्र करने में निपुण होता है। जातक शत्रुहंता होता है। तनाव व दबाव को सहन करने में समर्थ होता है। जातक अपनी उन्नति हेतु अनैतिक तरीकों का इस्तेमाल करने से नहीं चूकता। यहां 'लाभभंग योग' के कारण कई बार व्यापार में घाटा होगा।

दृष्टि–यहां षष्टमस्थ मंगल की दृष्टि भाग्य भाव (कुम्भ राशि), व्यय भाव (वृष राशि) तथा लग्न भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक उन्नतिशील होगा एवं खर्चीले स्वभाव का होगा।

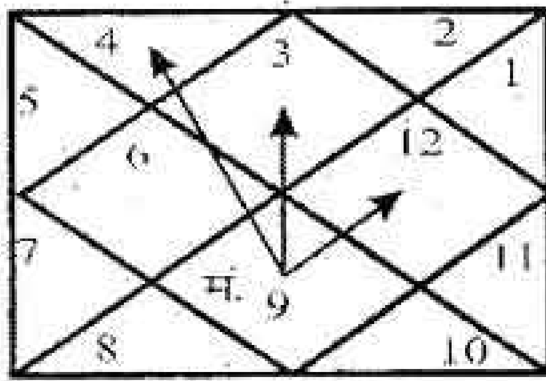
निशानी–ऐसे व्यक्ति साम, दाम, दण्ड व भेद नीति में निपुण होते हैं।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–पराक्रम भंग होगा। भाईयों में नहीं बनेगी।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार छठे स्थान में चंद्रमा अपनी नीच राशि में होगा एवं मंगल स्वगृही होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। इन दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान (कुम्भ राशि), धन स्थान (कर्क राशि) एवं पराक्रम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलतः 'महालक्ष्मी योग' के कारण जातक धनवान होगा। भाग्यशाली होगा एवं राजा के समान पराक्रमी होगा।
3. **मंगल+बुध**–परिश्रम का लाभ कम मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु**–गृहस्थ सुख में विवाद, पत्नी से कम बनेगी।
5. **मंगल+शुक्र**–विद्या में बाधा, संतान बिलम्ब से संभव।
6. **मंगल+शनि**–विपरीत राजयोग से वैभव बढ़ेगा।
7. **मंगल+राहु**–लम्बी बीमारी संभव।
8. **मंगल+केतु**–शत्रुओं का प्रकोप रहेगा।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में



मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलतः मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां सप्तम स्थान में मंगल धनु राशि मित्र राशि का होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' बनाएगी। इस मंगल को 'मीठा हलवा' कहा गया है। ऐसे जातक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है। उसे जमीन-जायदाद से लाभ होता है। राज्यपक्ष से भी लाभ होता है।

दृष्टि–सप्तमस्थ मंगल की दृष्टि दशम भाव (मीन राशि), लग्न भाव (मिथुन राशि) एवं धन भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलतः जातक उन्नतिशील, धनी एवं राजनीति में दक्ष होगा।

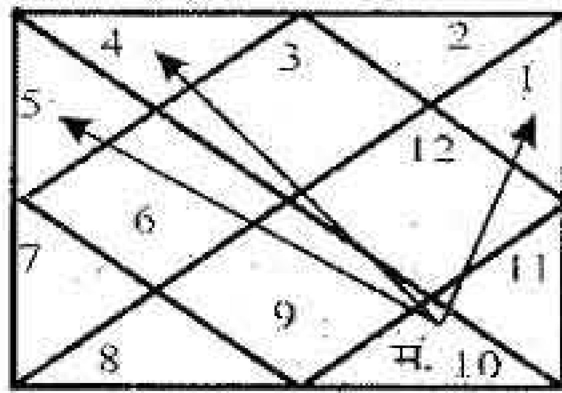
निशानी–जातक का जीवनसाथी क्रोधी, कलहकारी एवं अहंकारी होगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक की सर्वांगीण उन्नति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–दाम्पत्य जीवन में कष्ट-पीड़ा रहेगी।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार सप्तम स्थान में धनुराशि गत दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव (कुंभ राशि) लग्न स्थान (वृष राशि) एवं धन भाव (कर्क राशि) पर होगी। दोनों ग्रह केन्द्र में होने से 'रूचकयोग' एवं 'यामिनीनाथ योग' बना। फलत: जातक राजा के सामन बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी तथा सौभाग्यशाली होगा एवं उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।
3. **मंगल+बुध**–परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा। पुरुषार्थ व्यर्थ नहीं जाएगा।
4. **मंगल+गुरु**–'हंसयोग' के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक भाग्यशाली, सुखी होगा।
6. **मंगल+शनि**–गृहस्थ सुख में रुकावट है। विलम्ब विवाह संभव है।
7. **मंगल+राहु**–पत्नी से विवाद, कलह, बिछोह संभव।
8. **मंगल+केतु**–गृहस्थ सुख में कोई-न-कोई न्यूनता बनी रहेगी।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में



मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। अष्टम स्थान में मंगल मकर राशि में उच्च का होगा। यहां 28 अंशों में मंगल परमोच्च का होता है। मंगल की इस स्थिति में कुण्डली 'मांगलिक' कहलाती तथा 'लाभभंगयोग' एवं 'हषयोग' भी बनता है। लाल किताब में ऐसे मंगल को 'मौत का फंदा' कहा गया है। ऐसा व्यक्ति शत्रुओं का मुकाबला करता है। इंसाफ के लिए लड़ता है और उसे सफलता भी मिलती है। जातक धनी होता है पर भाग्यशाली है या नहीं इसका निर्णय शनि की बलवान स्थिति पर निर्भर होगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि अपने घर लाभ स्थान (मेष राशि), धन स्थान (कर्क राशि) एवं पराक्रम भाव (सिंह राशि) पर होगी। ऐसा व्यक्ति पराक्रमी होता है। जातक व्यापार व्यवसाय से लाभ प्राप्त करता है और धनी भी होता है।

निशानी–व्यक्ति धनी होते हुए भी समाज में प्रतिष्ठित नहीं होगा।

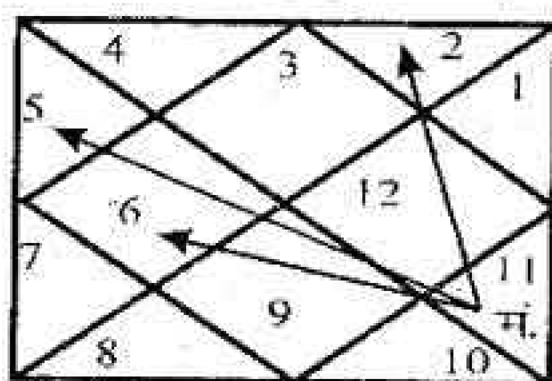
विशेष–ऐसे व्यक्ति के घर में तंदूर या भट्टी हो तो उसे फौरन हटा देना चाहिए।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में दिक्कतें आएंगी, संघर्ष की स्थिति बनेगी पर सफलता संघर्ष के बाद निश्चित है।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–कुटुम्ब सुख में बाधा। विपरीत राजयोग के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार अष्टम स्थान में मकर राशिगत मंगल उच्च का होकर विपरीत राजयोग बनाएगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान (मेष राशि) धन भाव (कर्क राशि) एवं पराक्रम भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलत: 'महालक्ष्मीयोग' के कारण ऐसा जातक महाधनी होगा। जातक व्यापारी होगा। उसका पराक्रम, जनसंपर्क तेज होगा।
3. **मंगल+बुध**–जीवन साथी या स्वयं का शरीर सुख कमजोर।
4. **मंगल+गुरु**–जीवन साथी रोगी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–विलम्ब संतति या विद्या में बाधा सम्भव है।
6. **मंगल+शनि**–यहां शनि के कारण '**किम्बहुना**' नामक राजयोग बनेगा परन्तु जातक जीवन में प्राय: असफल ही रहेगा।
7. **मंगल+राहु**–अचानक दुर्घटना भय संभव है।
8. **मंगल+केतु**–शल्य चिकित्सा योग, दीर्घ बीमारी संभव है।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में



मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। नवम स्थान में मंगल अपनी शत्रु कुंभ राशि में होगा। लाल किताब बालों ने ऐसे मंगल को 'शाही तख्त' कहा है। ऐसा व्यक्ति आयु के 28 वर्ष के बाद धनाढ्य होगा व राज्यधिकारियों की कृपा प्राप्त करेगा। समाज में राजनीति में उच्च

पद को प्राप्त करेगा। जातक प्राय: नास्तिक होता है तथा उसे अपयश का सामना करना पड़ता है।

दृष्टि–नवम स्थानगत मंगल की दृष्टि व्यय भाव (मेष राशि), पराक्रम भाव (सिंह राशि) एवं चतुर्थ भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक को वाहन सुख, भूमि सुख मिलेगा। मित्रों से लाभ होगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। दानी, परोपकारी होगा।

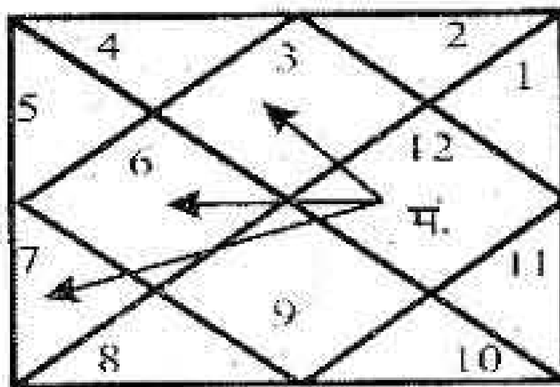
निशानी–पिता अल्प आयु वाला, अल्प प्रतिष्ठित रोगी होगा या पिता-पुत्र में कलह रहेगी, अथवा पड़ोसियों से कलह या मुकदमें होंगे।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक के भाई व मित्र पराक्रमी होंगे।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार नवम स्थान में कुम्भ राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि व्यय भाव (वृष राशि), पराक्रम भाव (सिंह राशि) एवं सुख भाव (कन्या राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनवान, महान् पराक्रमी होगा एवं खर्चीले स्वभाव का भी होगा। इस 'लक्ष्मीयोग' के कारण जातक धनी एवं भाग्यशाली होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक उद्यमी होगा। पुरुषार्थ का लाभ मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक का ससुराल धनी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–स्त्री, संतान सुख श्रेष्ठ।
6. **मंगल+शनि**–जातक राजा के समान प्रभावशाली एवं पराक्रमी होगा।
7. **मंगल+राहु**–जातक धनवान होगा, पर भाग्य उदय में रुकावटें बहुत आएंगी।
8. **मंगल+केतु**–संघर्ष रहेगा पर सफलता मिलेगी।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में



मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। दशम स्थान में मंगल मीन राशि अपने मित्र गुरु की राशि में होगा। मंगल

'दिक्बली' होकर 'कुलदीपकयोग' बनाएगा। लालकिताब वालों ने ऐसे मंगल को 'चींटी के घर भगवान' की संज्ञा दी है। ऐसा व्यक्ति अपने पूरे खानदान, कुटम्बीजनों का कल्याण करता है व सुंदर व सुदृढ़ देह का स्वामी होता है। जातक जमीन-जायदाद से लाभ उठाता है। परिवार-कुटुम्ब का नाम दीपक के सामन रोशन करता है।

दृष्टि—दशमस्थ मंगल की दृष्टि लग्न भाव (मिथुन राशि), चतुर्थ भाव (कन्या राशि) एवं पंचम स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक उन्नति पथ पर आगे बढ़ता है एवं वाहन व भूमि सुख प्राप्त करता है। संतान व गृहस्थ सुख भी प्राप्त करता है।

निशानी—जातक स्वपराक्रम से धन कमाता है और खुले दिल से खर्च करता है।

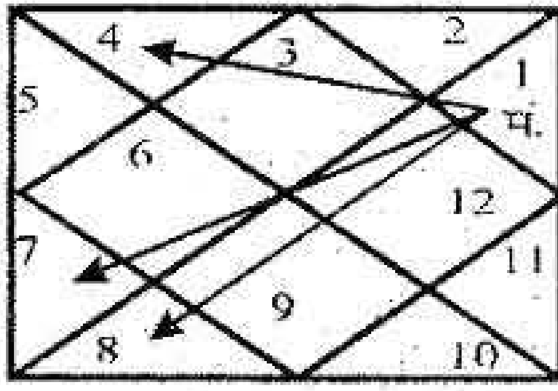
दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त करेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—जातक का राज्यक्षेत्र में पराक्रम होगा। बड़े राजनेताओं से सम्पर्क रहेगा।
2. **मंगल+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार दशम स्थान में मीन राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि लग्न भाव (मिथुन राशि), चुतर्थ भाव (कन्या राशि) एवं पंचम भाव (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक को जीवन के सभी भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। कुलदीपक योग के कारण जातक को जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी पर जातक का सही भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**—जातक धनी एवं वैभवशाली होगा।
4. **मंगल+गुरु**—'हंसयोग' के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—जातक महाधनी होगा। 'मालव्ययोग' के कारण राजा से कम प्रभावशाली नहीं होता।
6. **मंगल+शनि**—जातक सौभाग्यशाली होगा। भाग्योदय के अवसर मिलते रहेंगे।
7. **मंगल+राहु**—जातक को राज्यपक्ष में हानि होगी।
8. **मंगल+केतु**—जातक को राज्यपक्ष से भय रहेगा।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलतः



मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। एकादश स्थान में मंगल स्वगृही होकर मेष राशि में होगा। लालकिताब वालों ने ऐसे मंगल को 'दूध से पला हुआ पालतू शेर' कहा है। ऐसे जातक को धन, भवन, भू-सम्पत्ति, वाहन सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक देखने में खतरनाक परंतु कोमल हृदय का आध्यात्मिक प्राणी होता है। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। पर संतान को लेकर कोई-न-कोई चिंता बनी रहेगी।

दृष्टि–एकादशस्थ स्वगृही मंगल की दृष्टि धन भाव (कर्क राशि), पंचम भाव (तुला राशि) एवं षष्टम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक धनी होगा। संतान सुख से युक्त होगा तथा ऋण-रोग व शत्रु का नाश करने में पूर्णतः समर्थ होगा।

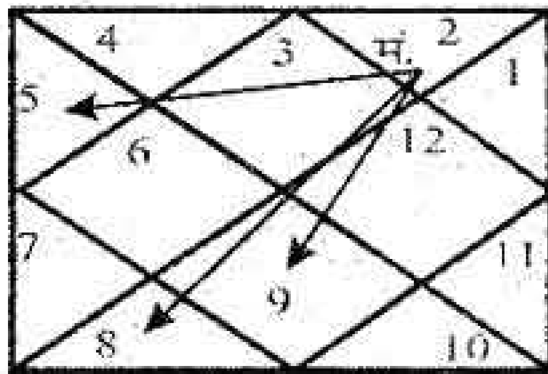
निशानी–जातक की आमदनी में वृद्धि 28 से 32 वर्ष की आयु के मध्य होगी। जातक के बड़े भाई को कष्ट होगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त करेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–'किम्बहुना योग' के कारण जातक महान् पराक्रमी होगा। उद्योगपति एवं धनी होगा। जातक बड़े कुटुम्ब का स्वामी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार एकादश स्थान में मेष राशिगत मंगल स्वगृही होगा। फलतः 'महालक्ष्मीयोग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन स्थान (कर्क राशि), पंचम भाव (तुला राशि) एवं छठे स्थान (वृश्चिक राशि) को देखेंगे। फलतः जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक अति धनवान, उद्योगपति होगा एवं भाग्योदय प्रथम पुत्र संतति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक कृशकाय होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक का राज्यक्षेत्र में, सरकारी अधिकारियों के मध्य प्रभाव होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक कृशकाय होगा।
6. **मंगल+शनि**–जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा 'नीचभंग राजयोग' के कारण धनी होगा।
7. **मंगल+राहु**–व्यापार व लाभ में कमी, कुटुम्ब कलह संभव।
8. **मंगल+केतु**–परिवार में विग्रह-विवाद, शत्रुओं से सामना करना पड़ेगा।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में



मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक हैं। द्वादश स्थान में मंगल वृषभ राशि में होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली में क्रमश: 'मांगलिक योग', 'लाभभंगयोग' एवं 'हषयोग' बनाती है। लालकिताब वाले इस मंगल को 'मनमौजी' का दर्जा देते हैं। फलत: ऐसा व्यक्ति अपनी मर्जी (इच्छा) का स्वामी होता है। दूसरों के दबाव में आकर कोई काम नहीं करता। जातक भोग-विलास एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु लालायित रहेगा।

दृष्टि–द्वादशस्थ मंगल की दृष्टि पराक्रम भाव (सिंह राशि), छठे भाव (वृश्चिक राशि) एवं सप्तम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा। रोगी होगा एवं जीवन साथी के प्रति पूर्ण वफादार (समर्पित) नहीं होगा।

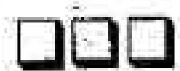
निशानी–गुरु व गाय का नित्य सेवा करने पर जातक तरक्की करेगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा कष्ट, दिक्कतों वाली होगी पर संघर्ष के बाद सफलता देने वाली होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

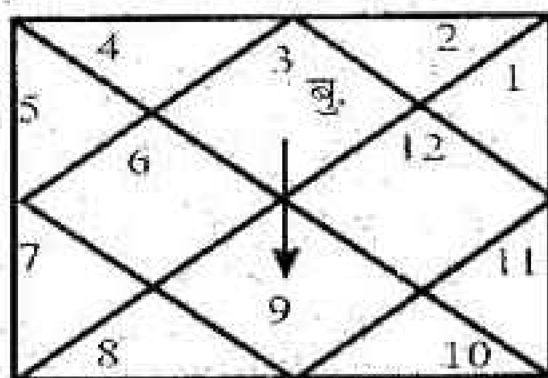
1. **मंगल+सूर्य**–परिवार में विग्रह-विवाद की स्थिति रहेगी।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार द्वादश स्थान में वृष राशिगत चंद्रमा उच्च का होगा। धनेश उच्च का होने से 'महालक्ष्मीयोग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान (सिंह राशि), षष्ठम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं सप्तम स्थान (धनु राशि) में देखेंगे फलत: ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में समर्थ होगा। महापराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–परिश्रम का यथेष्ट लाभ नहीं मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु**–गृहस्थ सुख में बाधा, विलम्ब विवाह का योग है।
5. **मंगल+शनि**–जातक के दाम्पत्य सुख में कड़वाहट रहेगी। कलह, अलगाव की स्थिति, संतति हानि की स्थिति संभव है।

6. **मंगल+शनि**–विलम्ब भाग्योदय का योग बनता है।
7. **मंगल+राहु**–भाग्य में रुकावट, यात्रा में चोरी संभव है।
8. **मंगल+केतु**–यात्रा में धनहानि, विवाद संभव है।



मिथुनलग्न में बुध की स्थिति

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में



मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केंद्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केंद्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। प्रथम स्थान में बुध मिथुन राशि का होकर स्वगृही होगा। फलत: 'कुलदीपकयोग' एवं 'भद्रयोग' की सृष्टि होगी। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को प्राप्त करने वाला प्रख्यात धनी, बहुसुत एवं बहुमित्रों से युत पराक्रमी होता है। लाल किताब वालों से इस बुध को 'खुदगर्ज हाकिम' कहा है। ऐसे जातक अपने कार्यों को युक्तपूर्वक करता है। जिससे समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है।

दृष्टि–लग्नस्थ स्वगृही बुध की दृष्टि सप्तम भाव (धनुराशि) पर होगी। फलत: जातक की पत्नी धार्मिक एवं पतिव्रता होगी तथा अल्परति में रुचि रखेगी।

निशानी–ऐसे व्यक्ति धन व अधिकार प्राप्त करने के लिए अनैतिक कार्य करने में नहीं हिचकता।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक राजयोग एवं व्यापार में उन्नति को प्राप्त करेगा।

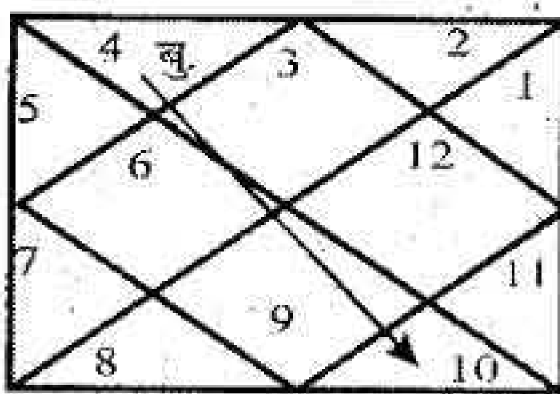
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव में मिथुनराशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+चतुर्थेश के साथ युति है। बुध यहां स्वगृही होगा। लग्न में बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहां

पर 'कुलदीपकयोग' एवं 'भद्रयोग' की सृष्टि भी होगी। यहां पर यह युति सर्वाधिक सार्थक है। फलतः ऐसा जातक राजा के समान महान् पराक्रमी व यशस्वी होगा। अपने बुद्धिबल एवं वाक्‌चातुर्य से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ेगा।

2. **बुध + चंद्र**–व्यकित धनी होगा एवं बहु व्यवसायी होगा।
3. **बुध + मंगल**–व्यकित पराक्रमी एवं जिद्दी स्वभाव का होगा।
4. **बुध + गुरु**–व्यक्ति का गृहस्थ जीवन सुखी होगा।
5. **बुध + शुक्र**–ऐसा जातक विनम्र एवं विद्यावान होगा।
6. **बुध + शनि**–ऐसा जातक भाग्यशाली एवं धनी होगा।
7. **बुध + राहु**–ऐसा जातक हठी, जिद्दी किन्तु बुद्धिमान होगा।
8. **बुध + केतु**–ऐसा जातक कुतर्की होगा।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में



मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अतः यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। द्वितीय स्थान में बुध कर्क राशि का शत्रुक्षेत्री होगा। लालकिताब में ऐसे जातक को 'योगीराज' कहा गया है। ऐसा जातक बड़ी मेहनत करके धन जुटाता है पर एक ही झटके में खर्च कर डालता है। जातक को जीवन में धन, यश, विद्या, कुटुम्ब सुख, घर, जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। जातक आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा। ऐसा व्यक्ति बातचीत में कुशल, वाक्यपटु होता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ बुध की दृष्टि अष्टमस्थान (मकर राशि) पर होगी। ऐसा जातक लम्बी उम्र वाला होता है।

निशानी–जातक की आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव आते-जाते रहेंगे।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान होगा। उसे भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो

केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव में मिथुनराशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+चतुर्थेश के साथ युति है। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। धनवान होगा। बाहुबल से खूब रुपया कमाएगा। जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा। लग्नेश की अष्टम् भाव पर दृष्टि होने के कारण जातक का दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा।

2. **बुध + चंद्र**—जातक बुद्धिमान, धनवान एवं विनम्र वाणी वाला होगा।
3. **बुध + मंगल**—जातक बुद्धिमान किंतु सिद्धांतवादी वाणी का स्वामी होगा।
4. **बुध + गुरु**—जातक गंभीर विषयों पर बोलने वाला, धार्मिक, परोपकारी एवं धनी होगा।
5. **बुध + शुक्र**—ऐसा जातक धनी होगा। विद्यावान होगा। विद्याबल से धन अर्जित करेगा।
6. **बुध + शनि**—जातक को धन कमाने के उचित अवसर भाग्यवश प्राप्त होते रहेंगे।
7. **बुध + राहु**—धन के घड़े में छेद के कारण आर्थिक संघर्ष रहेगा।
8. **बुध + केतु**—धन के अधिक खर्च से मानसिक चिन्ता बनी रहेगी।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केंद्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अतः यहां बुध अतिशुभ फलदायक व योगकारक ग्रह है। यहां तृतीयस्थान में बुध सिंहराशि अपनी मित्रराशि में होगा। फलतः ऐसा जातक उन्नतिशील, अति उत्साही एवं पराक्रमी होता है। तीसरे घर में बैठे बुध को 'थुकने वाला कोढी' कहा गया है। यदि बुध खराब हो तो व्यक्ति दर-दर की ठोकरे खाने वाला होता है तथा जितना भी धन हो नष्ट कर डालता है पर यहां यह स्थिति नहीं है। जातक धनी होगा तथा बुद्धिबल से मित्रों के सहयोग से धन कमाएगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ सिंहराशिगत बुध की दृष्टि भाग्यभवन (कुंभराशि) पर होगी। ऐसा जातक भाग्यशाली होता है। पूर्ण भाग्योदय 32 वर्ष की आयु तक होता है।

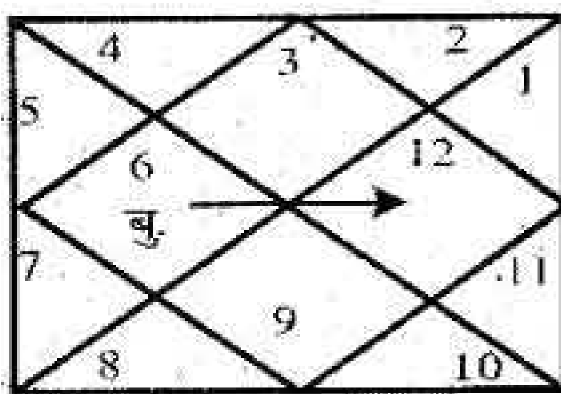
निशानी—जातक को भाई-बहन का पूर्ण सुख मिलेगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के तृतीय भाव में सिंहराशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है। यहां पर स्वगृही हैं। तृतीय स्थान में बैठकर दोनों ग्रह भाग्यस्थान को पूर्ण दृष्टि में देख रहे हैं। फलत: जातक महान् पराक्रमी होगा। भाई-परिजन व मित्रों का बल उसे मिलता रहेगा। जातक भाग्यशाली होगा। पिता की सम्पत्ति या सहयोग से जातक का भाग्योदय शीघ्र हो जाएगा।
2. **बुध + चंद्र**–जातक के बहने अधिक होगी। स्त्री-मित्र से जातक के लाभ रहेगा।
3. **बुध + मंगल**–जातक को भाई-बहन दोनों का सुख होगा।
4. **बुध + गुरु**–जातक को बड़े भाई या उम्र में बड़ें मित्रों से लाभ होगा।
5. **बुध + शुक्र**–जातक के बहनें अधिक होगी। स्त्री-मित्र से जातक को लाभ होगा।
6. **बुध + शनि**–जातक के कुटम्बी भाग्यशाली होंगे।
7. **बुध + राहु**–मित्रों में विवाद, भाईयों से विग्रह रहेगा।
8. **बुध + केतु**–ऐसे जातक के मित्र ऐनवक्त पर धोखा देंगे।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में



मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभ फलदायक व योगकारक ग्रह है। चतुर्थ स्थान में बुध कन्याराशि में उच्च का होगा। कन्याराशि के अंशों में बुध परमोच्च का होगा। बुध की इस स्थिति से 'कुलदीपक योग' एवं 'भद्र योग' की सृष्टि होती है। ऐसा जातक समस्त भौतिक सुख-ऐश्वर्य से युक्त राजातुल्य परम पराक्रमी होता है। लाल किताब वालों ने इस बुध को 'हुनुरमंद' कहा हैं ऐसा व्यक्ति किसी कला में निपुण होकर राजकार्य से जुड़ा होता है।

दृष्टि—चतुर्थभाव उच्च के बुध की दृष्टि राज्यपक्ष (मीनराशि) पर होगी। फलत: जातक राजनीति में उच्चपद व प्रतिष्ठा को अवश्य प्राप्त करेगा।

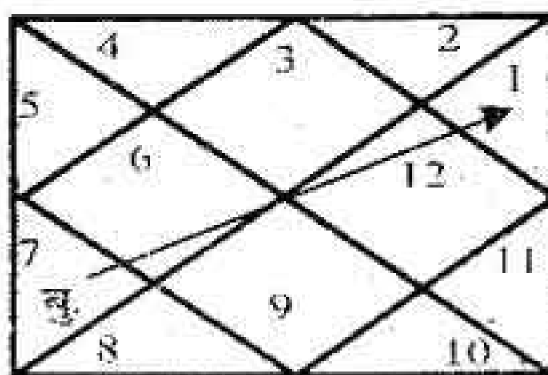
निशानी—जातक के वाहन और फोन जरूर होगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक राजयोग एवं व्यापार में उन्नति प्राप्त करता है।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के चतुर्थ भाव में कन्याराशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है। बुध यहां उच्च का होगा तथा 'कुलदीपकयोग' एवं 'भद्रयोग' की सृष्टि करेगा। उच्च का बुध दशम भाव को पूर्ण दृष्टि में देखेगा। यहां पर यह युति सर्वाधिक सार्थक है। फलत: जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली और पराक्रमी होगा। उसे माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी। स्वयं भी बड़ी भूसम्पत्ति, नौकर-चारक से युक्त, उत्तम वाहनों का स्वामी होगा। जातक की गिनती जीवन में सफलतम व्यक्तियों में अग्रण्य होगी।
2. **बुध + चंद्र**—जातक महाधनी होगा। दो-तीन मकानों का स्वामी होगा।
3. **बुध + मंगल**—जातक के गुप्त शत्रु जरूर होगे पर सभी नष्ट होंगे। भूमि संबंधी विवाद जरूर होगा।
4. **बुध + गुरु**—ऐसे जातक की पत्नी धनवान होगी। ससुराल पराक्रमी होगा।
5. **बुध + शुक्र**—'नीचभंगयोग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
6. **बुध + शनि**—जातक भाग्यशाली होगा। जीवन में खूब धन कमाएगा।
7. **बुध + राहु**—माता एवं बहन का सुख कमजोर रहेगा।
8. **बुध + केतु**—माता की संपत्ति हाथ नहीं लगेगी। भौतिक सुखों में बाधा महसूस होगी।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में



मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केंद्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभ फलदायक व योगकारक ग्रह है। यहां पंचम स्थान में बुध तुला

राशि मित्रराशि में होगा। ऐसे जातक को धन, विद्या, बुद्धि, स्त्री-संतान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति सहज में ही होती रहेगी। लाल किताब वालों ने इस बुध को 'पीर का आशीर्वाद' कहा है। ऐसे व्यक्ति पर गणपति व गुरु की कृपा होती है। ऐसा जातक किसी के भी संदर्भ में अचानक कोई बात कहे तो वह पूर्ण (सही) हो जाती है।

दृष्टि–पंचमस्थ बुध की दृष्टि लाभस्थान (मेषराशि) पर होगी। जातक को व्यापार में लाभ होगा। कम्प्यूटर या मेडिकल लाईन में ज्यादा लाभ संभव है।

निशानी–जातक को प्रथम कन्या होगी। दो-तीन कन्याओं का योग बनता है।

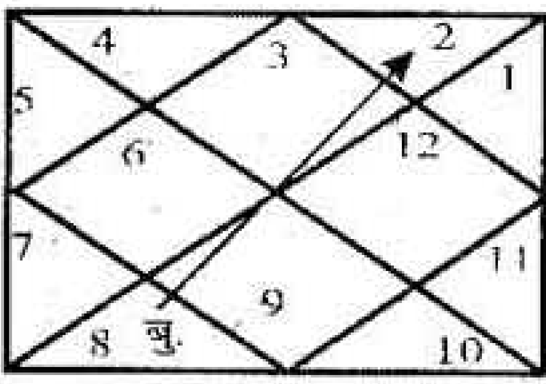
दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का चहुंमुखी विकास होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के पंचम भाव में तुलाराशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहां नीच राशि का होग परंतु दोनों ग्रहों की दृष्टि एकादश भाव पर होगी जो सूर्य की उच्च राशि है। फलत: जातक बुद्धिमान होगा। प्रजावान होगा। जातक को कन्या व पुत्र दोनों संतति होगी। जातक निजी व्यवसाय-व्यापार के द्वारा उन्नति के चरम शिखिर पर पहुंचेगा। जातक शिक्षित होगा।
2. **बुध + चंद्र**–संतति के संबंध में जातक भाग्यशाली होगा।
3. **बुध + मंगल**–ऐसा जातक लाभदायक व्यापार का स्वामी होगा। पुत्र एवं पुत्री दोनों का सुख मिलेगा।
4. **बुध + गुरु**–जातक का पत्नी द्वारा लाभ होगा।
5. **बुध + शुक्र**–जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।
6. **बुध + शनि**–जातक अति धनी होगा। भाग्यशाली होगा। जातक की संतान भी महाधनी होगी।
7. **बुध + राहु**–एक-दो संतति की अकाल मृत्यु संभव है। विद्या में बाधा।
8. **बुध + केतु**–विद्या पूरी होगी पर संघर्ष के साथ।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति षष्ट्म स्थान में

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभ फलदायक व योगकारक ग्रह है। यहां छठे स्थान में बुध वृश्चिक



(सम) राशि का होगा। फलत: 'लग्नभंगयोग', 'सुखहीनयोग' की सृष्टि होती है। ऐसे जातक को परिश्रम का उचित लाभ नहीं मिलता। भौतिक सुख-ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु जातक को संघर्ष करना पड़ता है। लालकिताब वालों ने इस बधु को 'दिल का राजा' कहा है। ऐसा व्यक्ति दिल का साफ होता है। मन में गांठ नहीं रखता। लिखा-पढ़ी एवं मानसिक श्रम से धन कमाता है।

दृष्टि–अष्टमस्थ बुध की दृष्टि व्ययभाव (वृषराशि) पर होगी। जातक के रुपये रोग एवं शत्रु को लेकर खर्च होगे।

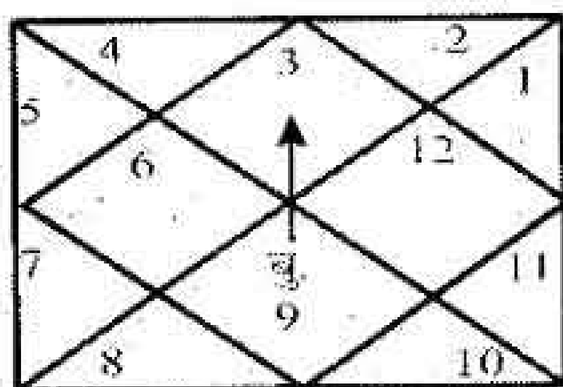
निशानी–ऐसे व्यक्ति कलहप्रिय, निष्ठुर, कटुवचनकारी होता है। तथा मित्रों के लिए विश्वासनीय नहीं होता। शारीरिक श्रम इसके वश की बात नहीं।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के छठे स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। सूर्य छठे हेने से 'पराक्रम भंग योग' तथा बुध के छठे जाने से 'लग्नभंगयोग' एवं 'सुखभंगयो' की क्रमश: सृष्टि हुई है। फलत: यहां यह योग ज्यादा सार्थ नहीं है। जातक को माता की सम्पत्ति से वंचित होना पड़ेगा तथा उसे वाहन दुर्घटना का भय भी बना रहेगा। फिर भी यह योग के प्रभाव के कारण जातक का बचाव होता रहेगा।
2. **बुध + चंद्र**–आर्थिक कष्ट एवं तंगी रहेगी।
3. **बुध + मंगल**–विपरीत राजयोग के कारण जातक ऐश्यवर्यशाली जीवन जिएगा।
4. **बुध + गुरु**–विलम्ब विवाह होगा। गृहस्थ सुख में कमी रहेगी।
5. **बुध + शुक्र**–विलम्ब संतति होगी। विद्या में बाधा।
6. **बुध + शनि**–भाग्योदय में बाधा आएगी।
7. **बुध + राहु**–शत्रु परास्त होने पर बाधा पंहुचाने की चेष्टा करेगें।
8. **बुध + केतु**–गुप्त शत्रुओं से चिंता बनी रहेगी।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में



मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। सप्तम स्थान में बुध धनुराशि का होगा। यह बुध की समराशि है। बुध यहां 'कुलदीपक योग' बनाएगा। लालकिताब वालों ने इस बुध को 'पारस' का दर्जा दिया है। ऐसे जातक को विद्या, बुद्धि एवं कलम की शक्ति मिलती है। जातक अपनी कला, हुनुर के माध्यम से धनवान होता है। उसे परिश्रम का फल मिलता है।

दृष्टि–सप्तमस्थ बुध लग्नस्थान अपने ही घर (मिथुनराशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: ऐसा जातक सुंदर, सुडौल और आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा।

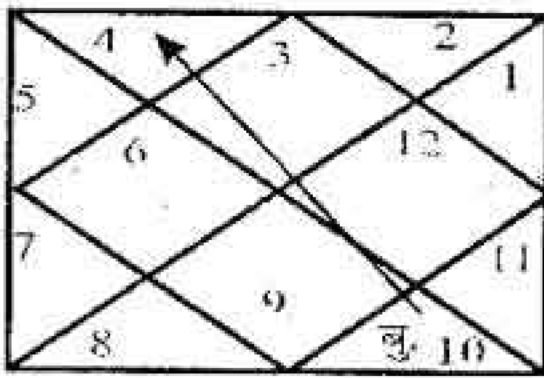
निशानी–जातक का जीवनसाथी वफादार होता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. बुध + **सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के सातवें स्थान में धनुराशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। केन्द्रवर्ती होकर दोनों ग्रह लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: 'कुलदीपकयोग' एवं 'लग्नाधिपति योग' की सृष्टि होगी। ऐसा जातक तेजस्वी होगा। कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा। तथा अल्प प्रयत्न से ही उसे ज्यादा सफलता मिलेगी। जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–व्यक्ति अपने पुरुषार्थ व पराक्रम से प्रचुर मात्रा में धन कमाएगा।
3. **बुध + मंगल**–जातक पराक्रमी होगा। गृहस्थ सुख में थोड़ी सी खटपट संभव।
4. **बुध + गुरु**–'हसंयोग' के कारण विवाह के बाद जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
5. **बुध + शुक्र**–गृहस्थ जीवन सुखी। जातक स्त्री व संतान से सुखी होगा।
6. **बुध + शनि**–जातक भाग्यशाली होगा। गृहस्थ सुख उत्तम।
7. **बुध + राहु**–गृहस्थ सुख में बाधा। द्विभार्यायोग संभव।
8. **बुध + केतु**–वैवाहिक तनाव संभव।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में



मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। अष्टम भाव में बुध मकर (सम) राशि में होगा। बुध की यह स्थिति 'लग्नभंगयोग' एवं सुखहीन योग' की सृष्टि करती है। लाल किताब वालों ने इस बुध को बीमारी और जहमत कहा है जातक को जीवन में अनेक कष्ट दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। गुप्त रोग व गुप्त शत्रु का भय रहेगा।

दृष्टि—अष्टम स्थानगत बुध की दृष्टि धनभाव (कर्कराशि) पर होगी। फलत: जातक को धन, विद्या व कुटुम्ब का सुख मिलेगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को परेशानी पैदा होगी।

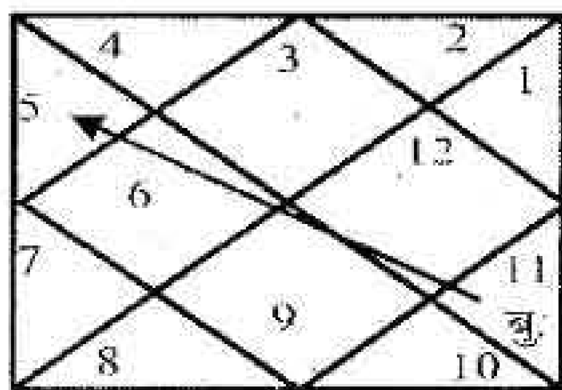
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के अष्टम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। सूर्य के आठवें होने से 'पराक्रमभंगयोग' एवं बुध के आठवें होने से 'लग्नभंगयोग' एवं सुखभंग योग बनेगा। फलत: जातक को अपने भाग्योदय हेतु काफी प्रयत्न करना पड़ेगा। परिश्रम का उतना लाभ नहीं मिलेगा जितना मिलना चाहिए। यहां यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। फिर भी जातक को अन्तिम सफलता मिलेगी।
2. **बुध + चंद्र**—धन प्राप्ति हेतु कष्ट, संघर्ष एवं बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
3. **बुध + मंगल**—यहां 'विपरीत राजयोग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य एवं पराक्रम को प्राप्त करेगा।
4. **बुध + गुरु**—गृहस्थ सुख में बाधा एवं शत्रुओं का भय बना रहेगा।
5. **बुध + शुक्र**—विलम्ब संतति योग एवं विद्या में बाधा संभव।
6. **बुध + शनि**—विपरीत राजयोग के कारण जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

7. **बुध + राहु**–अचानक दुर्घना संभव, आयु में बाधा।

8. **बुध + केतु**–शल्यचिकित्सा, पैरों में चोट संभव।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में



मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अतः यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। नवम स्थान में बुध कुंभ (सम) राशि में होगा। लग्नेश का भाग्यस्थान में होने से जातक भाग्यशाली होगा। धनवान होगा। बुद्धिमान होगा। बंधु–बांधवों का प्रेमी, विख्यात, तेजस्वी व पराक्रमी होगा। जातक का जनसंपर्क तेज होगा।

दृष्टि–नवम् स्थानगत बुध की दृष्टि पराक्रम भाव (सिंहराशि) पर होगी। जातक महान पराक्रमी होगा। मित्रों से लाभ उठाएगा।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस बुध को 'जादू का भूत' कहा है। ऐसा व्यक्ति जबान से बोलेगा सच हो जाएगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

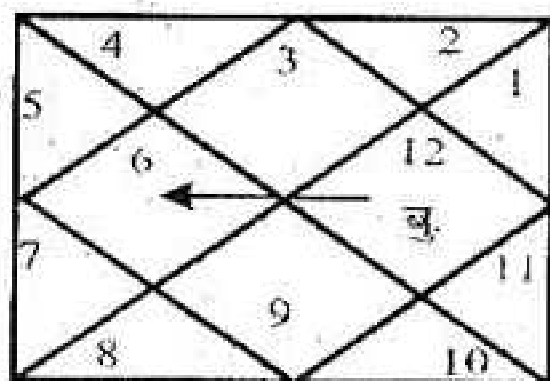
1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के नवम् स्थान में कुंभराशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रह तृतीय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगे जो कि सूर्य का स्वयं का घर है। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान होता है। भाग्यशाली होता है। उसका पराक्रम तेज होता है। जातक के कुटुम्बी-परिजन उसके सहायक होगे। जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी।
2. **बुध + चंद्र**–भाग्य एवं धन का साथ जीवन में बराबर बना रहेगा।
3. **बुध + मंगल**–थोड़ा संघर्ष रहेगा पर सफलता मिलती रहेगी।
4. **बुध + गुरु**–गृहस्थ सुख उत्तम। नौकरी सुख भी उत्तम।
5. **बुध + शुक्र**–भाग्य का सितारा आपके आगे बढ़ाने में लगातार सहायक भूमिका निभाएगा।

6. **बुध + शनि**–राजा के सामन ऐश्वर्यशाली जीवन होगा। भाग्यशाली व्यापारियों में अपनका नाम होगा।

7. **बुध + राहु**–भाग्य में बाधा, रुकावट एवं कष्टानुभूति होगी पर अंतिम सफलता।

8. **बुध + केतु**–संघर्ष, परेशानी एवं भाग्योदय संबंधी चिंता रहेगी।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में



मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभ फलदायक व योगकारक ग्रह है। दशम स्थान पर बुध मीन राशि अपनी नीच राशि में होगा। यहां 15 अंशों में बुध परमनीच का होगा। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। ऐसे जातक को जीवन में धन, धान्य, वाहन, मकान का सुख, स्त्री-संतान का सुख मिलेगा। जातक अपने कुल का नाम रोशन करेगा। लालकिताब वालों ने ऐसे बुध को 'जीहजूरिया' कहा है, क्योंकि ऐसा जातक दूसरों को हां में हां मिलाने वाला, खुशामद से अपना कार्य सिद्ध करने वाला होता है।

दृष्टि–दशमस्थ बुध की दृष्टि अपनी उच्च राशि (कन्या) चतुर्थभाव पर होगी। फलत: जातक को मकान का पूर्ण सुख मिलेगा। भौतिक ऐश्वर्य की प्राप्ति बुद्धिबल के माध्यम से होगी।

निशानी–ऐसे व्यक्ति की जुबान मीठी होती है। व्यापार-नौकरी से धन कमाता है।

दशा–बुध का दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

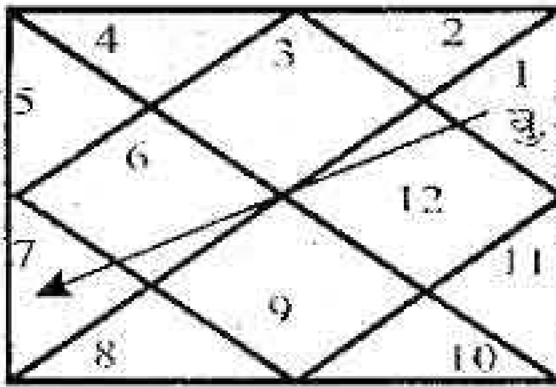
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के स्थान स्थान में मीनराशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। बुध यहां नीच का होगा। पर केन्द्रवर्ती होने से 'कुलदीपकयोग' बना रहा है। यहां बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगें जहां बुध की उच्चराशि उपस्थित है। फलत: जातक भाग्यशाली होगा। बुद्धि चातुर्य से जातक धनवान होगा। अच्छा

व्यापारी होगा। जातक को उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी। माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

2. **बुध + चंद्र**–राज्य में, सरकार व राजनीति में लाभप्रद स्थित रहेगी।
3. **बुध + मंगल**–परिवार व कुटुम्ब आपके नाम से जाना जाएगा।
4. **बुध + गुरु**–गुरु के कारण यहां 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली पराक्रमी होगां जातक ज्ञानी-ध्यानी होगा।
5. **बुध + शुक्र**–शुक्र के कारण यहां 'नीचभंगराजयोग' बनेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा। एकाधिक वाहनों का स्वामी होगा।
6. **बुध + शनि**–भाग्य का सितारा आपकी मेहनत का सही मूल्यांकन करेगा।
7. **बुध + राहु**–राज्य सरकार एवं राजनीति में अप्रिय घटना हो सकती है।
8. **बुध + केतु**–राज्य-सरकार या राजनीति में कार्यरत लोगों के माध्यम से चिंताग्रस्त रहेंगे।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में



मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। एकादश स्थान में बुध मेष (सम) राशि में है। लालकिताब वालों ने इस बुध को हुनरमंद और शर्मसार कहा है। जातक प्राय: विरोधाभासी बयान देगा तथा कई बार सही निर्णय लेने में अक्षम रहेगा। प्राय: जातक असत्य वचन बोलकर अपनी विश्वसनियता खो देता है। पर जातक धनवान होता है। जातक का परिश्रम उसे सफल बनाने में सहायक होगा।

दृष्टि–एकादश भाव में स्थित बुध की दृष्टि पंचम भाव (तुलाराशि) पर होगी। जातक प्रजावान होगा। कन्या संतति अधिक होगी।

निशानी–ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय 34 वर्ष के बाद होता है। परन्तु जातक का बड़े भाई से विरोध रहेगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को मिश्रित फल मिलेंगे।

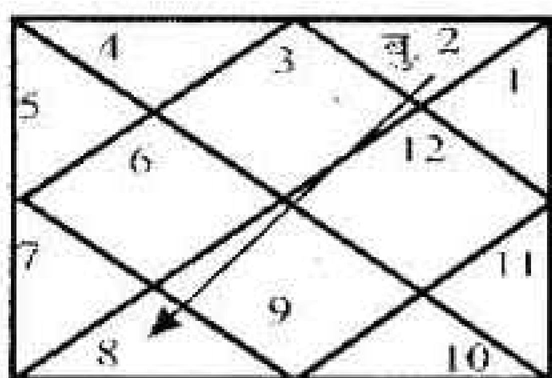
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव में मेषराशिगत यह युति

वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां उच्च राशि में होगा तथा पंचम भाव को देखेगा। यह युति यहां सार्थक है। ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। गांव या शहर का प्रमुख प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक शिक्षित होगा। उसकी संतान भी शिक्षित होगी। जातक पराक्रमी एवं सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र**–व्यापार-व्यवसाय में बराबर लाभ होगा।
3. **बुध + मंगल**–यहां संगत की युति से जातक नकली चीजें बनाने में, झूठी गवाह देने में रुचि लेगा अपने गलत कार्य को भी सही मानेगा।
4. **बुध + गुरु**–विवाह के बाद उन्नति, गृहस्थ सुख श्रेष्ठ।
5. **बुध + शुक्र**–गृहस्थ सुख उत्तम, स्त्री-संतान सुख उत्तम।
6. **बुध + शनि**–भाग्य एवं भविष्य व्यापार से ही चमकेंगे।
7. **बुध + राहु**–व्यापार में शुद्ध मुनाफे में घाटा होगा।
8. **बुध + केतु**–व्यापार-व्यवसाय में तरक्की की चिंता बनी रहेगी।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में



मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे '**केन्द्राधिपत्य दोष**' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। द्वादश स्थान में बुध वृषराशि का होगा। वृष बुध की मित्रराशि है पर बुध की यह स्थिति क्रमश: **लग्नभंगयोग**, **सुखहीनयोग** की सृष्टि करती है। जातक को सुंदर स्त्री, सुंदर वस्त्र, संतान एवं वाहन का सुख मिलेगा, परंतु परिश्रम का उतना लाभ नहीं मिलेगा, जितना मिलना चाहिए। लाल किताब वालों ने इस बुध को 'नेकस्वभाव मगर किस्मत का मारा' कहा है। ऐसे व्यक्ति को भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

दृष्टि–द्वादश भाव स्थि बुध की दृष्टि छठे स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक को गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोग परेशान करेंगे।

निशानी–जातक हास्य, संगीत, खेल व कला का प्रेमी होगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को दिक्कते आएगी।

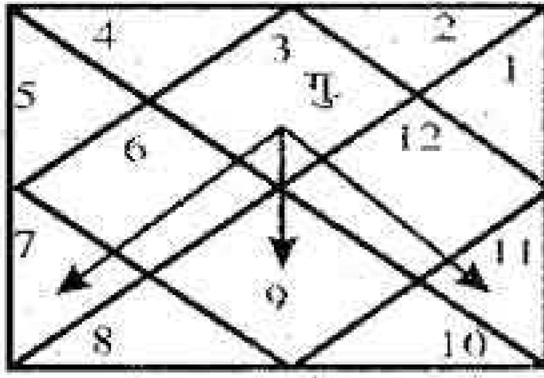
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के द्वादश भाव में वृषराशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के भाव को पूर्ण दृष्टि में देखेंगे। सूर्य बारहवें होने से 'पराक्रमभंग योग' बना एवं बुध के कारण 'लग्नभंगयोग' एवं 'विद्या बाधायोग' बना। फलतः यहां यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक बुद्धिमान होगा। यात्राएं खूब करेगा पर जीवन में संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी। ऐसा जातक संघर्षशील जीवन जीते हुये भी सफल व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–धन के अपव्यय पर चिंता बनी रहेगी। यात्राएं अधिक होगी।
3. **बुध + मंगल**–व्यापार-व्यवसाय में लाभ के प्रति आशंका रहेगी।
4. **बुध + गुरु**–गृहस्थ सुख में चिंता, अलगाव संभव।
5. **बुध + शुक्र**–गृहस्थ सुख, संतान सुख में बाधा।
6. **बुध + शनि**–भाग्योदया में बाधा, व्यापार में बाधा।
7. **बुध + राहु**–व्यापार में हानि, यात्रा में संकट।
8. **बुध + केतु**–कारोबार के प्रति, धन के प्रति चिंता रहेगी।

❑❑❑

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति प्रथम स्थान में



मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। प्रथम स्थान में बृहस्पति मिथुन (मित्र) राशि में होकर 'कुलदीपक योग' एवं 'केसरीयोग' योग की सृष्टि करते हुए उच्चाभिलाषी होगी। ऐसा जातक महत्वकांक्षी होता है। उसमें ज्ञान, संयम, विवेक व धैर्य का अद्‌भुत समंवय होता है। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को 'गद्दीनाथ साधु' कहा है। ऐसा व्यक्ति समाज का सम्मानित, प्रतिष्ठित एवं आदरणीय व्यक्ति होता है। ऐसा व्यक्ति भले ही ज्यादा दौलतमंद न हो पर यशस्वी जरूर होता है। धन की मजबूती का पता चंद्रमा की स्थित से लगेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ बृहस्पति की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि), सप्तम भाव (धनु राशि) एवं भाग्य स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। फलत: जातक को संतान सुख, पत्नी व गृहस्थ सुख, भाग्य व सौभाग्य का सुख पूर्ण रूप से मिलेगा।

निशानी–जातक अध्ययन-अध्यापन के काम में ज्यादा रूचि लेगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक का सर्वागीण विकास होगा। उसे भौतिक व आध्यात्मिक सुखों की प्राप्ति होगी।

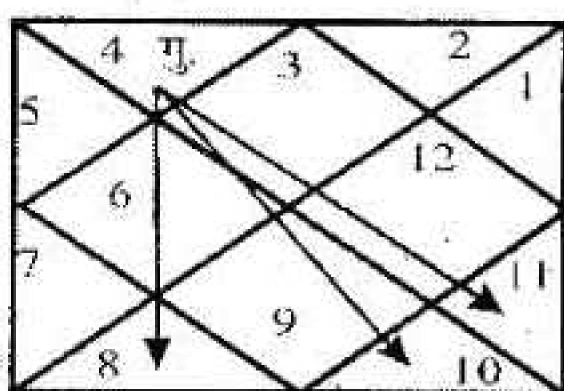
गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–ऐसा जातक पराक्रमी होगा। कुटुम्ब-परिवार में रहने वाला होगा।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुनलग्न में प्रथम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। लग्न स्थान में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री

होगा। दो केन्द्रों का स्वामी होकर बृहस्पति क्रमशः पंचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्यस्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः आपका भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। धन की प्राप्ति होगी। प्रथम संतान की उत्पत्ति के साथ पुनः भाग्योदय होगा। जीवन आराम से गुजरेगा।

3. **गुरु + मंगल**–जातक सिद्धांत प्रिय एवं हठी होगा।
4. **गुरु + बुध**–'भद्रयोग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक उच्च शैक्षणिक प्रतिभा वाला Highly Qualified होगा।
6. **गुरु + शनि**–जातक धनी एवं उत्तमश्रेणी के व्यापार का स्वामी होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां दोंनो ग्रह प्रथम स्थान में मिथुन राशि में है। यहां बृहस्पति की अपनी मित्रराशि एवं अपनी उच्चराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण जातक हठी होगा तथा परिवार-कुटुम्ब वालों के प्रति लगाव नहीं रखेगा।
8. **गुरु + केतु**–ऐसा जातक धर्मध्वज होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति द्वितीय स्थान में



मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। यहां द्वितीय स्थान में बृहस्पति उच्च (कर्क) राशि में है। कर्कराशि के अंशों में बृहस्पति परमोच्च का होता है। बृहस्पति की यह स्थिति जातक के लिए परमसौभाग्यशाली होने का प्रतीक है। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को 'सभी को तारने वाला जगतगुरु' कहा है। ऐसा जातक अपने कुल की प्रतिष्ठा को चार-चांद लगाता है। मर्यादाओं में रहते हुए उन्नति करता है। अपने कुटुम्ब की जिम्मेदारियों का निर्वहन, हंसते हुए करता है। पर आय का स्रोत धीमा होता है। जातक का वाणी गंभीर एवं धर्मप्रधान प्रामाणिक होता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि छठे भाव (वृश्चिक राशि), आठवें भाव (मकर राशि) एवं अपने स्वयं के घर राज्यभाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम (समर्थ) होता है।

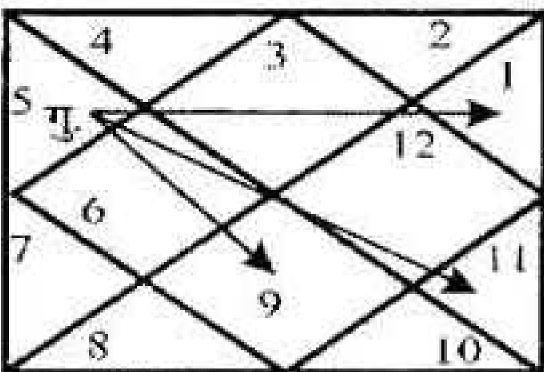
विशेष–'कारको भावनाशाय' सूत्र के अनुसार कई बार उच्च का बृहस्पति यहां धन, कुटुम्ब, संतान व दाम्पत्य के सुख में बाधक हो जाता है। अतः बृहस्पति यहां पूर्ण शुभ फल तभी देगा जब बृहस्पति किसी शुभग्रह से युत का दृष्ट हो।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक धनी होगा उसका सर्वांगीण विकास होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—जातक धनवान होगा। भाई-कुटम्बी व मित्रों से धन की प्राप्ति होगी।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न में द्वितीय स्थान गुरु+चंद्र की कयुति वस्तुः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। द्वितीयस्थ बृहस्पति उच्च का एवं चंद्रमा स्वगृही होकर **किम्बहुनायोग** बनाएगा। इनकी अमृत दृष्टि षष्टमभाव, अष्टमभाव एवं दसम भाव पर पड़ेगा। फलतः आपके शत्रु नष्ट होंगे। आपका राजनीति में वर्चस्व रहेगा। आप दीर्घायु को प्राप्त करेंगे एवं धन की कोई कमी आपकी उन्नति में बाधक नहीं होगी।
3. **गुरु + मंगल**—यहां 'नीचभंगराजयोग' बनेगा। जातक धनवान होगा। राजनैतिक पराक्रम वाला व्यक्ति होगा।
4. **गुरु + बुध**—जातक बुद्धिमान होगा। बुद्धिबल से रुपया कमाएगा।
5. **गुरु + शुक्र**—जातक विद्यावान होगा। विद्या के बल पर धन अर्जित करेगा।
6. **गुरु + शनि**—जातक भाग्यशाली होगा। भाग्य कदम-कदम पर साथ देगा।
7. **गुरु + राहु**—यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में है। यहां बृहस्पति अपनी उच्चराशि एवं अपनी शत्रुराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण धन के प्रति लापरवाह होगा। जहां जरूरत नहीं होगी वहां रुपया खर्च कर देगा।
8. **गुरु + केतु**—जातक धर्मगुरु या धार्मिक वक्ता होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति तृतीय स्थान में



मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। यहां तृतीयस्थ बृहस्पति अपने मित्र सूर्य की सिंहराशि में हो। जातक पराक्रमी होगा। जातक को राज्यसुख, पितृसुख, भाईयों-मित्रों का सुख, नौकरी-व्यवसाय का सुख मिलेगा। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को 'गरजते शेर' की संज्ञा दी है। ऐसा जातक बहुत हिम्मतवाला होता है

तथा विपरीत परिस्थितियों में भी अपना धैर्य नहीं खोता। जातक समाज में, राजनीति में, यश-प्रतिष्ठा मिलती है।

दृष्टि–तृतीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि), भाग्य भवन (कुंभ राशि) एवं एकादश भाव (मेष राशि) पर होगी। इससे स्त्री, गृहस्थ सुख, सौभाग्य, बड़े भाई, धन, पद, घर और जमीन-जायदाद का सुख मिलेगा।

निशानी–अपने से बड़ी उम्र के लोगों से लाभ होगा।

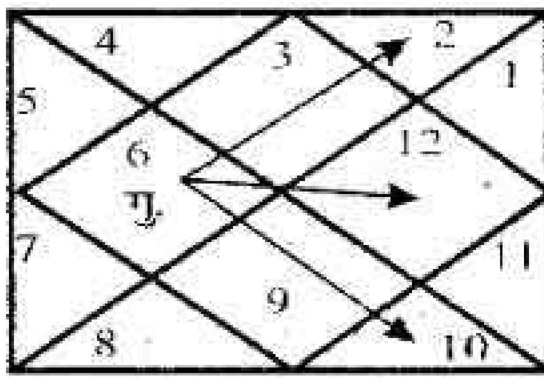
दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक का चहुंमुखी विकास होगा। सौभाग्य में वृद्धि होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक का पराक्रम तेज होगा। भाई-कुटुम्बी इष्ट मित्रों की सहायता जातक को समय-समय पर मिलती रहेगी।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के तृतीय स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। तृतीय स्थान में बैठकर दोनों शुभ ग्रह सप्तमभाव, नवमभाव एवं एकादश भाव पर पूर्ण दृष्टि होंगे। फलतः विवाह के बाद भाग्योदय के अवसर मिलेंगे। आवक के जरिए नौकरी एवं स्वतंत्र व्यापार-व्यवसाय के माध्यम से बहुमुखी होंगे। यह युति आपके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता देगी।
3. **गुरु + मंगल**–जातक को ससुराल से धन मिलेगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक अपने पराक्रम से आगे बढ़ेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक विद्यावान होगा। प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होगा। जातक की संतान भी पढ़ी-लिखी होगी।
6. **गुरु + शनि**–जातक मित्रों के सहयोग जनसंपर्क से आगे बढ़ेगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां तृतीयस्थ दोनों ग्रह सिंहराशि में है। राहु अपनी शत्रुराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण भाईयों से अनबन एवं भागीदारों में मनमुटाव रहेगा।
8. **गुरु + केतु**–जातक धार्मिक पुस्तकों का लेखक, प्रकाशक या सम्पादक होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ



फलदायक है। यहां चतुर्थ स्थान में बृहस्पति कन्या (शत्रु) राशि में होगा। यहां बैठकर बृहस्पति 'केसरीयोग' एवं 'कुलदीपकयोग' की सृष्टि करेगा। ऐसे जातक को माता, भूमि, भवन, नौकरी-व्यवसाय का पूर्ण सुख मिलता है। लालकिताब वालों ने इसे नेकराह का मुसाफिर कहा है। ऐसा जातक चतुर्दिक मान-प्रतिष्ठा व सफलता प्राप्त करता हुआ नेक राह पर चलता है। जातक के जाति-समाज, व्यवसाय, राजनीति इत्यादि में सर्वत्र प्रतिष्ठा मिलती है।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत बृहस्पति की दृष्टि अष्टम स्थान (मकरराशि), दशम स्थान (मीनराशि) एवं द्वादश स्थान (वृषराशि) को देखेगा। फलतः जातक दीर्घायु वाला, धार्मिक व परोपकार के कार्य में रुपया खर्च करने वाला। राजा से सम्मान प्राप्त करता है।

निशानी–जातक धन का अपव्यय नहीं करता एवं कलह-लड़ाई-झगड़े, ईर्ष्या मे विश्वास नहीं रखेगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक उच्च पद, प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

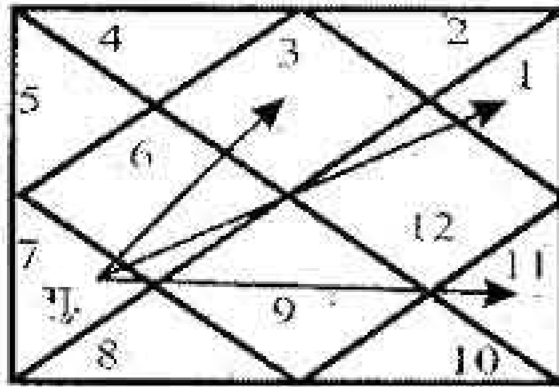
गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक को घर का मकान, वाहन एवं भौतिक सुख सदैव उपलब्ध रहेंगे।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के चतुर्थ स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। चतुर्थ स्थान चन्द्रमा शत्रुक्षेत्री होगी जहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव, दसम भाव एवं द्वादश पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः खर्च बढ़चढ़ कर रहेगा। राजकाज में प्रभाव वर्चस्व दबदबा रहेगा। जातक की आयु लम्बी होगी।
3. **गुरु + मंगल**–जातक अपने कुटुम्ब कुल का नाम स्वपराक्रम से रोशन करेगा।
4. **गुरु + बुध**–'भद्रयोग' के कारण जातक राजा के समान प्रभावशाली होगा। जातक का मातृपक्ष शक्तिशाली होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–ऐसा जातक Highly qualified उच्च शैक्षणिक डिग्री को प्राप्त होगा।
6. **गुरु + शनि**–जातक भाग्यशाली होगा एवं बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।

7. **गुरु + राहु**–यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण माता के सुख में कमी रहेगी। सांसारिक सुखों में न्यूनता रहेगी।

8. **गुरु + केतु**–जातक किसी धार्मिक ट्रस्ट या धर्मस्थान का प्रधान होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति पंचम स्थान में



मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। पंचम स्थान में बृहस्पति तुला (शत्रु) राशि में होगा। जातक विद्यावान-ज्ञानवान होगा एवं गृहस्थ के सम्पूर्ण सुख को भोगेगा। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को ब्रह्मज्ञानी कहा है। जातक बड़ी इज्जत-आबरू वाला, अपनी सलाह से लोगों की पीड़ा-कष्ट को दूर करने में समर्थ होता है। ऐसा व्यक्ति का पुत्र प्रतिष्ठित होता है। जातक भाग्योदय पुत्र उत्पत्ति के पश्चात् होता है तथा प्रौढावस्था ज्यादा सुखमय होती है।

दृष्टि–पंचमस्थ बृहस्पति की दृष्टि भाग्यभवन (कुंभ राशि), लाभस्थान (मेष राशि) और लग्नस्थान (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक को पुरुषार्थ-परिश्रम का यथेष्ट फल मिलेगा। जातक व्यापार-व्यवसाय में लाभ कमाएगा एवं परम सौभाग्यशाली होगा।

निशानी–जातक के पास सबकुछ होते हुए भी व्यवसाय-नौकरी, संतान पक्ष में असंतोष रहता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक की सर्वांगीण उन्नति होगी। कोर्ट-केस में विजय मिलेगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक बुद्धिमान होगा। आध्यात्म-मार्ग का पथिक होगा। जातक के पास पूर्व संचित पुण्य के कारण पूर्वाभास की शक्ति होगी।

2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के पंचम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। पंचम स्थान में ये दोनों शुभ ग्रह बैठकर भाग्यभवन, लाभस्थान एवं लग्नस्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक का व्यक्तित्व तेजस्वी होगा। व्यापार-व्यवसाय द्वारा जातक के अतुल धन की प्राप्ति होती रहेगी। अन्य दुर्योग न हो तो जीवन सुखी रहेगा।

3. **गुरु + मंगल**–जातक व्यापार-व्यवसाय में धन अर्जित करेगा। टैक्निकल व मैकेनिकल कार्य में रुचि रखेगा।

4. **गुरु + बुध**–जातक व्यापार प्रिय होगा एवं व्यापार से धन कमाएगा।

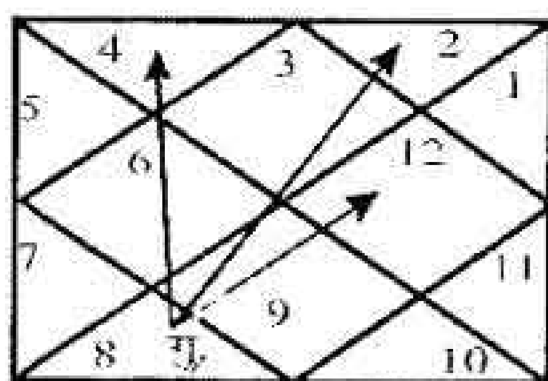
5. **गुरु + शुक्र**–जातक कला प्रिय, गुणों का पारखी एवं ज्ञानी होगा।

6. **गुरु + शनि**–जातक परम सौभाग्यशाली एवं महाधनी होगा।

7. **गुरु + राहु**–यहां पंचमभाव में दोनों ग्रह तुलाराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण पुत्र संतति विलम्ब में होगी विद्यायोग में अनपेक्षित बाधा संभव।

8. **गुरु + केतु**–धार्मिक क्रिया करने पर तेजस्वी संतति का पिता होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति षष्ट्म स्थान में



मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। छठे स्थान में बृहस्पति वृश्चिक (मित्र) राशि में है। बृहस्पति छठे जाने से 'विवाहभंगयोग' एवं राज्यभंग योग' की सृष्टि हुई। जातक को गृहस्थसुख एवं राज्यसुख प्राप्त करने में दिक्कतें-बाधाएं आएगी। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को 'मुफ्तखोर' की संज्ञा दी है। ऐसा जातक साधु स्वभाव वाला होता हुआ भी बिना परिश्रम किये धन अर्जित करने में विश्वास रखता है। जातक अपनी बुद्धि, ज्ञान व अनुभव का पूरा लाभ नहीं उठा पाता।

दृष्टि–छठे भावगत बृहस्पति की दृष्टि दसम स्थान (मीनराशि), व्ययस्थान (वृषराशि) एवं धनस्थान (कर्कराशि) पर होगी। फलतः जातक का धन, शत्रु-रोग एवं कोर्ट-कचहरी में खर्च होगा।

विशेष–इस बृहस्पति को शुभ बनाने के लिए व्यक्ति पीले रंग का ख्याल जेब में रखना चाहिए। भिखारियों को भोजन एवं बृहस्पति को केले का दान करने से गुरु नेक हो जाता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा कष्टदायक साबित होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–ऐसे जातक का 'पराक्रमभंग' होता है। जातक को राजा से दण्ड या समाज से तिरस्कृत (अपमान) जनक कार्यवाही संभव है।

2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के छठे स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है छठे स्थान में चंद्रमा नीच का होगा। एवं इस कुण्डली में 'धनहीनयोग', 'विवाहभंगयोग' एवं 'राजभंगयोग' की सृष्टि होगी। फलतः यहां गजकेसरी योग आपके लिए शुभफलदायक न होकर धन के प्रति संघर्ष का संकेत देता है।

3. **गुरु + मंगल**–विपरीत राजयोग के कारण जातक के पास गाड़ी-घोड़ा, बगंला, बैंक-बैलेंस वगैरा होगें।

4. **गुरु + बुध**–जातक को परिश्रम का उचित फल नहीं मिलेगा।

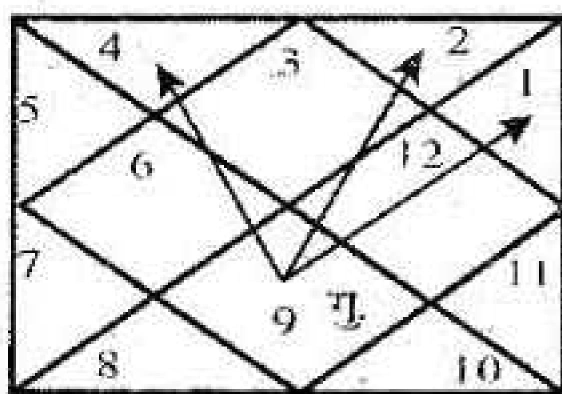
5. **गुरु + शुक्र**–विद्या में रुकावट, खर्च के प्रति चिंता संभव।

6. **गुरु + शनि**–भाग्योदय में बाधा, विलम्ब विवाह संभव है।

7. **गुरु + राहु**–यहां छठे स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में है। चाण्डालयोग के कारण विलम्ब विवाह अथवा गृहस्थ सुख में निश्चित रूप से बाधा पहुंचेगी।

8. **गुरु + केतु**–नीति वाक्यों एवं धैर्य के माध्यम से जातक अपने शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति सप्तम स्थान में



मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। यहा सप्तम स्थान में बृहस्पति स्वगृही धनुराशि का है। फलतः यहां पर क्रमशः कुलदीपकयोग, केसरीयोग एवं हंसयोग की सृष्टि हुई है। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली पराक्रमी, कुटुम्ब-परिवार का नाम रोशन करने वाला यशस्वी जातक होता है। लालकिताब वालों ने इसे 'गृहस्थ में फंसा साधु' कहा है। ऐसा जातक धर्म-कर्म में अग्रणी व दौलतमन्द होता है। जातक माता-पिता का सेवक होता है तथा प्रथम पुत्र की उत्पत्ति के बाद प्रतिष्ठा एवं आवक बढ़ती है।

दृष्टि–सप्तमस्थ बृहस्पति की दृष्टि एकादश (मेष राशि), लग्नस्थान (मिथुन राशि) एवं पराक्रम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक महान् पराक्रमी होगा। कुटुम्ब एवं मित्रों का रक्षक होगा।

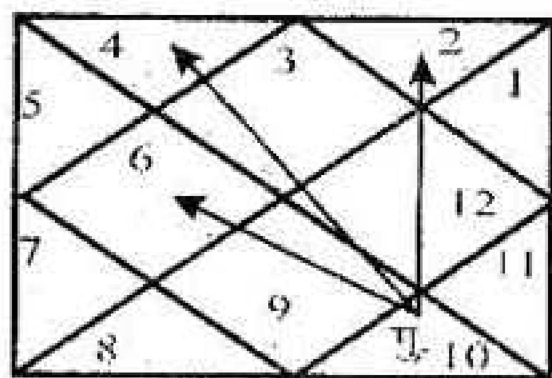
निशानी–जातक के आवक के जरिए दो-तीन प्रकार के होगे।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक जबरदस्त उन्नति करेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक का ससुराल पराक्रमी होगा। जिससे जातक के स्वयं का पराक्रम बढ़ेगा।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के सप्तम स्थान मे गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। सप्तम भाव में बृहस्पति स्वगृही होने से '**हंसयोग**' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों शुभग्रह लाभस्थान, लग्नभाव एवं पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलता आपका व्यक्तित्व 24 वर्ष की आयु में निखरना शुरू हो जायेगा। 32 वर्ष की आयु मे आपका पराक्रम पूर्ण यौवन पर होगा। यदि लग्नेश बुध आपकी कुंडली में अच्छी स्थिति में है तो निश्चय ही आप एक उत्कृष्ट श्रेणी के सफल व्यक्तियों में से एक है।
3. **गुरु + मंगल**–जातक धनी होगा। व्यापार प्रिय होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक को अल्प पुरुषार्थ का विशेष फल मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक बुद्धि कौशल से अपने क्षेत्र में नये कीर्तिमान् स्थापित करेगा।
6. **गुरु + शनि**–जातक परमसौभाग्यशाली एवं धनी होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां दोनों ग्रह धनुराशि में है। जातक का ससुराल प्रभावशाली व संपन्न होगा। यहां 'चाण्डालयोग' के कारण पति-पत्नी के मध्य अहम् का टकराव होता रहेगा।
8. **गुरु + केतु**–समझौते वाली नीति एवं धैर्य के माध्यम से जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति अष्टम स्थान में



मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश हैं। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। यहां अष्टम स्थान में बृहस्पति अपनी नीच (मकर) राशि में होगा। मकरराशि के पांच अंशों में बृहस्पति परमनीच

का कहलाता है। बृहस्पति की इस स्थिति में क्रमशः 'विवाह भंगयोग' एवं 'राज्यभंगयोग' की सृष्टि होती है। जातक का विवाह विलम्ब से होगा अथवा गृहस्थ सुख में कुछ न कुछ न्यूनता रहेगी। राज्यपक्ष में भी वांछित लाभ नहीं मिल पाएगा। लालकिताब वालों ने इसे देवकृपा का प्रतीक' कहा है। ऐसा जातक सोने की लंका तक का दान करने में नहीं हिचकिचाता।

दृष्टि–अष्टमस्थ बृहस्पति की दृष्टि व्यय भाव (वृष राशि), धन भाव (कर्क राशि) एवं चतुर्थ भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलतः जातक की आयु दीर्घ होगी परंतु जातक खर्च की बाहुल्यता के कारण ऋणी रहेगा।

विशेष–ऐसे जातक को शरीर के सुवर्ण आभूषण धारण करना चाहिए। गुप्त दान या पीले फलों के दान करते रहना चाहिए तो बृहस्पति शुभ हो जाएगा।

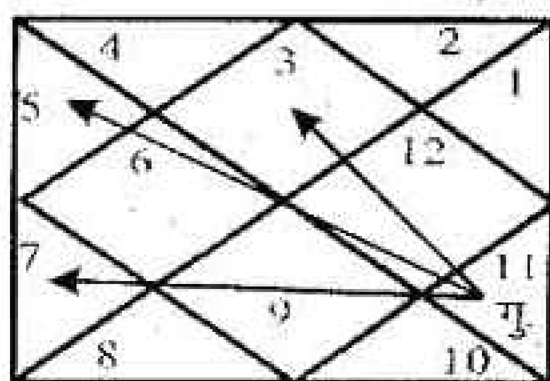
दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में दिक्कतें आएगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक का पराक्रम भंग होगा। राजा से दण्ड मिल सकता है। समाज से बहिष्कार या तिरस्कार जैसी घटना घटित हो सकती है।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के अष्टम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। अष्टम भाव में दोनों ग्रह होने के कारण आपकी कुंडली में क्रमशः 'धनहीन योग', 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि हुई है। फलतः यहां गजकेसरी योग आपके लिए शुभफलदाई न होकर धनसंग्रह में बाधक, विवाह सुख में बाधक एवं सरकारी नौकरी में बाधक हैं। राजकाल में किसी मुकदमें में पराजय भी हो सकता है।
3. **गुरु + मंगल**–यहां मंगल होने पर 'नीचभंगराजयोग' बनेगा। जातक राजा के समय पराक्रमी होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–विद्या में बाधा, संतान की तरक्की में भी बाधा महसूस होगी।
6. **गुरु + शनि**–यहां शनि होने पर नीचभंगराजयोग बनेगा। जातक राजा के समान प्रभावशाली होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण विलम्ब विवाह योग अथवा गृहस्थ सुख में निश्चित बाधा के योग बनते हैं। यहां द्विभार्ययोग भी संभव है।

8. **गुरु + केतु**–यदि धैर्य एवं समझौतेवादी नीति से काम न लिया तो गृहस्थ जीवन कष्टमय हो सकता है।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति नवम स्थान में



मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। नवम् स्थान में बृहस्पति कुंभ (सम) राशि में है। जातक बुद्धिमान, ज्ञानवान, धैर्यवान होता है। जातक की बौद्धिक ऊर्जा सकारात्मक होती है। लालकिताब वालों ने इसे 'दहकता सोना' कहा हैं जातक अपने बुजुर्गो की इज्जत करता हैं। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है। जातक महत्वकांक्षी होता है। राज्यपक्ष व राजनीति में जातक का दबदबा रहता है। कोर्ट-कचहरी में उसे विजय मिलती है।

दृष्टि–नवमस्थ बृहस्पति की दृष्टि लग्नस्थान (मिथुनराशि), पराक्रमस्थान (सिंहराशि) एवं पंचम भाव (तुलाराशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा। पुत्रवान होगा। उसे परिश्रम में सफलता मिलेगी।

निशानी–जातक विनम्र, उदार व शालीन होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। जातक गंगास्नान को जायेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक का पराक्रम बहुत तेज होगा। जनसम्पर्क विस्तृत होगा। कुटुम्बीजनों मित्रों से लाभ है।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के नवम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। नवमभाव में बैठकर दोनों शुभग्रह लग्नस्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलत: आपके व्यक्तित्व में बढ़ोत्तरी 24 वर्ष की आयु से शुरू हो जाएगी। विवाह शुभद रहेगा एवं प्रथम संतति के साथ ही भाग्योदय का पूर्ण विकास होगा।
3. **गुरु + मंगल**–जातक प्रसिद्ध उद्योगपति होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक प्रसिद्ध व्यापारी होगा।

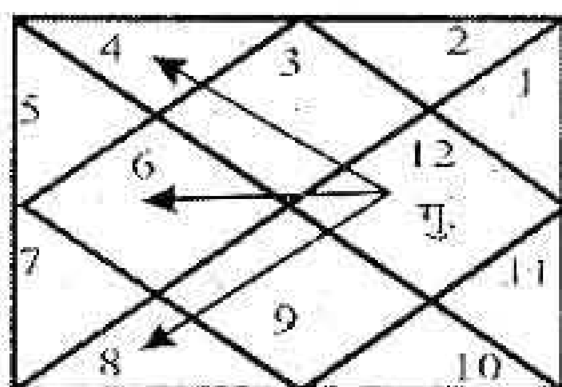
5. **गुरु + शुक्र**–जातक विद्याबल आगे बढ़ने वाला, आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा।

6. **गुरु + शनि**–जातक परम भाग्यशाली, राजा के सामन वैभवशाली होगा।

7. **गुरु + राहु**–यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में है। जातक का राजनैतिक वर्चस्व तो रहेगा परंतु 'चाण्डालयोग' के कारण पिता से अनबन रहेगी अथवा राजनीति में पद प्राप्ति के अवसर पर धोखा मिलेगा।

8. **गुरु + केतु**–जातक सिद्धांतवादी व्यक्ति होगा एवं भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति दशम स्थान में



मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। यहां दसम स्थान में बृहस्पति स्वगृही है। फलत: यहां पर क्रमश: कुलदीपक योग, केसरीयोग एवं हंसयोग की सृष्टि हुई है। ऐसा जातक राजा के समान परम पराक्रमी, नौकर-चाकर से युक्त, उत्तम वाहन का स्वामी होता है। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को 'बच्चों को यतीम छोड़ने वाला बाप' कहा है। जो कम जंचता है। ऐसे व्यक्ति व्यक्तिगत और समष्टिगतं उन्नति में विश्वास रखते हैं। जातक को माता-पिता, पत्नी-पुत्र, धन, यश, जमीन-जायदाद का पूर्ण सुख मिलता है।

दृष्टि–दशमस्थ बृहस्पति की दृष्टि धन स्थान (कर्क राशि), चतुर्थ भाव (कन्या राशि) एवं छठेभाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक अतिधनी होगा। अच्छे भवन, वाहन का स्वामी होगा एवं शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक की सर्वांगीण उन्नति होती है।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

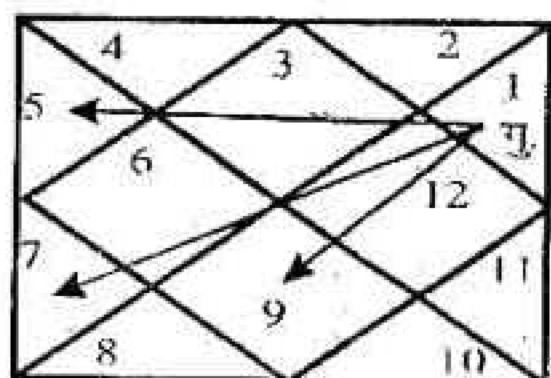
1. **गुरु + सूर्य**–जातक महान् पराक्रमी होगा। राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं धनी होगा। मित्रों से जनसम्पर्क से लाभ होता रहेगा।

2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के दशम स्थान में चंद्र+गुरु की युति वस्तुत: धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बृहस्पति स्वगृही

होकर केन्द्रस्थ होने से 'हंसयोग' की सृष्टि कर रहा है। दोनों ग्रह बली होकर धनस्थान, सुखस्थान एवं छठे भाव को पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलत: आपके पास चल-अचल सम्पत्ति बहुत होगी। आपके अनेक वाहनों का सुख भी होगा। आयुदीर्घ होगी। पद्मसिंहासन योग के कारण आप साधारण परिवार में जन्म लेकर भी उन्नति के पथ पर बहुत आगे बढ़ जाएंगे।

3. **गुरु + मंगल**–जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
4. **गुरु + राहु**–यहां दोनों ग्रह मीन राशि में है। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। परंतु **'चांडालयोग'** के कारण राजा (सरकार) में दण्ड प्राप्ति संभव है। पिता की सम्पत्ति में विवाद रहेगा।
5. **गुरु + केतु**–जातक राजा के तुल्य ऐश्वर्यशाली, न्यायप्रिय एवं कीर्तिवान् होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति एकादश स्थान में



मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। एकादश स्थान में बृहस्पति मेष (मित्र) राशि में होता है। ऐसे जातक का जीवनसाथी आकर्षक, बुद्धिमान व शिक्षित होता है। जातक नौकरी, व्यापार व कमाई के कार्यों में दक्ष होता है। लालकिताव वालों ने इस बृहस्पति को 'खजूर के वृक्ष पर अकेला' कहा है। जातक को जमीन-जायदाद का लाभ मिलेगा। परंतु अपने विचारधारा का आप अकेला व्यक्ति होगा।

दृष्टि–एकादश स्थान में स्थित बृहस्पति की दृष्टि तृतीयभाव (सिंहराशि) पंचमभाव (तुलाराशि) एवं सप्तमभाव अपने ही घर (धनुराशि) पर होगी। फलत: जातक को भाईयों का सुख, पत्नी (गृहस्थ) का सुख एवं संतान का सुख उत्तरोत्तर उत्तम होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान होगा एवं विभिन्न भौतिक सुखों को प्राप्त होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक महान् पराक्रमी एवं तेजस्वी होगा। कुटुम्बीजनों, मित्रों से सहयोग मिलता रहेगा।

2. **गुरु + चंद्र**–मिथुन लग्न के एकादश स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। ये दोनों शुभग्रह यहां बैठकर तृतीय स्थान, पंचमस्थान एवं सप्तम स्थान पर पूर्ण दृष्टिपात करेंगे। फलत: आपके पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि होगी। संतान उत्तम विद्यासुख श्रेष्ठ होगा। विवाह अच्छे घर-घराने में होगा। पत्नी सुंदर मिलेगी।

3. **गुरु + मंगल**–जातक पराक्रमी होगा पर गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

4. **गुरु + बुध**–जातक व्यापार प्रिय होगा।

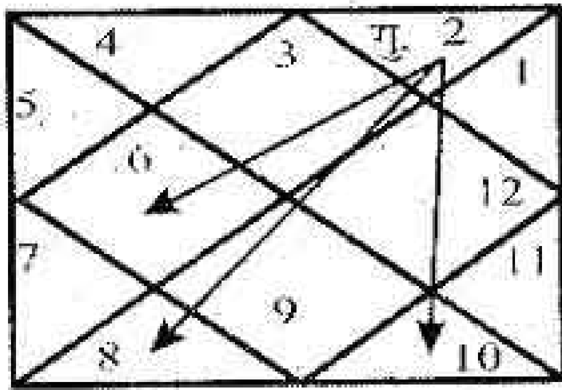
5. **गुरु + शुक्र**–जातक बुद्धिबल से कमाने वाला उच्च व्यवसायी होगा।

6. **गुरु + शनि**–जातक भाग्यशाली व्यापारी होगा।

7. **गुरु + राहु**–यहां दोनों ग्रह मेषराशि में है। जातक पत्नी एवं पिता पक्ष में सुखी होगा परंतु 'चाण्डालयोग' के कारण व्यापार-व्यवसाय में अपेक्षित लाभ नहीं होगा।

8. **गुरु + केतु**–ऐसा जातक यशस्वी उद्योगपति होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में



मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। यहां द्वादश स्थान में बृहस्पति वृष (शत्रु) राशि में है। बृहस्पति की इस स्थिति में क्रमश: 'विवाहभंगयोग' एवं 'राज्यभंगयोग' की सृष्टि होगी। जातक का विलम्ब विवाह होगा अथवा गृहस्थ सुख में अकारण बाधाएं उत्पन्न होंगी। राज्यपक्ष में भी, राजनीतिज्ञ लोगों से भी वांछित सहयोग नहीं मिलेगा। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को उच्चतम ज्ञानी कहा है। जातक तंत्र-मंत्र, धर्म-अध्यात्म का ज्ञानी होता है।

दृष्टि–द्वादशस्थ बृहस्पति की दृष्टि चुतर्थभाव (कन्याराशि), षष्टम भाव (वृश्चिकराशि) एवं अष्टमभाव (मकरराशि) पर होगी। फलत: शारीरिक सुखों में बाधा, शत्रुओ का प्रकोप एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।

निशानी–ऐसा जातक प्रौढ़ावस्था में प्राय: संन्यास की ओर प्रवृत होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में रोग उत्पन्न होंगे। अशुभ परिणाम फलिभूत होंगे।

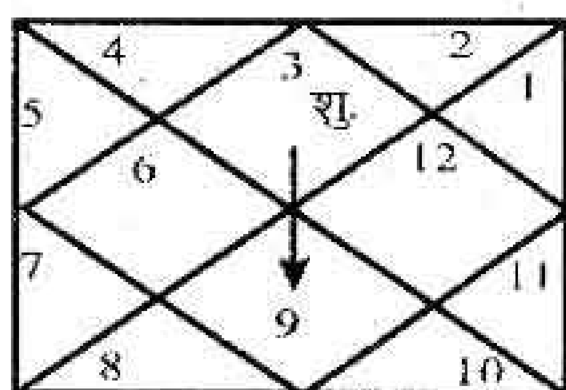
गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक का पराक्रमभंग होगा। सरकार से दण्ड या समाज से अपमान होगा।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के द्वादश स्थान में गुरु+चंद्र की युति गजकेसरी योग की सृष्टि कर रही है। यहां उच्च का है, चंद्रमा स्वगृही, इससे अधिक और क्या चाहिए? गुरु चंद्र की यह युति धनेश व दसमेश की युति है। आपके भाग्य में अद्वितीय वृद्धि कर रही हैं। यह युति संतति सुख देगी परंतु विवाह सुख में बाधक है। पत्नी फिजूल खर्च करनें वाली होगी।
3. **गुरु + मंगल**–जातक को व्यापर में नुकसान होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक को परिश्रम का यथेष्ट फल नहीं मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक विलासी होगा एवं यात्राओं से धन कमाएगा।
6. **गुरु + शनि**–भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा
7. **गुरु + राहु**–यहां दोनों ग्रह वृषराशि में है। यहां '**चांडालयोग**' के कारण विलम्ब विवाह अथवा गृह सुख में बाधा होने के निश्चित योग बनते हैं। जातक जन्म स्थान छोड़कर परदेश बस जाएगा।
8. **गुरु + केतु**–जातक धार्मिक कार्य, परोपकार, तीर्थयात्रा में, शुभकार्य में धन खर्च करेगा।

❑❑❑

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में



मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। यहां प्रथम स्थान में शुक्र मिथुन (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक गीत-संगीत, नृत्य-कला, स्त्री व रोमांच के प्रेमी होते हैं। पंचमेश लग्न में होने से जातक का सोया हुआ भाग्य खुलता है। प्रयत्न यदि उत्तम हो तो जातक सफलता की बुलंदियों को छू लेता है। लाल किताब वालों ने इस शुक्र का नाम '**रंग-बिरंगी माया**' दिया है। यह शुक्र '**कुलदीपकयोग**' भी बना रहा है। ऐसे जातक के जीवन का सही विकास विवाह के बाद होता है। जातक को उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी। धन, विद्या, यश, वाणिज्य-व्यापार से लाभ होगा।

दृष्टि—लग्नस्थ शुक्र की दृष्टि सप्तम भाव (धनुराशि) पर होगी। जीवनसाथी सुंदर मिलेगा।

निशानी—ऐसा व्यक्ति जीवन में अनेक स्त्रियों का सुख भोगता है। जातक दूसरों की सलाह लेकर काम करेगा तो उन्नति ज्यादा होगी। सफलता अधिक मिलेगी।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा में उन्नति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—यहां सूर्य की स्थिति से जातक तेजस्वी होगी, परंतु विचलित मनोवृत्ति वाला होगा। कभी 'हां' कभी 'ना' के बीच में निर्णय झूलता रहेगा।
2. **शुक्र+चंद्र**—चंद्रमा यहां शत्रुक्षेमी होकर जातक की चित्तवृत्ति अस्थिर करता है।

3. **शुक्र+मंगल**–मंगल के कारण जातक हठी, कलहकारी किन्तु विलासी प्रवृत्ति का व्यक्ति होगा।

4. **शुक्र+बुध–'भद्रयोग'** के कारण राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।

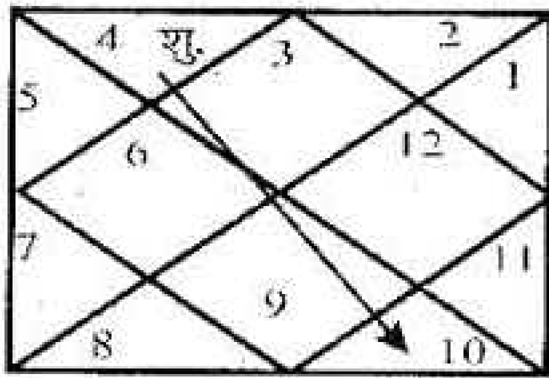
5. **शुक्र+गुरु**–यहां गुरु के कारण गृहस्थ सुख उत्तम, संतान सुख उत्तम एवं जातक भाग्यबली होगा।

6. **शुक्र+शनि**–शनि की युति से जातक ऐश्वर्यशाली होगा।

7. **शुक्र+राहु**–जातक के कार्य में अस्थिरता रहेगी।

8. **शुक्र+केतु**–जातक का स्वभाव रंगीन एवं अस्थिर रहेगा।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में



मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। द्वितीय स्थान में शुक्र कर्क (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक के रोमांटिक स्वभाव के कारण धनसंग्रह में बाधा होगी। विलासित पूर्ण वस्तुओं में धन का अपव्यय होगा। लाल किताब वालों ने इस शुक्र को **'मोहमाया का उम्दा गृहस्थी'** कहा है। ऐसा व्यक्ति सुंदर, आकर्षक, विनम्र एवं उदार स्वभाव का होगा। जातक की आर्थिक सम्पन्नता प्रथम संतति के बाद ज्यादा मुखरित होगी।

दृष्टि–शुक्र की दृष्टि अष्टमस्थान (मकरराशि) पर होगी, फलतः जातक की आयु दीर्घ होती है।

निशानी–ऐसा जातक यदि ईश्वर पर भरोसा रखकर काम करेगा तो उसे किसी वस्तु की कमी नहीं रहेगी। देवी की उपासना ज्यादा फलेगी।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे। धन एवं शुभफलों की प्राप्ति अधिक होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

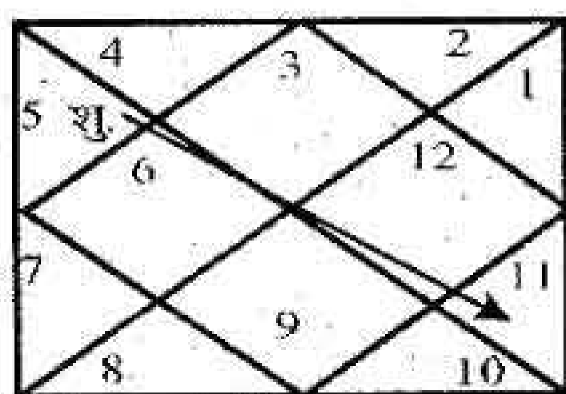
1. **शुक्र+सूर्य**–जातक को मित्रों द्वारा धन मिलेगा।

2. **शुक्र+चंद्र**–जातक की वाणी विनम्र-मधुर होगी। जातक धनी होगा।

3. **शुक्र+मंगल**–जातक की वाणी कर्कश, कटाक्ष वाली होगी।

4. **शुक्र+बुध**–जातक मधुर वाणी एवं मीठी बातें करने वाला होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–जातक महाधनी एवं विद्यावान होगा।
6. **शुक्र+शनि**–जातक भाग्यशाली होगा। हुनुरबंद होगा।
7. **शुक्र+राहु**–धन का अपव्यय अधिक होगा।
8. **शुक्र+केतु**–धनखर्च के प्रति चिंता रहेगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में



मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। तृतीय स्थान में शुक्र सिंह (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक का पराक्रम विवादास्पद होता है। भाई-बहनों व मित्रों से मनमुटाव रह सकता है। लालकिताब वालों ने इस शुक्र को '**इश्क का परवाना**' कहा है। ऐसे जातक पराई स्त्री पर डोरे डालता है और उनसे अनैतिक सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश करता है। ऐसा जातक यार-दोस्तों पर, सामाजिक प्रतिष्ठा कायम रखने के चक्कर में बहुत पैसा खर्च करता है। जातक फिजूलखर्ची होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ शुक्र की दृष्टि भाग्यभवन (कुंभराशि) पर होगी। ऐसा जातक थोड़ी मेहनत से ही उत्तम फलों की प्राप्ति करने में सफल होता है।

निशानी–जातक की प्रगति विवाह के बाद होती है।

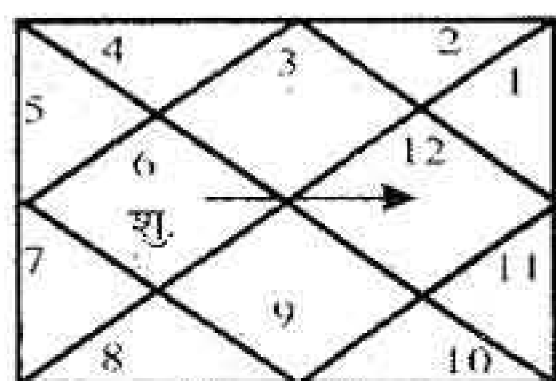
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–यहां सूर्य होने से जातक को भाई-बहन दोनों का सुख मिलता है, पर बड़े भाई की आयु के लिए सूर्य की यह स्थिति ठीक नहीं।
2. **शुक्र+चंद्र**–पराक्रम स्थान में धनेश पंचमेश युति सार्थक है। विद्या द्वारा जातक का पराक्रम बढ़ेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–जातक को भाई-बहनों का सुख मिलेगा एवं खटपट भी रहेगी।
4. **शुक्र+बुध**–लग्नेश का तृतीयस्थान में पंचमेश शुक्र से युति शुभ है।
5. **शुक्र+गुरु**–सप्तमेश पंचमेश की युति तृतीयस्थान में विवाह के बाद जातक का पराक्रम बढ़ाएगी।

6. **शुक्र+शनि**–भाग्येश पंचमेश की युति तृतीय स्थान में व्यक्ति के भाग्यवृद्धि का संकेत देती है।
7. **शुक्र+राहु**–परिवार में मनमुटाव रहेगा।
8. **शुक्र+केतु**–मित्रों में असंतोष रहेगा।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में



मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। यहां चतुर्थ स्थान में शुक्र कन्या (मित्र) राशि में होते हुए नीच का होता है। कन्याराशि के 27 अंशों में परमनीच का होता है। शुक्र केंद्रवर्ती होने से **'कुलदीपकयोग'** बना रहा है। चतुर्थभाव में शुक्र बलवान होने से हानिकारक नहीं होता। जातक को उत्तम वाहन, धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। लाल किताब वालों ने इस शुक्र की **'खुश्की का सफर'** कहा है। ऐसा व्यक्ति भरपूर संपत्ति, सवारी एवं भौतिक वैभव से सम्पन्न होता है। जातक की शिक्षा संघर्षपूर्ण होती है।

दृष्टि–चतुर्थभावगत शुक्र की दृष्टि दशमभाव (मीनराशि) पर होगी। यह शुक्र की उच्च राशि है। फलत: जातक राजनीति में उच्च पद, प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

निशानी–ऐसे जातक उन्नति विवाह के बाद होती है पर संतान आज्ञाकारी नहीं होते। विवाह के पहले प्रेमप्रसंग संभव है, बाद में सब कुछ सामान्य रहता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक को भौतिक उपलब्धियों एवं सुखों की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–तृतीयेश सूर्य केन्द्र में शुक्र के साथ शुभ स्थिति की सूचक है। जातक ऐश्वर्यवान् होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–धनेश का पंचमेश शुक्र के साथ केन्द्रस्थ होना बहुत शुभ है। जातक धनी होगा। एकाधिक मकानों का स्वामी होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–मंगल का दिक्बली होकर शुक्र के साथ केन्द्र में बैठना शुभ है। जातक बड़ी भूमि का स्वामी होगा।

4. **शुक्र+बुध**–बुध के कारण '**नीचभंगराजयोग**' बनेगा। ऐसा जातक निश्चय ही राजा तुल्य धन-सम्पत्ति ऐश्वर्य को भोगना है।

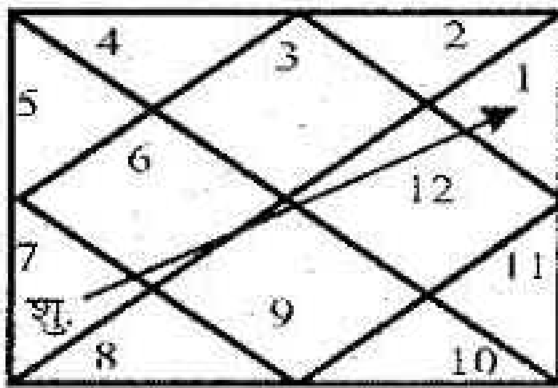
5. **शुक्र+गुरु**–जातक का प्रथम भाग्योदय विवाह के बाद, द्वितीय भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।

6. **शुक्र+शनि**–भाग्येश व पंचमेश की युति केंद्र में जातक को उद्योगपति बनाएगी।

7. **शुक्र+राहु**–यहां राहु की युति से शुक्र चतुर्थ व पंचम दोनों भाव के शुभ फल नष्ट करता है।

8. **शुक्र+केतु**–केतु की युति से माता बीमार रहेगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में



मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। पंचम स्थान में शुक्र तुलाराशि में स्वगृही होता है। ऐसा जातक विद्या, बुद्धि, स्त्री-संतान सुख से युक्त होता है। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि Educational Degree मिलती है। लाल किताब वालों ने इस शुक्र को 'बच्चों से भरा घर-परिवार' की संज्ञा दी है। जब तक जातक की पत्नी जीवित है, उसके जीवन में कोई रुकावट (कमी) नहीं आएगी।

दृष्टि–पचंमस्थ शुक्र की दृष्टि एकादश स्थान (मेषराशि) पर होगी। जातक समाज-जाति का गौरव एवं संस्कारी व्यक्ति होगा।

निशानी–जातक के छः कन्या होती हैं। जातक प्रजावान् होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक को खूब धन-दौलत, तरक्की मिलती है।

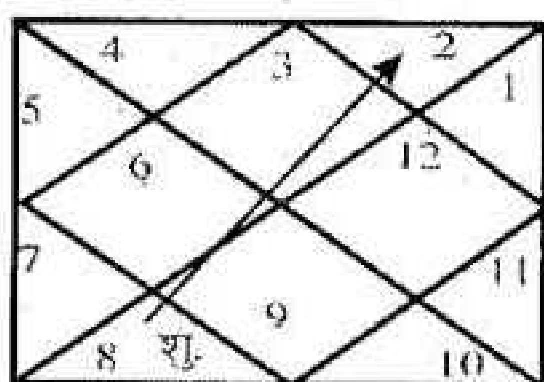
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–यदि सूर्य यहां है तो 'नीचभंगराजयोग' बनेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी व यशस्वी होगा।

2. **शुक्र+चंद्र**–धनेश पंचम स्थान में स्वगृही शुक्र के साथ होने से जातक अपनी विद्या-बुद्धि में धन अर्जित करेगा। जातक की संतान भाग्यशाली होगी।

3. **शुक्र+मंगल**–जातक उद्योगपति होगा, ठेके व व्यापार से धन कमाएगा।
4. **शुक्र+बुध**–जातक का व्यक्ति आकर्षक होगा। जातक धनी व्यक्ति होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–जातक आध्यात्मिक एवं भक्ति मार्ग का पथिक होगा।
6. **शुक्र+शनि**–यदि शनि यहां हो तो 'किम्बहुना नामक राजयोग' बनेगा। जातक निश्चय ही राजा के समान भाग्यशाली होगा।
7. **शुक्र+राहु**–विद्या एवं पुत्र संतति में बाधा।
8. **शुक्र+केतु**–विलम्ब संतति या संघर्ष के साथ विद्या की संभावना।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति षष्ट्म स्थान में



मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। यहां छठे स्थान में शुक्र वृश्चिक (सम) राशि का होगा। शुक्र की इस स्थिति के कारण **'संततिहीन योग'** बनता है। परंतु व्ययेश का छठे जाने से **'सरलयोग'** की सृष्टि भी होती है। शुक्र की इस स्थिति के कारण व्यक्ति में कामातिरेक की बाहुल्यता होती है। जातक परिश्रमी होता पर भोग-विलास, नशे-पते या जुआं के शौक में अपनी बरवादी का खुद ही कारण होता है।

दृष्टि–छठे भावगत शुक्र की दृष्टि अपने ही घर (वृषराशि) व्यय स्थान पर होगी। फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का होगा एवं कई बार राह से भटक जाएगा।

निशानी–ऐसा जातक प्रायः अपनी योग्यता एवं रुचि से भिन्न विषयों के क्षेत्र में कार्य करता है तथा किस्मत को कोसता रहता है।

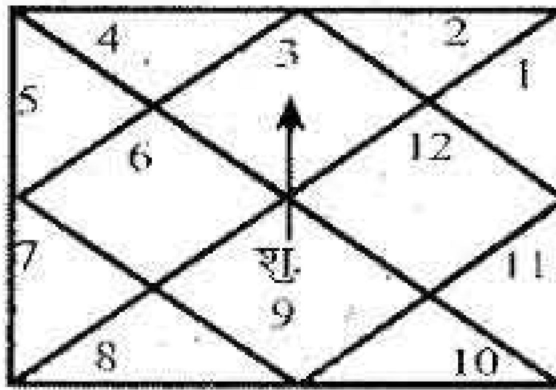
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–पराक्रमभंगयोग बनता है। विद्या में रुकावट। निर्णय गलत होंगे।
2. **शुक्र+चंद्र**–धनहीनयोग के कारण आर्थिक संकट रहेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान होगा पर शरीर में रोग रहेगा।
4. **शुक्र+बुध**–जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–गृहस्थ सुख में बाधा रहेगा। गुप्त रोग की संभावना है।

6. **शुक्र+शनि**–भाग्योदय में बाधा परंतु विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–विद्या पुत्र संतति सुख में बाधा।
8. **शुक्र+केतु**–शल्य चिकित्सा योग। गुप्त बीमारी रहेगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में



मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। सतम स्थान में शुक्र धनु (शत्रु) राशि में होता है। शुक्र की इस स्थिति में '**कुलदीपकयोग**' बनता है। जातक उत्तम विद्या, बुद्धि, स्त्री व संतान के सुख से युत होता है। जातक की पत्नी खूबसूरत, स्नेह, ममता की मूर्ति, धर्मभीरू परंतु कुछ उग्र स्वभाव की होती है। जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकती है।

दृष्टि–सप्तमस्थ शुक्र की दृष्टि लग्नस्थान (मिथुनराशि) पर होगी। फलत: जातक अल्प प्रयत्न से बहुभाग्य का स्वामी होगा।

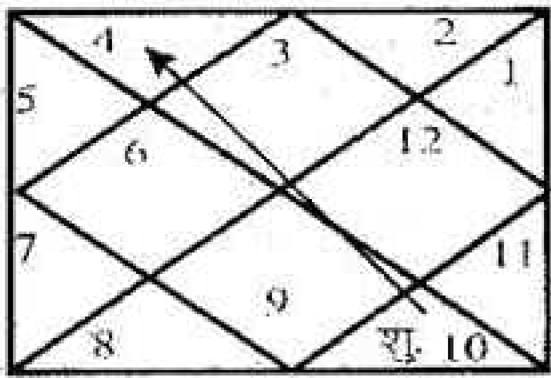
निशानी–ऐसा जातक परदेश में ज्यादा धन कमाता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होती है। उसे भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–जातक का ससुराल, जीवनसाथी प्रभावशाली होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–जातक को ससुराल से धन मिलेगा। लाभ की प्राप्ति होती रहेगी।
3. **शुक्र+मंगल**–जातक के गृहस्थ जीवन में सुख-दु:ख का सम्मिश्रण रहेगा।
4. **शुक्र+बुध**–जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। गृहस्थ सुख श्रेष्ठ।
5. **शुक्र+गुरु**–'हंसयोग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य भोगेगा। जीवनसाथी सुंदर होगा।
6. **शुक्र+शनि**–जातक परम सौभाग्यशाली होगा।
7. **शुक्र+राहु**–गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी।
8. **शुक्र+केतु**–गृहस्थ सुख में कलह रहेगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में



मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। यहां अष्टम स्थान में शुक्र मकर (मित्र) राशि में होगा। शुक्र की यह स्थिति **'संततिहीन योग'** की सृष्टि करती है परंतु व्ययेश अष्टम में होने से **'सरलयोग'** की भी सृष्टि करती है। ऐसे जातक के जीवन में दूरदर्शिता का अभाव होता है तथा उसकी विद्या एवं बुद्धि का सही उपयोग समय पर नहीं हो पाता। लालकिताब वालों ने इस शुक्र को **'चाण्डाल औरत'** की संज्ञा दी है। ऐसे जातक की पत्नी की जबान से निकला शब्द पत्थर की लकीर होगा।

दृष्टि–अष्टम भाव में स्थिति शुक्र की दृष्टि धनस्थान (कर्कराशि) पर होगी। फलत: जातक धन को खर्च करते वक्त तनिक भी विचार नहीं करता।

निशानी–ऐसा जातक यदि पत्नी को तंग करेगा तो उसे लगातार मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। ऐसे शुक्र को शुभ करने के लिए गाय (दूध) का दान करें। जातक को धर्म स्थान के सामने सिर झुकाकर चलना चाहिए।

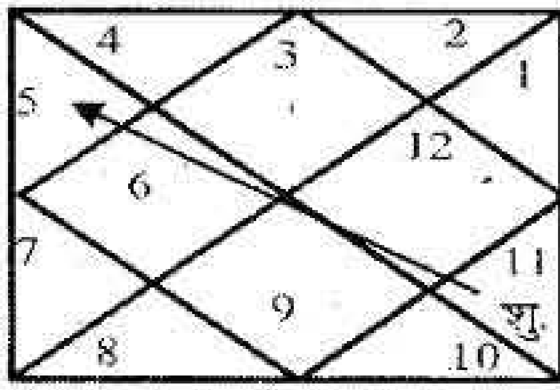
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–पराक्रम भंगयोग के कारण मानहानि होगी। रोग का प्रकोप होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–धनहीन योग के कारण आर्थिक परेशानी बनी रहेगी।
3. **शुक्र+मंगल**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान होगा।
4. **शुक्र+बुध**–लग्नभंगयोग के कारण परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–विलम्ब विवाह या गृहस्थ सुख कलुषित रहेगा। सैक्स रोग होगा।
6. **शुक्र+शनि**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान एवं भोगी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–गुप्त बीमारी एवं अचानक दुर्घटना संभव।
8. **शुक्र+केतु**–शल्यचिकित्सा योग बनता है।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल



देने वाला है। यहां नवम स्थान में शुक्र कुंभ (मित्र) राशि में होगा। यह शुक्र पंचम भाव से पंचम है, उच्चाभिलाषी है। अत: श्रेष्ठ है। इस भाव में शुक्र के पिता की दीर्घआयु होती है। जातक को स्त्री-धन, संतान, विद्या-बुद्धि एवं सौभाग्य का पूर्ण सुख मिलता है। लाल किताब वालों ने इस शुक्र को **'मिट्टी की काली आंधी'** कहा है। ऐसे जातक को स्त्री या दौलत दोनों में से एक का ही पूर्ण सुख मिलता है।

दृष्टि—नवम स्थानगत शुक्र की दृष्टि पराक्रम भाव (सिंह राशि) पर होगी फलत: जातक प्रबल पराक्रमी होगा। जनसंपर्क बहुत तेज होगा।

निशानी—ऐसा व्यक्ति यदि सम्मानित स्त्रियों का अपमान करें तो उसका भाग्य तत्काल रूठ जाएगा।

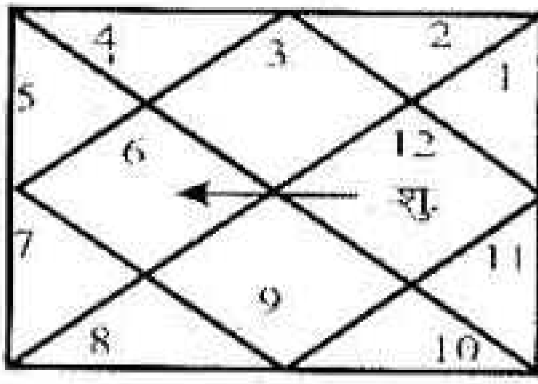
दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का चतुमुखी भाग्योदय होता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—जातक महान् पराक्रमी होगा। कुटुम्बी एवं मित्रों का सकारात्मक सहयोग रहेगा।
2. **शुक्र+चंद्र**—धनेश चन्द्र भाग्यस्थान में शुक्र के साथ होने से धन द्वारा भाग्य में वृद्धि होगी।
3. **शुक्र+मंगल**—जातक उद्योगपति होगा, पर गुप्त शत्रु परेशान करेगें।
4. **शुक्र+बुध**—जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। सफलता कदम चूमेगी।
5. **शुक्र+गुरु**—विवाह के बाद जातक का विशेष भाग्योदय होगा।
6. **शुक्र+शनि**—जातक करोड़पति होगा। भाग्यशाली होगा।
7. **शुक्र+राहु**—भाग्योदय में लगातार बाधा से जातक परेशान हो जाएगा।
8. **शुक्र+केतु**—जातक का जीवन में, संघर्ष की स्थिति रहेगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। दशम स्थान में शुक्र [illegible]राशि का उच्च का होगा। मीन राशि के 27 अंशों में शुक्र परमोच्च का होता है। शुक्र की इस स्थिति से यहां **'कुलदीपकयोग'**



एवं '**मालव्ययोग**' की सृष्टि हो रही है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य एवं साधनों का स्वामी होगा। लाल किताब वालों ने इस शुक्र को '**खाब्ब हरा**' की संज्ञा दी है। ऐसा व्यक्ति प्रेम-प्रसंगों में उलझा रहता है। सुंदर स्त्रियों के साथ संपर्क करने हेतु लालायित रहता है। उसे धन, यश, परिवार, नौकरी-व्यवसाय में उन्नति होगी।

दृष्टि–दशमस्थ शुक्र की दृष्टि सुख भाव (कन्याराशि) पर होने से जातक को सुंदर भवन, सुंदर वाहन, माता का सुख, भौतिक सुख एवं ऐश्वर्य के सभी साधनों की प्राप्ति होगी।

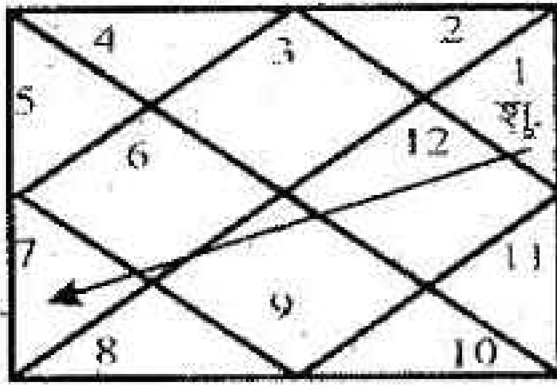
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा। राज्य से लाभ प्राप्त करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–यहां सूर्य, शनि की युति से 'प्रवज्यायोग' बनेगा। जातक राजा होते हुए भी वैरागी होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–जातक अति धनवान होगा। राजातुल्य ऐश्वर्यवान् होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–यहां दिक्बली मंगल 'कुलदीपकयोग' के साथ जातक का नाम रोशन करेगा।
4. **शुक्र+बुध**–'नीचभंग राजयोग' के कारण जातक करोड़पति होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–किम्बहुनायोग, हंसयोग, मालव्ययोग, पद्मसिंहासन योग चारों एक साथ एकत्रित होने से जातक करोड़पति होगा। जातक भाग्योदय की कोई सीमा नहीं होगी। सिंह शुक्र गुरु की युति का सर्वश्रेष्ठ दृष्टांत है।
6. **शुक्र+शनि**–जातक परमसौभाग्यशाली एवं धनी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–राज्यपक्ष में बाधा, सरकारी परेशानी रहेगी।
8. **शुक्र+केतु**–सरकारपक्ष में गुप्त संघर्ष की स्थिति रहेगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल



देने वाला है। यहां एकादश स्थान में शुक्र मेष (सम) राशि का होगा। जातक बुद्धिमान, धनवान, स्त्री व संतान सुख से युक्त होता है। प्राय: माता-पिता की प्रेरणा व सहयोग से उच्च पद, प्रतिष्ठा, धन-वैभव की प्राप्ति होती है। लाल किताब वालों ने इस शुक्र की **'माया के लिए घूमते व्यक्ति'** की संज्ञा दी है। ऐसे व्यक्ति का धन जब तक पत्नी के पास रहेगा, सुरक्षित रहेगा। अन्यथा ऐसा व्यक्ति सरलता से धन का खर्च कर देगा, संचय नहीं कर पाएगा।

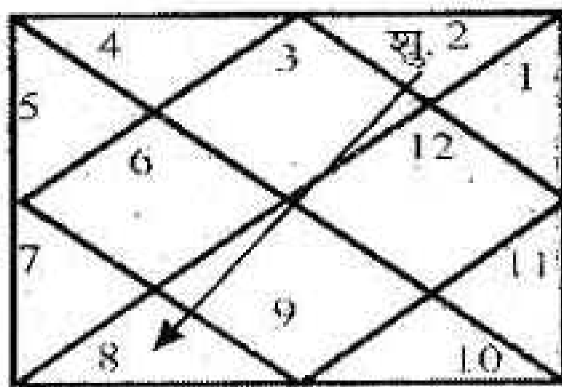
दृष्टि–एकादश स्थान में स्थित शुक्र की दृष्टि अपने घर तुलाराशि (पंचमभाव) पर होगी फलत: जातक संघर्ष के बाद भी विद्या (Educational Degree) प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेगा।

दशा–शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–उच्च का सूर्य जातक को महान् पराक्रमी एवं यशस्वी बनाएगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–जातक का उद्योग-व्यापार से लाभ होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–जातक बड़ा उद्योगपति होगा। स्वगृही मंगल व्यापार में लाभ कराएगा।
4. **शुक्र+बुध**–जातक का परिश्रम सदैव सार्थक रहेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–जातक को गुप्त व्यापार से लाभ होगा।
6. **शुक्र+शनि**–जातक भाग्यशाली होगा।
7. **शुक्र+राहु**–व्यापार में गुप्त नुकसान होगा।
8. **शुक्र+केतु**–व्यापार-व्यवसाय, लाभ में रुकावट आएगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में



मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। यहां द्वादश स्थान में शुक्र स्वगृही होगा। शुक्र की यह स्थिति **'संतानहीन**

योग' बनाती है परंतु व्ययेश व्यय भाव में स्वगृही होने से '**सरलयोग**' बना। इसलिए शुक्र शुभफलदाई हो गया है। लालकिताब वालों ने इस शुक्र को '**कामधेनु गाय**' की संज्ञा दी है। ऐसे व्यक्ति के पास धन-दौलत, ऐशो-आराम की सामग्री अपने आप आएगी। बलवान शुक्र के कारण स्त्री-सुंदर व आकर्षक होगी। विवाह शीघ्र होगा। ऐसा व्यक्ति धनवान, विख्यात तेजस्वी व यशस्वी होगा।

दृष्टि–द्वादशस्थ शुक्र की दृष्टि छठे भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–व्यक्ति को नौकरी अथवा ट्रेवलिंग व्यापार में अच्छी सफलता मिलती है।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक सुखी होगा। सम्पन्नता को प्राप्त करेगा।

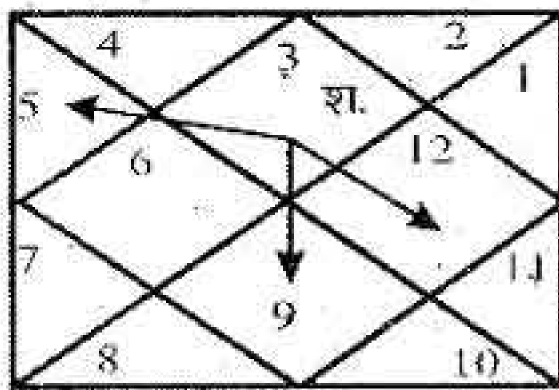
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–पराक्रम भंग योग के कारण मान भंग होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–चंद्रमा उच्च का एवं शुक्र स्वगृही होने से 'किम्बहुनायोग' बनेगा। जातक परोपकारी एवं दानी होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान होगा।
4. **शुक्र+बुध**–लग्नभंग योग के कारण परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–गृहस्थ सुख में बाधा आएगी।
6. **शुक्र+शनि**–भाग्योदय हेतु संघर्ष की स्थिति रहेगी।
7. **शुक्र+राहु**–व्यर्थ की यात्रा में धन का अपव्यय होगा। राहु के साथ शुक्र होने से व्यक्ति कामी हो जाता है तथा नैतिक-अनैतिक तरीके से अनेक स्त्रियों के साथ रमण करता है।
8. **शुक्र+केतु**–यात्रा में कष्ट, नेत्रपीड़ा संभव। शल्य चिकित्सा होगी।

❑❑❑

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में



मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां प्रथम स्थान में शनि मिथनु (मित्र) राशि में होगा। फलतः ऐसा जातक स्वस्थ्य शरीर वाला, उदार प्रवृत्ति विनम्र एवं गंभीर स्वभाव का होगा। ऐसा व्यक्ति स्वप्रयासों से उन्नति करता है। व्यक्ति कई बार उदासीन व एकांतप्रिय होता है।

दृष्टि–लग्नस्थ शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान (सिंह राशि), सप्तम भाव (धनु राशि) एवं राज्यभाव (मीन राशि) पर होगी। जातक की भाईयों से कम बनेगी। पत्नी से विचार नहीं मिलेगे एवं सरकार (नौकरी) में खटपट रहेगी।

निशानी–ऐसे व्यक्ति की किस्मत प्रायः वृद्धावस्था में चमकती है।

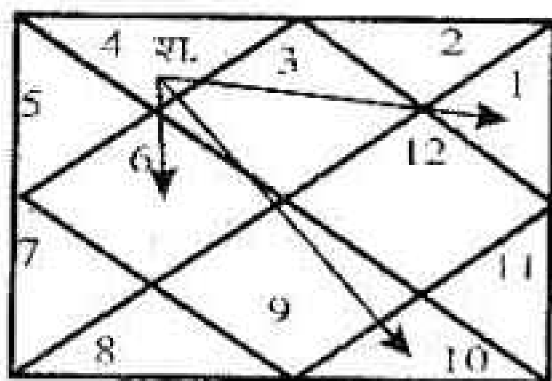
दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक की उन्नति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह, पराक्रम स्थान (सिंह राशि), सप्तम भाव (धनुराशि) एवं दसमभाव (मीनराशि) को देखेंगे। फलतः जातक पराक्रमी होगा। जातक का ससुराल पराक्रमी होगा। जातक धनवान होगा। जातक का किस्मत पिता की मृत्यु के बाद खुलेगी

2. **शनि+चंद्र**–धनेश लग्न में शत्रुक्षेत्री पापग्रह शनि के हाथ होने से आर्थिक संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी।
3. **शनि+मंगल**–जातक झगड़ालू+ईर्ष्यालु व कलहकारी होगा।
4. **शनि+बुध**–'**भद्रयोग**' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **शनि+गुरु**–जातक गम्भीर स्वभाव का होगा। विवाह के बाद उन्नति पथ की ओर बढ़ेगा।
6. **शनि+शुक्र**–जातक भाग्यशाली एवं धनी होगा।
7. **शनि+राहु**–जीवन में संघर्ष की स्थिति रहेगी।
8. **शनि+केतु**–जातक मानसिक रूप से उद्विग्न रहेगा।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में



मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। द्वितीय स्थान में शनि कर्क (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को प्रायः धन व कुटुम्ब सुख में परेशानी आती है। वाणी में कड़वाहट का सम्मिश्रण रहता है। लालकिताब वालों ने ऐसे शनि को '**गुरुशरण**' कहा है। ऐसे व्यक्ति की क्षमता व योग्यता बाह्य दृष्टि से कम प्रतीत होती है पर गुरु की कृपा से जातक आंतरिक रुप से शक्तिशाली, बुद्धिमान और समर्थ होता है। इस कुण्डली में धन की ताकत का पता चंद्रमा की स्थिति में चलेगा।

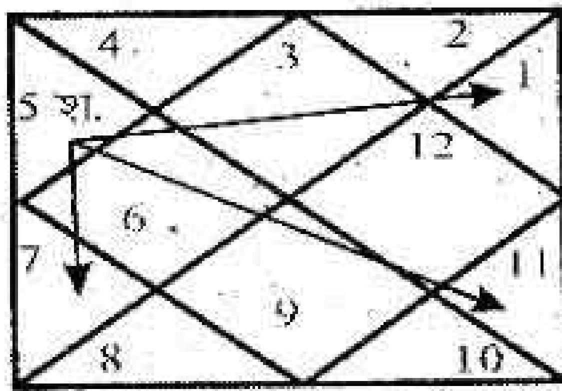
दृष्टि–द्वितीय शनि की दृष्टि सुखस्थान (कन्याराशि), अष्टमस्थान (मकरराशि) एवं लाभस्थान (मेषराशि) पर होगी। जातक भौतिक सुख की प्राप्ति हेतु संघर्ष करेगा। व्यापार-व्यवसाय में भी संघर्ष एवं रोग के प्रकोप हेतु भी जातक को सावधान रहना होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक को मिश्रित फल मिलेंगे। शुभ व अशुभ दोनों प्रकार।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह सुख स्थान (कन्या राशि), अष्टम भाव (मकरराशि) एवं लाभस्थान मेष राशि को देखेंगे। फलत: जातक धनी होगा। लम्बी उम्र का स्वामी एवं भाग्यशाली होगा। जातक की आर्थिक स्थिति पिता की मृत्यु के बाद सुधरेगी।
2. **शनि+चंद्र**–जातक भाग्यशाली एवं महाधनी होगा।
3. **शनि+मंगल**–जातक का पैसा कोर्ट-कचहरी में खर्च होगा।
4. **शनि+बुध**–जातक अपने पुरुषार्थ से धन अर्जित करेगा।
5. **शनि+गुरु**–जातक ससुराल पक्ष से भाग्यशाली होगा।
6. **शनि+शुक्र**–जातक विद्या हुनुर के माध्यम से धन अर्जित करेगा।
7. **शनि+राहु**–धन के संग्रह में बाधा रहेगी।
8. **शनि+केतु**–धन एकत्रित नहीं हो पाएगा।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में



मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां शनि तृतीय स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक के भाई होंगे पर भाईयों से कम निभेगी। जातक परिश्रमी होगा एवं कठोर परिश्रम के द्वारा अपना भाग्योदय स्वयं करेगा। जातक भाग्यशाली होगा परंतु भागीदारों, मित्रों से ज्यादा नहीं निभेगी। जातक मशीनरी कार्यों में रुचि रखेगा, परंतु भाग्योदय 32 से 34 के पहले नहीं होगा। जातक पराक्रमी होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पंचम भाव (तुलाराशि) भाग्यभवन जो उसके स्वयं का घर है (कुंभ राशि) एवं लाभ भाव (मेषराशि) पर होगी। शनि की यह स्थित संतान सुख में बाधक है। स्वतंत्र व्यापार में बाधा आएगी।

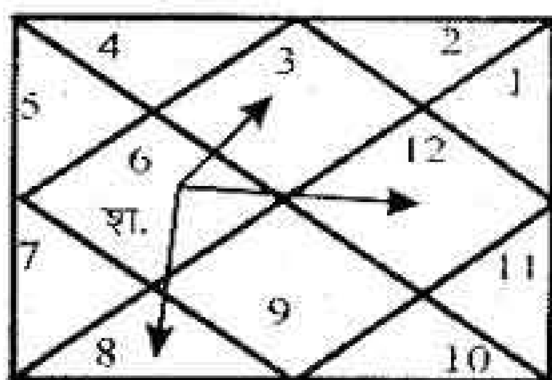
निशानी–जातक छोटे भाई-बहन के सुख में कमी अनुभव करता है। शनि की यह स्थिति छोटे भाई की आयु के लिए घातक है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा संघर्षमय रहेगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। सूर्य यहां स्वगृही होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि) भाग्यभाव (कुंभराशि) एवं व्ययभाव (वृषराशि) पर होगी। फलतः जातक की संतति प्रभावशाली होगी। जातक भाग्यशूर एवं खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक का पराक्रम पिता की मृत्यु के बाद बढ़ेगा।
2. **शनि+चंद्र**–जातक के भाई-बहनों का सुख होगा।
3. **शनि+मंगल**–जातक कुटुम्ब परिवार के साथ रहना पसंद करेगा।
4. **शनि+बुध**–जातक पराक्रमी होगा। भाई-बहनों का सुख होगा।
5. **शनि+गुरु**–भाग्येश व सप्तमेश की युति विवाह के बाद जातक का भाग्योदय कराएगी।
6. **शनि+शुक्र**–पंचमेश, भाग्येश की तृतीय भाव में युति जातक का पराक्रम बढ़ाएगी।
7. **शनि+राहु**–भाईयों से अनबन रहेगी। कोर्ट में विवाद संभव है।
8. **शनि+केतु**–मित्रों में मनमुटाव रहेगा।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में



मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां चतुर्थ स्थान में शनि कन्या (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति अवश्य होती है पर उसमें कुछ न कुछ कमी रहती है। लाल किताब वालों ने इस शनि को '**पानी का सांप**' कहा है। जातक जहरीले स्वभाव का होता है पर जहरीला दिखाई नहीं देता। ऐसे जातक युवावस्था में प्रेम प्रसंगों में घिरते है पर जीवन के उत्तरार्द्ध में धार्मिक होते हैं।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत शनि की दृष्टि छठेभाव (वृश्चिक राशि), राज्यभाव (मीन राशि) एवं लग्नभाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक पर रोग-ऋण व शत्रु हावी रहेंगे। फिर जातक उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ता रहेगा।

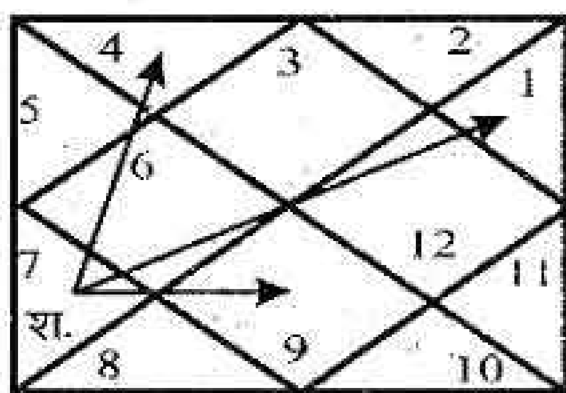
निशानी–वृद्धावस्था में धन-दौलत भरपूर होती है। जातक स्वार्थी होगा पर भाग्यशाली होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलते हैं।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–ऐसे व्यक्ति का जीवन घोर संघर्षों से भरा होगा। यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। यहां केन्द्रवर्ती होकर दोनों ग्रह छठे स्थान (वृश्चिकराशि), दशमस्थान (मीनराशि) एवं लग्नस्थान, मिथुनराशि को देखेंगे। फलत: जातक के अनेक शत्रु होंगे पर जातक उनको नष्ट करने में सक्षम होगा। जातक का शहर की राजनीति में वर्चस्व होगा तथा महत्वकांक्षी जो भी योजनाएं हाथ में लेगा उसमें सफलता मिलेगी।
2. **शनि+चंद्र**–जातक धनी होगा। माता का सुख होगा, परंतु मां बीमार रहेगी।
3. **शनि+मंगल**–मंगल यहां दिक्बली होगा। भूसम्पत्ति को लेकर विवाद रहेगा।
4. **शनि+बुध**–'**भद्रयोग**' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **शनि+गुरु**–विवाह के बाद जातक का भाग्य चमकेगा।
6. **शनि+शुक्र**–जातक की संतान भाग्यशाली होगी।
7. **शनि+राहु**–वाहन दुर्घटना का योग है।
8. **शनि+केतु**–मातृसुख कमजोर रहेगा।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में



मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां पंचम स्थान में शनि तुला राशि में उच्च का होगा। तुला राशि के अंशों में शनि परमोच्च का होता है। शनि की यह स्थिति परम सौभाग्य का सूचक है। लाल किताब वालों इस शनि को '**बुद्धू लड़का**' कहा है जो अपने भोलेपन के कारण परेशानी में पड़ जाता है। ऐसे व्यक्ति ज्यादा प्लानिंग से कार्य नहीं करते, उतावलापन में किए गये कार्य से अवश्य नुकसान होता है।

दृष्टि–पंचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (धनुराशि) लाभभाव (मेषराशि) एवं धनभाव (कर्कराशि) पर होगी। फलत: जातक के विवाह में विलम्ब होगी। त्वरित धन एकत्रित करने में बाधा रहेगी।

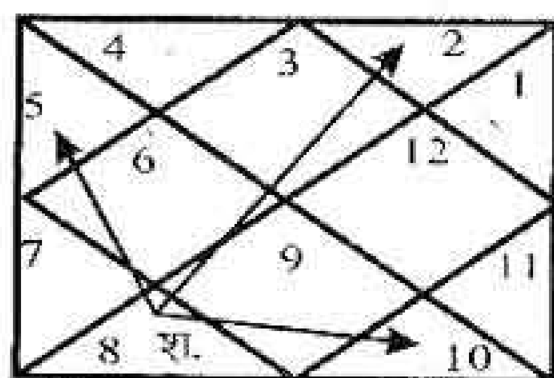
निशानी–जातक के सात कन्याएं होती है या कन्या संतति की बाहुल्यता रहती है। यदि जातक सदाचारी होगा तो पुत्र संतान का सुख मिलेगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। सौभाग्य में वृद्धि होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह तुलाराशि के होंगे। यहां शनि उच्च का होगा। तुलाराशि अंशों में शनि परमोच्च का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह **'नीचभंगराजयोग'** बनाएगें। तथा सप्तमभाव (धनुराशि), एकादशभाव (मेषराशि) एवं धनभाव (कर्कराशि) को देखेंगे। फलत: जातक स्वय महाधनी होगा। पिता के मृत्यु के बाद ऐसा जातक व्यापार व्यवसाय में खूब धन कमाएगा।
2. **शनि+चंद्र**–जातक महाधनी होगा। भाग्यशाली होगा।
3. **शनि+मंगल**–शत्रु परेशान करेगे।
4. **शनि+बुध**–जातक महान् बुद्धिशाली होगा। हुनुरबंद होगा।
5. **शनि+गुरु**–जातक का ससुराल धनाढ्य होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शुक्र स्वगृही, शनि उच्च का होने से 'किम्बहुनायोग' बनेगा। जातक महाभाग्यशाली होगा।
7. **शनि+राहु**–विद्या में रुकावट, कन्या संतति ज्यादा।
8. **शनि+केतु**–स्त्री संतति की बहुल्यता एकाध गर्भपात संभव।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति षष्ट्म स्थान में



मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां छठे स्थान में शनि वृश्चिक (शत्रु)

राशि में है। अष्टमेश का छठे होने से '**विमल योग**' विपरीत राजयोग बनता है। लाल किताब वालों ने इस शनि को '**किस्मत लिखने का मालिक**' कहा है। अर्थात् ऐसा व्यक्ति सर्व कार्य स्वतंत्र होता है। अपना भाग्य खुद बनाता है। जातक को समाज में प्रतिष्ठ, धन-यश व संतति सुख मिलता है। भाग्येश शनि छठे जाने से '**भाग्यभंगयोग**' बना। जिससे भाग्य की हानि होती है पर यह हानि मात्र 20% है। 80% शनि अष्टमेश का फल करेगा। जिससे जातक के शत्रुओं का दमन होगा।

दृष्टि–पष्ठमस्थ शनि की दृष्टि अष्टमभाव अपने स्वयं के घर (मकरराशि) पर होगी। व्ययभाव (वृषराशि) एवं पराक्रमभाव (सिंहराशि) पर होगी। फलतः जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–जातक के पीठ पीछे उसकी निंदा होती रहेगी।

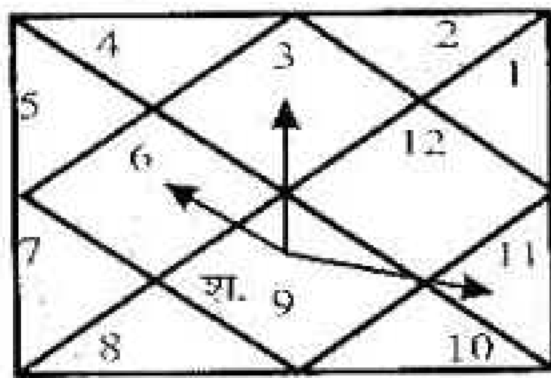
दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में विपरीत राजयोग (विमलयोग) के कारण जातक उन्नति करेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–छठे स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह, अष्टमभाव (मकरराशि) व्ययभाव (वृषराशि) एवं पराक्रमभाव (सिंहराशि) को देखेंगे फलतः ऐसा जातक दीर्घआयु वाला, खर्चीले स्वभाव का एवं पराक्रमी होगा। परंतु भाग्योदय पिता के मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चंद्र**–'**धनहीन योग**' के कारण जातक को आर्थिक विषमता का सामना करना पड़ेगा।
3. **शनि+मंगल**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान होगा।
4. **शनि+बुध**–लग्नभंगयोग के कारण परिश्रम व्यर्थ जाएगा।
5. **शनि+गुरु**–विवाह संबंधी विवाद संभव। जातक का समय पर विवाह नहीं होगा।
6. **शनि+शुक्र**–संतति बाधा, गृहस्थ सुख में कमी।
7. **शनि+राहु**–विपरीत राजयोग के काण जातक धनी होगा।
8. **शनि+केतु**–गुप्त शत्रु या रोग जातक को परेशान करेंगे।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के



दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां सप्तम भावगत शनि धनु (सम) राशि में होगा। जातक को दाम्पत्य-सुख, गृहस्थ सुख, व्यापार-वाणिज्य का सुख, अध्यात्म व भाग्य का सुख पूर्ण होगा। पर सभी सुखों में कुछ न कुछ न्यूनता बनी रहेगी। लाल किताब वालों ने इस शनि को **'विधाता की कलम'** कहा है। ऐसे जातक को अपने कर्मों का फल इसी जन्म में भोगना पड़ता है। ऐसा जातक ऊपर से कुछ और अंदर से कुछ ओर ही प्रकार का होता हैं। फलतः ऐसा जातक रहस्यमय होता है जो कहता है वो करता नहीं, जो करता है वह कहता नहीं।

दृष्टि–सप्तमस्थ शनि की दृष्टि अपने घर भाग्यस्थान (कुंभराशि), लग्नस्थान (मिथुनराशि) एवं चतुर्थभाव (कन्याराशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा पर कोई भी कार्य प्रथम प्रयास (First attempt) में सिद्ध नहीं होगा।

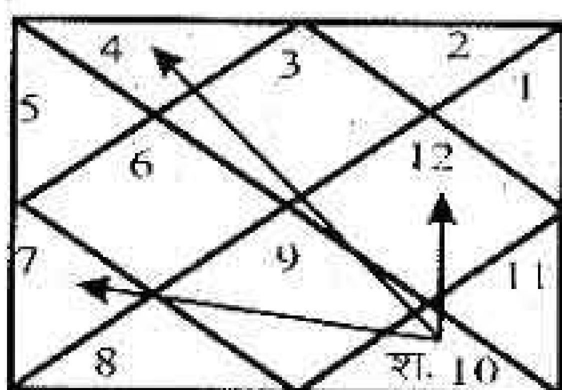
निशानी–जातक का विवाह यदि विलम्ब से हो तो यह उन्नति का संकेत है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होती है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह, भाग्यस्थान (कुंभराशि) लग्नभाव (मिथुनराशि) एवं सुखस्थान (कन्याराशि) को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक परम सौभाग्यशाली प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने वाला सुखी जातक होता है। पर जातक को सही विकास पिता की मृत्यु के बाद होता है।
2. **शनि+चंद्र**–जातक का विवाह के बाद धनी होगा।
3. **शनि+मंगल**–जातक का व्यापार विवाह के बाद चमकेगा।
4. **शनि+बुध**–जातक को परिश्रम का सुंदर फल मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–'हंसयोग' के कारण जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **शनि+शुक्र**–जातक की पत्नी सुंदर व भाग्यशाली होगा।
7. **शनि+राहु**–विवाह सुख में कमी। द्विभार्यायोग बनता है।
8. **शनि+केतु**–जीवनसाथी से बिछोह संभव।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में



मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। अष्टम स्थान में शनि मकरराशि का स्वगृही होता है। यद्यपि शनि की यह स्थिति '**भाग्यभंगयोग**' की सृष्टि करती है तथापि अष्टम स्थानगत शनि दीर्घायु देता है। अष्टमेश का अष्टम में स्वगही होना '**विमलनामक**' विपरीत राजयोग की सृष्टि करता है। जातक भाग्यशाली होता है। रोजगार प्राप्ति में व्यवधान, धन प्राप्ति में व्यवधान, संतान सुख में व्यवधान होते हुए भी अंतिम रूप से सफलता निश्चित रूप से मिलती है। लाल किताब वालो ने इस राशि को '**मनमर्जी का मालिक**' कहा है। ऐसा व्यक्ति स्वेच्छाचारी एवं अभिमानी होता है।

दृष्टि–अष्टमस्थ शनि की दृष्टि राज्यभवन (मीनराशि), धनभाव (कर्कराशि) एवं संतान भवन (तुलाराशि) पर होगी। फलतः धनप्राप्ति, रोजगार प्राप्ति, संतान प्राप्ति में विलम्ब होता है।

निशानी–कोई भी कार्य मे प्रथम प्रयास (First attempt) में सफलता न मिलकर प्रगति धीमे-धीमे होती है।

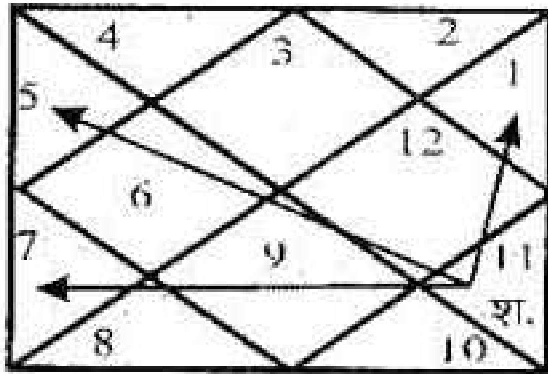
दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में शत्रुओं का नाश होकर, रोग पर विजय प्राप्त होती है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह मकरराशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह राज्यभाव (मीनराशि), धनुभाव (कर्कराशि) एवं पंचमभाव (तुलाराशि) को देखेंगे। शनि यहां स्वगृही होकर सरल नामक, '**विपरीत राजयोग**' बनाएगा। फलतः जातक धनी होगा राजनीति में ऊंचे पद को प्राप्त करने वाला यशस्वी होगा। परंतु पिता की मृत्यु के बाद ही राजनीति में सही विकास होगा।
2. **शनि+चंद्र**–धनहीन योग बनेगा। आर्थिक संघर्ष रहेगा फिर भी विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।

3. **शनि+मंगल**–यहां शनि मंगल से युक्त होकर आयु की हानि करता है। यहां पर शनि स्वगृही, मंगल उच्च का 'किम्बहुनायोग' एवं विपरीत राजयोग बनाता है। फलतः जातक महाधनी होगा। गाड़ी बंगला मोटर का स्वामी होगा।
4. **शनि+बुध**–लग्नभंग योग के कारण परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–गृहस्थ सुख में बाधा। 'नीचभंग राजयोग' के कारण जातक धनी, मानी व अभिमानी पुरुष होगा।
6. **शनि+शुक्र**–संततिहीन योग, विद्या में बाधा संभव।
7. **शनि+राहु**–आयु में रुकावट, दुर्घटना संभव।
8. **शनि+केतु**–शरीर कष्ट एवं शल्य चिकित्सा संभव।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में



मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। नवम स्थान में शनि कुम्भराशि का होकर स्वगृही होगा। यह शनि की **मूलत्रिकोण** राशि है। यह शनि पितृ सौख्य का प्रतीक है। ऐसा जातक अति धनवान एवं वैभवशाली होता है। लालकिताब वाले ने इस शनि को **'आक के दरख्त'** की संज्ञा दी है। ऐसा व्यक्ति एक से अधिक मकान बनाता है। उसका परिवार सुखी व संपन्न होता है। यदि सही पुरुषार्थ करे तो भाग्य कदम-कदम पर सहायता करता है।

दृष्टि–नवमस्थ शनि की दृष्टि एकादश स्थान (मेषराशि), पराक्रम स्थान (सिंहराशि) एवं छठे स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक को गुप्त शत्रु परेशान करेगा, परंतु सभी शत्रु अपने-अपने कर्मों से नष्ट होंगे।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक का सम्पूर्ण भाग्योदय होगा। जातक गंगा स्नान को जायेगा।

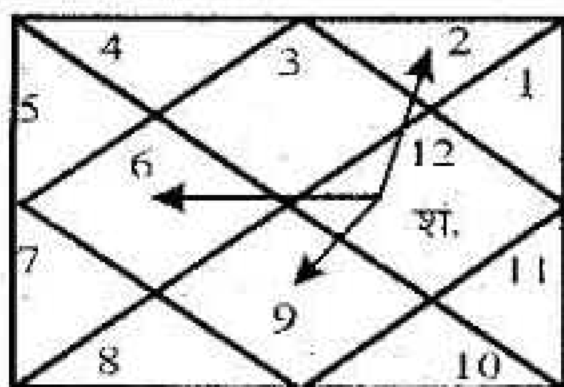
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभस्थान (मेषराशि), पराक्रम स्थान (सिंहराशि) एवं छठेभाव (वृश्चिक

राशि) पर होगी। शनि यहां अपनी मूलत्रिकोण राशि में होगा। फलत: जातक भाग्यशाली होगा। व्यापार में लाभ कमाएगा। जातक महान् पराक्रमी होगा तथा ऋण-रोग व शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा, परंतु सही भाग्योदय पिता को मृत्यु के बाद होगा।

2. **शनि+चंद्र**—जातक महाधनी होगा।
3. **शनि+मंगल**—जातक उद्योगपति होगा पर एक बार उद्योग बंद जरूर होगा।
4. **शनि+बुध**—जातक भाग्य शूर होगा।
5. **शनि+गुरु**—विवाह के उपरांत ही जातक का भाग्य खुलेगा।
6. **शनि+शुक्र**—जातक को श्रेष्ठ पत्नी एवं उत्तम संतति का सुख मिलेगा।
7. **शनि+राहु**—भाग्य में बिगाड़। किस्मत बनती-बनती बिगड़ जाएगी।
8. **शनि+केतु**—भाग्योदय हेतु संघर्ष की स्थिति रहेगी।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में



मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां दशम स्थान में शनि मीन (सम) राशि में है। नवमेश दसम भाव में स्थित होने से ज़ातक को धन, विद्या, यश, वाहन, भवन, व्यापार-वाणिज्य का सुख प्राप्त होगा। लाल किताब वालों ने इस शनि को '**किस्मत जगाने**' वाले की संज्ञा दी है। ऐसा जातक प्रतिभावान होता है। अपने विशिष्ट प्रयत्न से अपनी किस्मत खुद बनाता है। जातक ऐश्वर्यशाली एवं तेजस्वी जीवन जीता है। जातक धर्म, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र एवं रहस्यमय विद्याओं का जानकार होता है।

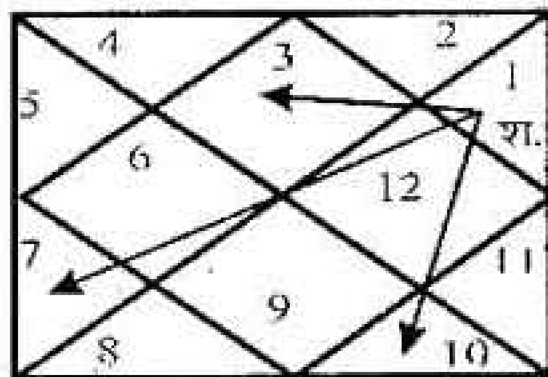
दृष्टि—दशमस्थ शनि की दृष्टि व्ययभाव (वृषराशि), चतुर्थभाव (कन्याराशि) एवं सप्तमभाव (धनुराशि) पर होगी, फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। यात्रा, धार्मिक कार्य में धन खर्च होता रहेगा।

निशानी—ऐसा जातक माता-पिता का भक्त होता है। जातक का स्वभाव सौम्य व शीतल होता है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दसवें स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्ययभाव (वृषराशि), चतुर्थभाव (कन्याराशि) एवं सप्तमभाव (धनुराशि) को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक पूर्ण सुखी होगा। विवाह के बाद किस्मत खुलेगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा परंतु सही भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चंद्र**–जातक का राजनीति में प्रभाव रहेगा।
3. **शनि+मंगल**–जातक उद्योगपति होगा।
4. **शनि+बुध–'कुलदीपकयोग'** के कारण जातक परिवार का नाम रोशन करेगा। जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
5. **शनि+गुरु–'हंसयोग', 'पद्मसिंहासन योग'** के कारण जातक महाधनी होगा। उनके पास अनेक वाहन होंगे।
6. **शनि+शुक्र–'मालव्ययोग'** के कारण जातक के पास अनेक वाहन होंगे। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
7. **शनि+राहु**–राजनीति में धोखा मिलेगा।
8. **शनि+केतु**–राजनीति यंत्र में गुप्त शत्रु आपके लिए सक्रिय रहेंगे।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में



मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। एकादश स्थान में यहां शनि मेष (शत्रु) राशि का होगा। मेष में शनि नीच का होता है तथा 20 अंशों में परमनीच का होता है। ऐसा जातक धनी व उद्योगपति होता है। लालकिताब वालों ने इस शनि को **'खुद का विधाता'** कहा है। ऐसा व्यक्ति अपने हुनर एवं चतुराई से, बिना किसी बाहरी मदद के उन्नतिपथ की ओर आगे बढ़ता है। जातक को लघु उद्योग, व्यवसाय से लाभ होता है। जातक दीर्घजीवी होता है।

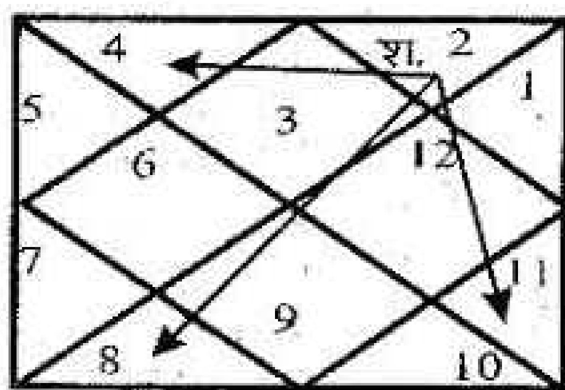
दृष्टि–एकादश स्थान में स्थित शनि को दृष्टि लग्नस्थान (मिथुनराशि), पंचम भाव (तुलाराशि) एवं अपने स्वयं के घर मकरराशि (अष्टमभाव) पर होगी। फलत: ऐसे जातक को परिश्रम अनुरूप फल नहीं मिलता। संतति के भाग्योदय में बाधा, जीवन में उन्नति आसानी से नहीं होगी।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां सूर्य के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा के तुल्य। यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह मेषराशि राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्नभाव (मिथुनराशि) पंचमभाव (तुला राशि) एवं अष्टमभाव (मकरराशि) को देखेंगे। सूर्य यहां उच्च का होगा शनि नीच का 'नीचभंगराजयोग' बनाएगा। फलत: ऐसा जातक विद्यावान होगा। ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा तथा प्रत्येक कार्य में सफल होगा। परंतु सही अर्थों में भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद ही होगा।
2. **शनि+चंद्र**–जातक धनी होगा। व्यापार से लाभ रहेगा।
3. **शनि+मंगल**–यहां मंगल के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक बड़ी भूमि, फैक्ट्ररी, कारखाने का स्वामी होगा।
4. **शनि+बुध**–परिश्रम का लाभ बराबर मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–जातक को दो प्रकार के धंधों से लाभ होगा।
6. **शनि+शुक्र**–जातक विद्यावान् होगा।
7. **शनि+राहु**–व्यापार में नुकसान होगा।
8. **शनि+केतु**–व्यापार के लाभांश में रुकावट महसूस होगी।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में



मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां शनि वृष (मित्र) राशि में है। शनि

की इस स्थिति में '**भाग्यभंग योग**' बनता है परंतु अष्टमेश का व्ययस्थान में जाने से '**सरल नामक विपरीत राजयोग**' भी बनता है। फलस्वरूप जातक भाग्यवान, धनी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है, पर जीवन में इन सब वस्तुओं की प्राप्ति हेतु संघर्ष बहुत करना पड़ेगा। लाल किताब के अनुसार ऐसा व्यक्ति रुपयों का गुलाम नहीं होता। जमा पूंजी को एक मिनट में खर्च करते हुए विचार नहीं करता।

दृष्टि–द्वादशस्थ शनि की दृष्टि धनभाव (कर्कराशि), छठे भाव (वृश्चिक राशि) एवं अपने ही घर कुंभ राशि (भाग्यस्थान) पर होगी।

निशानी–जातक को नींद कम आएगी एवं अंतिम अवस्था (मृत्यु) दुःखदाई होती है। इसके लिए शुक्र की स्थित को देखना भी जरूरी है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में खर्च बढ़ेगा। भाग्योदय भी होगा।

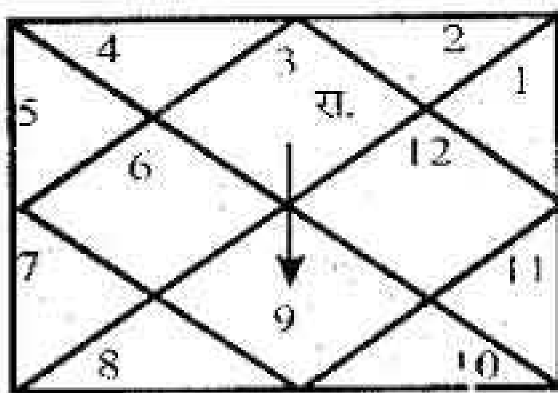
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह धनभाव (कर्कराशि), छठे स्थान (तुलाराशि) एवं भाग्यस्थान (कुंभराशि) को देखेंगे। फलत: जातक भाग्यशाली तो होगा पर पराक्रमभंग होगा। धन एवं इच्छित सफलता को प्राप्त करने हेतु संघर्ष बना रहेगा। जातक का भाग्योदय पिता के मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चंद्र**–बढ़े-चढ़े खर्च से कर्ज की स्थिति बन सकती है।
3. **शनि+मंगल**–जातक गुप्त शत्रुओं के कारण परेशान रहेगा।
4. **शनि+बुध**–परिश्रम-पुरुषार्थ का यथेष्ट लाल नहीं मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–गृहस्थ सुख में बाधा। ससुराल में धोखा संभव।
6. **शनि+शुक्र**–जातक नित नई स्पसी का सेवन (संभोग) करेगा।
7. **शनि+राहु**–यात्रा में कष्ट, गुप्त बीमारी संभव जातक दार्शनिक होगा।
8. **शनि+केतु**–मानसिक चिंता व तनाव रहेगा।

❑❑❑

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में



मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। प्रथम भावगत राहु मिथुन राशि में है जो कि राहु की स्वराशि है। कुछ विद्वान इसे राहु की उच्च राशि भी कहते हैं। ऐसा जातक तीव्र बुद्धि वाला, कोई भी निर्णय सोच-समझकर करने वाला, स्वतंत्र विचारों वाला, धैर्यवान्, स्नेहशील एवं समझौतावादी दृष्टिकोण वाला होता है। ऐसा जातक वैभवशाली जीवन जीता है तथा व्यापार व नौकरी में बराबर उन्नति प्राप्त करता रहता है।

दृष्टि–राहु की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि) पर होने से गृहस्थ सुख में कुछ न कुछ न्यूनता महसूस होगी।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को **'पीढ़ी संदी'** कहा है। ऐस व्यक्ति धनवान होता है तथा खर्चा भी खूब करता है।

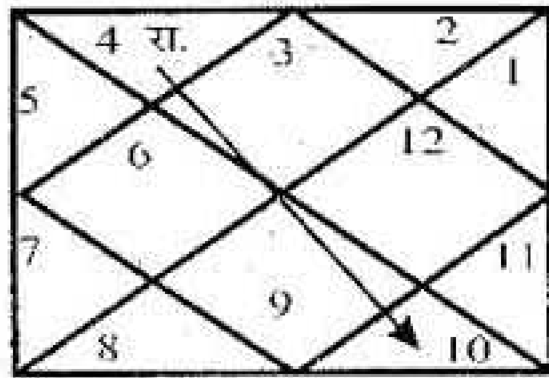
दशा–राहु का दशा अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी। दशा अच्छा फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के संग सूर्य होने से व्यक्ति उदण्ड होता है।
2. **राहु+चंद्र**–जातक हठी व अस्थिर मनोवृत्ति वाला होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के संग मंगल होने से व्यक्ति अभद्र व्यवहार करने वाला उदण्ड होता है।
4. **राहु+बुध**–जातक हठी, जिद्दी किंतु बुद्धिमान होता है।

5. **राहु+गुरु**—यहां दोंनो ग्रह प्रथम स्थान में मिथुन राशि में है। यहां बृहस्पति भी अपनी मित्रराशि एवं अपनी उच्चराशि में है। '**चाण्डालयोग**' के कारण जातक हठी होगा तथा परिवार-कुटुम्ब वालों के प्रति लगाव नहीं रखेगा।
6. **राहु+शुक्र**—जातक के कार्य में अस्थिरता रहेगी।
7. **राहु+शनि**—जीवन में संघर्ष की स्थिति रहेगी।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में



मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अत: हर हालत में शुभफल देता है। यहां द्वितीय स्थान में राहु कर्क (शत्रु) राशि में है। ऐसा जातक धन कमाता है। पर धन की बरकत नहीं होती। पैसे की तंगी बराबर बनी रहती है। ऐसा जातक की वाणी अनियंत्रित होती है। कुटुम्ब में भी प्रेम-स्नेह-संबल की कमी रहती है।

दृष्टि—राहु की दृष्टि आठवें स्थान (मकर राशि) पर होगी। यह राहु दीर्घायु में कमी कराता है।

निशानी—लाल किताब वालो ने राहु को '**राजगुरु के मातहत**' की संज्ञा दी है। जातक प्रभावशाली होता है पर अमीरी-गरीबी की छाया में पलकर बढ़ा होता है।

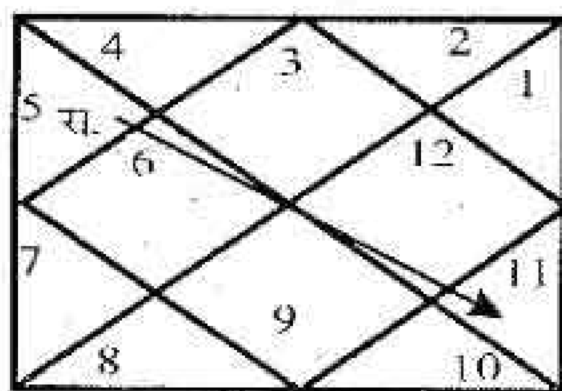
दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा में धन हानि की संभावना, परिवार में विवाद एवं गलत निर्णय के दुष्परिणाम भोगने पड़ते हैं।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—की युति में जातक अहंकारी होता है। वाणी में घमण्ड ज्यादा होता है तथा मित्रों के प्रति उपेक्षा भाव बना रहता है।
2. **राहु+चंद्र**—जातक द्वारा उपार्जित धन खर्च होता चला जाएगा।
3. **राहु+मंगल**—की युति से जातक कलहकारी होगा, वाणी लड़ाकू होगी।
4. **राहु+बुध**—धन के घड़े में छेद के कारण आर्थिक संघर्ष रहेगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में है। यहां बृहस्पति अपनी उच्चराशि एवं अपनी शत्रुराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण धन के प्रति लापरवाह होगा। जहां जरूरत नहीं होगी वहां रुपया खर्च कर देगा।
6. **राहु+शुक्र**—धन की अपव्यय अधिक होगा।

7. **राहु+शनि**–धन संग्रह में बाधा रहेगी।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में



मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अत: हर हालत में शुभफल देता है। यहां तीसरे स्थान में राहु सिंह (शत्रु) राशि में होगा। तीसरे भाव में राहु की स्थिति को शास्त्रकारों ने राजयोग कारक माना है। ऐसा जातक महान्, पराक्रमी, धार्मिक, हठी एवं महत्वकांक्षी होता है। ऐसे व्यक्ति के पास जायदाद अवश्य होती है। जातक शरण में आउ व्यक्ति की भरपूर मदद करता है। उसके हौसले बुलंद होते हैं पर भाईयों-कुटम्बीजनों से अपेक्षित सहयोग नहीं मिलता। भाईयों से मनमुटाव की स्थिति रहती है, पर जातक की व्यक्तिगत उन्नति शानदान होती है।

दृष्टि–तृतीयस्थ राहु की दृष्टि भाग्यभवन (कुंभराशि) पर होगी। फलत: भाग्य में कुछ न कुछ न्यूनता बनी रहेगी।

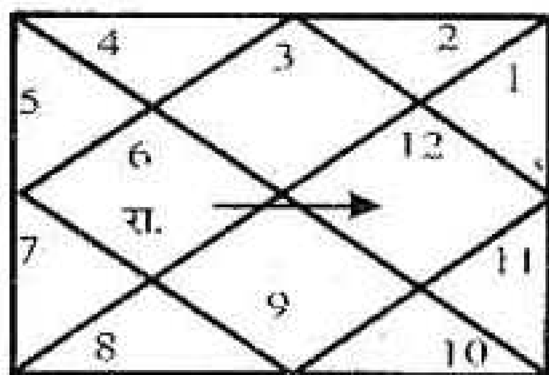
निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को **'अंगरक्षक'** की संज्ञा दी है। ऐसा व्यक्ति दिलेर होता है तथा मुसीबत में घिरे व्यक्तियों की मदद करता है। जातक के सपने कई बार सच होते हैं।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा पर विरोधियों का भी सामना करना पड़ेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–कुटुम्ब सुख में हानि, कलह, विवाद रहेगा।
2. **राहु+चंद्र**–यहां राहु संग चंद्रमा होने से जातक का मन-मस्तिष्क अशांत रहेगा। जातक एकांत प्रिय होगा। भाईयों से अनबन रहेगी।
3. **राहु+मंगल**–परिवार में विग्रह होगा।
4. **राहु+बुध**–मित्रों में विवाद, भाईयों में विग्रह रहेगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां तृतीयस्थ दोनों ग्रह सिंहराशि में है। राहु अपनी शत्रुराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण भाईयों से अनबन एवं भागीदारों में मनमुटाव रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**–परिवार में मनमुटाव रहेगा।
7. **राहु+शनि**–भाईयों से अनबन रहेगी। कोई में विवाद संभव है।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में



मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अत: हर हालत में शुभफल देता है। यहां चतुर्थ स्थान में राहु कन्या (स्व) राशि में है। ऐसे व्यक्ति को मातृसुख में न्यूनता रहती है। भौतिक ऐश्वर्य, सुख-संसाधनों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। मानसिक अशान्ति, अस्थिरता एवं अज्ञात भय, अशुभ की आशंक बनी रहेगी। ऐसे व्यक्ति को पुराने मकान में रहना पड़ता है तथा प्राय: मकान में वास्तुदोष होता है। जातक को समाज में अपयश भी मिलता है।

दृष्टि–चतुर्थस्थ राहु की दृष्टि दशमभाव (मीनराशि) पर होगी। फलत: जातक का राजा (सरकार) से सम्मान होगा।

निशानी–लालकिताब वालों इस राहु को '**धर्मी**' कहा है। ऐसा व्यक्ति धार्मिक व परोपकारी होता है। भाग्यपथ से दौलत अर्जित करता है।

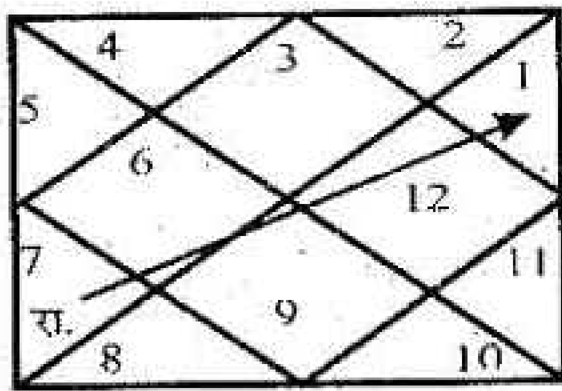
दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में आर्थिक, सामाजिक एवं व्यवसायिक उन्नति होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–माता की मृत्यु अल्प आयु में संभव।
2. **राहु+चंद्र**–माता को कष्ट अथवा छोटी उम्र में माता की मृत्यु संभव है।
3. **राहु+मंगल**–मंगल की युति से शिक्षा अधूरी रहेगी।
4. **राहु+बुध**–माता एवं बहन का सुख कमजोर रहेगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण माता के सुख में कमी रहेगी। सांसारिक सुखों में न्यूनता रहेगी।
6. **राहु+शुक्र**–यहां राहु की युति से शुक्र चतुर्थ व पंचम दोनों भाव के शुभ फल नष्ट करेगा।
7. **राहु+शनि**–वाहन दुर्घटना का योग बनता है।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में

मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अत: हर हालत में शुभफल देता है। यहां पंचम स्थान में राहु, तुला (मित्र) राशि में है। यह इतना बुरा नहीं होता।



यह पंचम भाव के फलों में वृद्धि करता है। परंतु शुक्र की बलवत्ता (स्थिति) पर ध्यान देना जरूरी है। जातक को पुत्र सुख विलम्ब से मिलता है। जातक को व्यर्थ के वाद-विवाद का सामना करना पड़ता है।

दृष्टि–पचमस्थ राहु की दृष्टि एकादश भाव (मेषराशि) पर होगी। फलत: व्यापार-व्यवसाय में प्रारंभिक अवरोधों का सामना करना पड़ेगा।

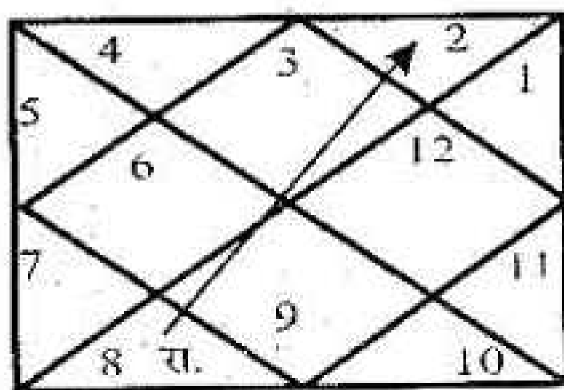
निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को '**शरारती**' कहा है। यह विद्या में बाधा डालता है। गर्भ में संतान को नष्ट करता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक को मिश्रित फल मिलेगे। मनोवांछित कार्य में रुकावट महसूस होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–यहां राहु के साथ सूर्य निराशा उत्पन्न करता है। शिक्षा का अभाव संभव है। अथवा शिक्षा का यथेष्ट लाभ जीवन में नहीं मिलेगा। संतान व कुटुम्ब सुख में बाधा
2. **राहु+चंद्र**–पुत्र संतान प्राप्ति में बाधा संभव।
3. **राहु+मंगल**–यहां मंगल की युति से शिक्षा अधूरी रहेगी।
4. **राहु+बुध**–एक दो संतति की अकाल मृत्यु संभव है। विद्या में बाधा।
5. **राहु+गुरु**–यहां पंचमभाव में दोनों ग्रह तुलाराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण पुत्र संतति विलम्ब में होगी विद्यायोग में अनपेक्षित बाधा संभव।
6. **राहु+शुक्र**–विद्या एवं पुत्र संतति में बाधा।
7. **राहु+शनि**–विद्या में रुकावट, कन्या संतति ज्यादा।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति षष्ट्म स्थान में



मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अत: हर हालत में शुभफल देता है। यहां छठे स्थान में राहु वृश्चिक राशि मे नीच का होगा। शास्त्रकारों ने छठे राहु को राजयोगकारक माना है, क्योंकि दुष्टग्रह उपचय स्थान में शुभफल देते हैं। फलत:

यहां जातक की व्यक्तिगत उन्नति में सहायक है। ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में पूर्णत: सक्षम होता है। ऐसे व्यक्ति को सुख-ऐश्वर्य के सभी साधन सहज में उपलब्ध होते हैं। व्यक्ति हमेशा उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ता रहेगा।

दृष्टि–षष्ट भावगत राहु की दृष्टि व्ययभाव (वृषराशि) पर होगी। फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

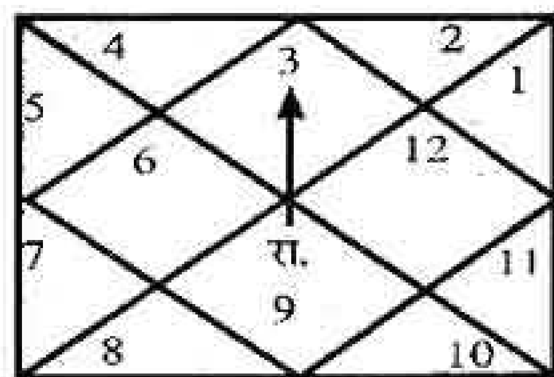
निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को '**फांसी काटने वाला मददगार हाथी**' कहा है। ऐसे व्यक्ति को कोई भी बाधा अधिक समय तक पीड़ित नहीं कर सकती।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जहां देह कष्ट, मानसिक संताप या रोगोनृपत्ति का संभावना बनी रहेगी। वही जातक की उन्नति भी होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–निडर किंतु रूखे स्वभाव का व्यक्ति होगा।
2. **राहु+चंद्र**–यहां राहु मृत्यु तुल्य कष्ट देगा।
3. **राहु+मंगल**–यहां राहु+मंगल की युति जातक को अतिपराक्रमी बनाएगी। जातक पुलिस, फौज, प्रशासन के कार्यों में विशेष रुप से सफल होगा।
4. **राहु+बुध**–शत्रु परास्त होने से बाधा पहुंचाने की चेष्टा करेंगे।
5. **राहु+गुरु**–यहां छठे स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में है। चाण्डालयोग के कारण विलम्ब विवाह अथवा गृहस्थ सुख में निश्चित रूप से बाधा पहुंचेगी।
6. **राहु+शुक्र**–विद्या, पुत्र संतति सुख में बाधा।
7. **राहु+शनि**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में



मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अत: हर हालत में शुभफल देता है। सप्तम स्थान में राहु धनु (शत्रु) राशि में है। राहु की यह अवस्था सप्तम भाव के लिए शुभ नहीं कही गई। जातक के गृहस्थ सुख में कमी रहेगी। संभवत: प्रथम विवाह का सुख नहीं। सम्भवत: दूसरे विवाह से सुख मिलता है अथवा 42 वर्ष की आयु के बाद गृहस्थ सुख जमता है। यहां सप्तमेश बृहस्पति की स्थित का अवलोकन करके निर्णय लेना चाहिए।

दृष्टि–राहु की दृष्टि लग्न स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा।

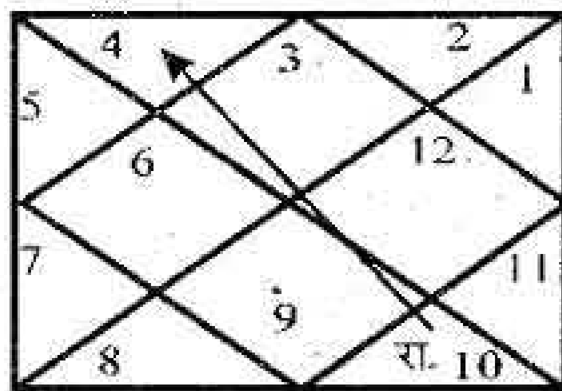
निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को 'दौलत का धुआं निकालने वाला चाण्डाल' कहा है। शीघ्र विवाह होना, जीवन साथी के लिए हानिप्रद रहता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में गृहस्थ सुख में बाधक है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–वैवाहिक सुख में बाधा, विवाद, बिछोद की संभावना।
2. **राहु+चंद्र**–गृहस्थ सुख में व्यवधान, द्विभार्यायोग बनता है।
3. **राहु+मंगल**–पत्नी से विवाद, कलह, बिछोह संभव।
4. **राहु+बुध**–गृहस्थ सुख में बाधा द्विभार्या योग संभव।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह धनुराशि में है। जातक का ससुराल प्रभावशाली व संपन्न होगा। यहां 'चाण्डालयोग' के कारण पति-पत्नी के मध्य अहम् का टकराव होता रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**–गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी।
7. **राहु+शनि**–विवाद सुख में कमी, द्विभार्यायोग बनता है।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में



मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां अष्टम स्थान में राहु मकर (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक में चिंतन की शक्ति गजब की होती है। इनका दैहिक कष्ट व दुर्घटना का भय रहेगा। गुप्त शत्रु भी परेशान करेंगे। लोगों की भलाई में बुराई का फल मिलेगा।

दृष्टि–अष्टम भावगत राहु की दृष्टि धनभाव (कर्कराशि) पर होगी। फलतः धन की हानि एवं परिवारिक कष्ट होंगे।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को **'कड़वा धुआं'** कहा है। ऐसा व्यक्ति अच्छे परिवार में जन्म लेकर भी अपनी करतूतों के कारण बदनाम होता है।

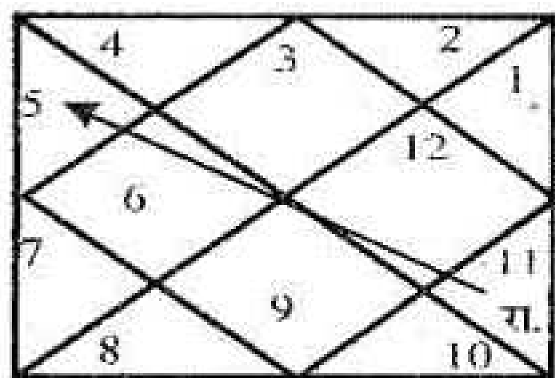
उपाय–इस राहु को नेक करने के लिए व्यक्ति को खोटा सिक्का। 43 शनिवार तक दरिया में बहाना चाहिए। या राहु के जाप कराने चाहिए।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में मानसिक, दैहिक व आर्थिक कष्ट अनुभूति होती है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–जातक को लम्बी बीमारी दुर्घटना संभव है।
2. **राहु+चंद्र**–जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा, मृत्युभय रहेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु मंगल की युति में जनेन्द्रिय में रोग होते हैं।
4. **राहु+बुध**–अचानक दुर्घटना संभव, आयु में बाधा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण विलम्ब विवाह योग अथवा गृहस्थ सुख में निश्चित बाधा के योग बनते हैं। यहां द्विमार्गयोग भी संभव है।
6. **राहु+शुक्र**–गुप्त बीमारी एवं अचानक दुर्घटना संभव।
7. **राहु+शनि**–आयु में रुकावट, दुर्घटना संभव।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में



मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां नवम स्थान में राहु कुंभ (मित्र) राशि में है। यह राहु व्यक्ति को राजातुल्य वैभव देता है। व्यक्ति शौर्य, पराक्रम, बल, बुद्धि, प्रतिष्ठा में किसी से कम नहीं होता। यद्यपि जातक के जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते है तथापि अक्कड़ किसी रहीस से कम नहीं होती।

दृष्टि–नवम भावगत राहु की दृष्टि पराक्रम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक को कुटुम्ब व भाईयों का सुख-सहयोग मिलेगा।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को '**पागलों का सरताज हकीम**' कहा है। ऐसा व्यक्ति स्वप्रयासों से बिगड़े एवं उलझे हुए जटिल कार्यों से सुलझा देते है।

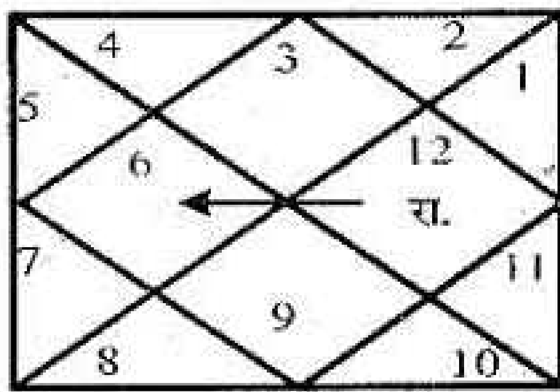
दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–भाग्य में बाधा, भौतिक सुखों की हानि।
2. **राहु+चंद्र**–भाग्य में रुकावट पिता का सुख कमजोर रहेगा।

3. **राहु+मंगल**–जातक धनवान होगा पर भाग्योदय में रुकावटे बहुत आएगी।
4. **राहु+बुध**–राज्य सरकार एवं राजनीति में अप्रिय घटना हो सकती है।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में है। जातक का राजनैतिक वर्चस्व तो रहेगा परंतु 'चाण्डालयोग' के कारण पिता से अनबन रहेगी अथवा राजनीति में पद प्राप्ति के अवसर पर धोखा मिलेगा।
6. **राहु+शुक्र**–भाग्य में लगातार बाधा से जातक परेशान हो जाएगा।
7. **राहु+शनि**–भाग्य में बिगाड़, किस्मत बनती-बनती बिगड़ जाएगी।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में



मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां दशम स्थान में राहु मीन (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा व्यक्ति सामाजिक प्राणी होता है। आध्यात्मिक एवं धार्मिक कार्यों को लेकर विभिन्न संगठनों से जुड़ा रहता है। व्यक्ति समाज के पुनर्निर्माण में कुरीतियों को दूर करने में रुचि रखते हैं। विरोधियों द्वारा उत्पन्न बाधाओं को दूर करने में सक्षम होते हैं। ऐसे जातक कूट राजनीतिज्ञ होते हैं तथा हठी व स्वाभिमानी होते हैं।

दृष्टि–दशमस्थ राहु की दृष्टि चतुर्थभाव (कन्या राशि) पर होगी। ऐसे जातक के पास अनेक वाहन होते हैं। उसे भौतिक सुखों की प्राप्ति सहज में हो जाती है।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को **'सांप की मणि'** कहा है। यह जातक को दौलतमंद बनाता है। व्यक्ति खतरों से खेलता है।

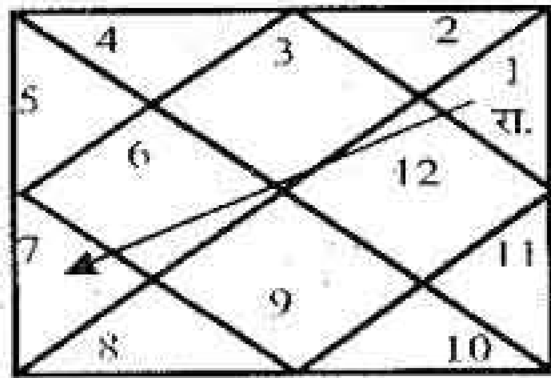
दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक वैभव, उन्नति को प्राप्त करता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–संघर्ष के उपरान्त सफलता निश्चित हैं
2. **राहु+चंद्र**–सरकारी क्षेत्र में धोखा होगा।
3. **राहु+मंगल**–जातक को राज्यपक्ष से हानि होगी।
4. **राहु+बुध**–व्यापार में, शुद्ध मुनाफे में घाटा होगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मीन राशि में है। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। परंतु 'चांडालयोग' के कारण राजा (सरकार) में दण्ड प्राप्ति संभव है। पिता की सम्पत्ति में विवाद रहेगा।

6. **राहु+शुक्र**–राज्यपक्ष में बाधा, सरकारी परेशानी रहेगी।
7. **राहु+शनि**–राजनीति में धोखा मिलेगा।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में



मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां एकादश स्थान में राहु मेष (सम) राशि में है। शास्त्रकारों ने एकादश स्थान में राहु को राजयोगकारक माना है। ऐसे व्यक्ति अपने साहस, पराक्रम एवं संघर्ष करने की लगातार शक्ति के कारण उन्नति के शिखर को स्पर्श कर लेते हैं ऐसे जातक प्रायः लडाकू प्रवृत्ति के होते हैं।

दृष्टि–एकादश भाव में स्थित राहु की दृष्टि पंचम भाव (तुलाराशि) पर होने से यह गर्भपात कराता है। तथा विद्या प्राप्ति के एकाध बार रुकावट का संकेत देता है।

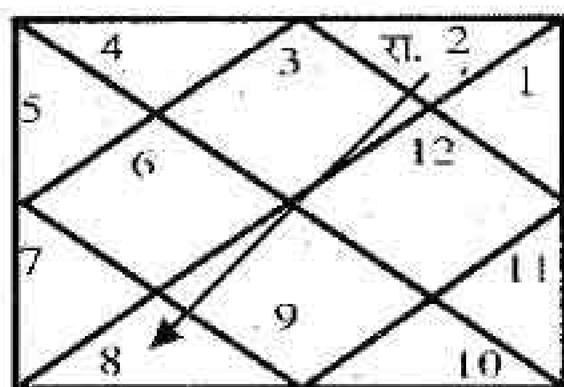
. **निशानी**–लाल किताब वालों ने इस राहु को कष्टकारक माना है जिसके फलस्वरूप आयु में बड़े भाई-बहनों को कष्ट होता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में संघर्षकारी स्थितियों को उत्पन्न करेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–बड़े भाई एवं पिता को सुख में हानि। संतति सुख में हानि संभव।
2. **राहु+चंद्र**–जातक हिसंक स्वभाव का होगा। पागलपन के दौरे भी आ सकते हैं।
3. **राहु+मंगल**–यदि मंगल साथ है तो उद्योग या फैक्ट्री में एक बार रुकावट जरूर आएगी।
4. **राहु+बुध**–व्यापार में हानि, यात्रा में संकट।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मेषराशि में है। जातक पत्नी एवं पिता पक्ष में सुखी होगा परंतु 'चाण्डालयोग' के कारण व्यापार-व्यवसाय में अपेक्षित लाभ नहीं होगा।
6. **राहु+शुक्र**–व्यापार में गुप्त नुकसान होगा।
7. **राहु+शनि**–व्यापार में नुकसान होगा।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में



मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां द्वादश स्थान में राहु वृष (उच्च) राशि में है। ऐसा जातक कठोर परिश्रमी, साहसी व कर्मठ होता है। ऐसे जातक धुमक्कड, रसिक एवं विलासी प्रवृत्ति के होते हैं। ऐसे व्यक्ति कार्य कुछ करते हैं तथा परिणाम कुछ (भिन्न) पाता है। बिना सोच समझ कर (Unplanned) कार्य करने से ये स्वयं कई बार मुसीबत में उलझ जाते हैं।

दृष्टि—द्वादश भाव गत उच्च के राहु की दृष्टि छठे भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः ऐसा जातक अपने रोग-ऋण व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम समर्थ होता है।

निशानी—लाल किताब वालों ने इस राहु को '**शेख चिल्ली**' की संज्ञा दी है। ऐसे जातक को दौलत ज्यादा समय तक साथ नहीं देती।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा में यात्राएं होगी तथा फालतू के खर्चे बढ़ जाएगे।

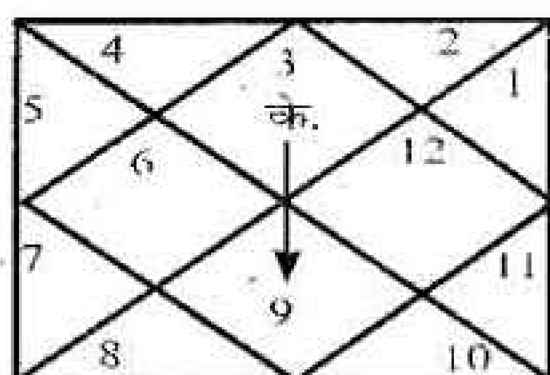
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—ऐसा व्यक्ति जेल जाएगा या राजा से दंडित होगा। शैया सुख की हानि।
2. **राहु+चंद्र**—ऐसा व्यक्ति कर्जदार (ऋणी) होगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल होने से काम-वासना अधिक होगी।
4. **राहु+बुध**—व्यापार में हानि, यात्रा में संकट।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह वृषराशि में है। यहां 'चांडालयोग' के कारण विलम्ब विवाह अथवा गृह सुख में बाधा होने के निश्चित योग बनते हैं। जातक जन्म स्थान छोड़कर परदेश बस जाएगा। ऐसा व्यक्ति आध्यात्मिक व दार्शनिक होगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र होने से व्यक्ति कामी हो जाता तथा नैतिक-अनैतिक तरीके से अनेक स्त्रियों के साथ रमण करता है। यात्रा में धन का अपव्यय होगा।
7. **राहु+शनि**—व्यक्ति दार्शनिक होगा। यात्रा में कष्ट गुप्त बीमारी संभव।

❑❑❑

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति प्रथम भाव में



मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। केतु प्रथम स्थान में मिथुन (नीच) राशि में है। केतु के यहां बैठने से व्यक्ति को आध्यात्मिक शक्ति की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति शक्तिशाली होता है। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा परंतु यदि सप्तमेश बृहस्पति की स्थिति अनुकूल न हो तो **'द्विभार्यायोग'** बनता है।

दृष्टि–केतु की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः गृहस्थ सुख में बाधा, थोड़ी कमी रहेगी।

निशानी–जातक को उच्च स्थान से गिरने का भय रहता है।

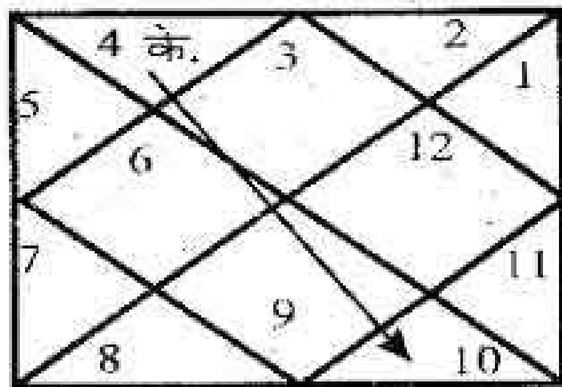
दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा, पर थोड़ा संघर्ष भी रहेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–जातक क्रोधी होगी
2 **केतु+सूर्य**–जातक की पत्नी सुंदर होगी।
3. **केतु+मंगल**–जातक का व्यक्तित्व संघर्षशील होगा।
4. **केतु+बुध**–ऐसा जातक कुतर्की होगा।
5. **केतु+गुरु**–ऐसा जातक धर्मध्वज होगा।

6. **केतु+शुक्र**–जातक का स्वभाव रंगीन एवं अस्थिर रहेगा।
7. **केतु+शनि**–जातक मानसिक रुप से उद्विग्न रहेगा।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय भाव में



मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहा द्वितीय स्थान में केतु कर्क (शत्रु) राशि में है। दूसरे घर में केतु को लालकिताब वालों ने 'अच्छा हुक्मराज' की संज्ञा दी है। ऐसे व्यक्ति की किस्मत में उतार-चढ़ाव तो आता हैं पर अंतत: शुभ फल मिलता है। ऐसे व्यक्ति वाचाल होते है तथा उच्च पद की प्राप्ति इन्हें सरलता से हो जाती है।

दृष्टि–केतु की दृष्टि यहां अष्टम भाव (मकरराशि) पर होगी, फलत: गुप्त रोग या बीमारी का भय रहेगा।

निशानी–धन एकत्रित करने के मामले में बहुत संघर्ष करना पड़ता है।

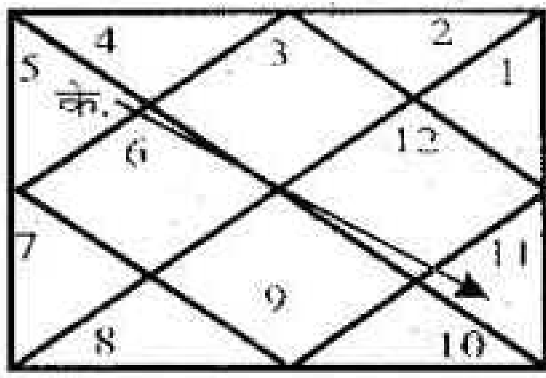
दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा धनसंग्रह हेतु संघर्ष की द्योतक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–कुटुम्ब एवं धन संबंध में हानि।
2. **केतु+सूर्य**–जातक के पास धनसंग्रह कठिनता से होगी।
3. **केतु+मंगल**–कुटुम्ब में विवाद, धनसंग्रह में तकलीफ होगी।
4. **केतु+बुध**–धन के अधिक खर्च से मानसिक चिंता बनी रहेगी।
5. **केतु+गुरु**–जातक धर्मगुरु का धार्मिक वक्ता होगा।
6. **केतु+शुक्र**–धन खर्च के प्रति चिंता रहेगी।
7. **केतु+शनि**–धन एकत्रित नहीं हो पाएगा।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति तृतीय भाव में

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां तृतीय स्थान में केतु सिंह (शत्रु)



राशि में है। तीसरे घर में केतु व्यक्ति के यश की कीर्ति पताका का द्योतक है। ऐसे व्यक्ति को दैविक सहायता तो मिलती रहती है पर जीवन में व्यर्थ की उलझने बहुत आएगी। जातक पराक्रमी होगा एवं राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ केतु की दृष्टि सातवें स्थान (कुंभ राशि) पर होगी।

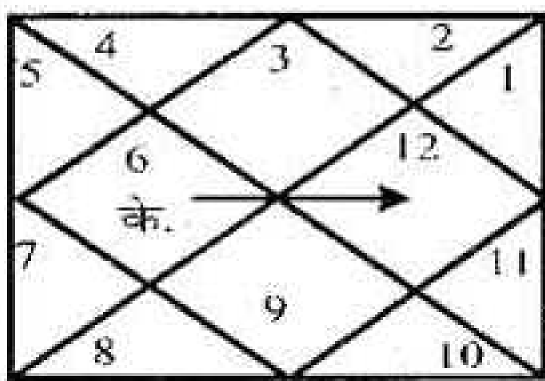
निशानी–जातक के जीवन में निरंतर यात्रा की स्थिति बनी रहती है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–पराक्रम में कमी मित्र पीठ पीछे निंदा करेंगे।
2. **केतु+सूर्य**–मित्र पीठ पीछे निंदा करेंगे।
3. **केतु+मंगल**–कीर्ति उत्तम पर मित्रों से मनमुटाव रहेगा।
4. **केतु+बुध**–ऐसे जातक को मित्र ऐनवक्त पर धोखा देंगे।
5. **केतु+गुरु**–जातक धार्मिक पुस्तकों का लेखक, प्रकाशक या सम्पादक होगा।
6. **केतु+शुक्र**–मित्रों में असंतोष रहेगा।
7. **केतु+शनि**–मित्रों में मनमुटाव रहेगा।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ भाव में



मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां चतुर्थभाव गत केतु कन्या (मूल त्रिकोण) राशि में है। यहां केतु शुभफल देगा। लाल किताब वालों ने चौथे घर में केतु को '**डराने वाला कुत्ता**' जो काटता नहीं। अशुभ की आशंका बनी रहेगी। पर जीवन में अशुभफल मिलेगे नहीं। दौलत व आयु के लिए केतु की यह स्थिति ठीक है।

दृष्टि–चतुर्थ भाव गत केन्द्र की दृष्टि दशमभाव (मीन राशि) पर होगी। जातक को भौतिक सुख, राजनैतिक पद की प्राप्ति होगी।

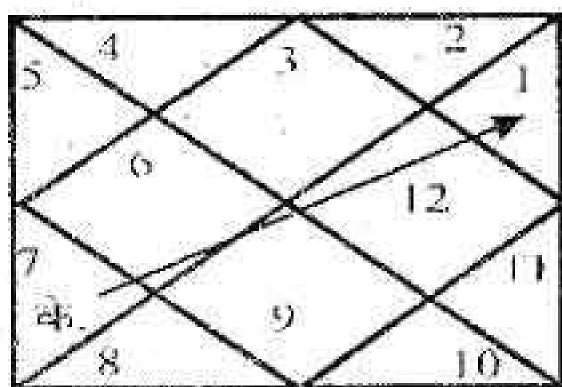
निशानी–जातक की आयु के 36 वर्ष बाद पुत्र सुख की प्राप्ति होगी।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में भौतिक उपलब्धियां मिलेंगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–भौतिक सुखों की प्राप्ति में संघर्ष बना रहेगा।
2. **केतु+सूर्य**–वाहन को लेकर रुपया खर्च होगा। माता की सम्पत्ति में विवाद संभव है।
3. **केतु+मंगल**–माता बीमार रहेगी।
4. **केतु+बुध**–माता की सम्पत्ति हाथ नहीं लगेगी। भौतिक सुखों में बाधा महसूस होगी।
5. **केतु+गुरु**–जातक किसी धार्मिक ट्रस्ट या धर्मस्थान का प्रधान होगा।
6. **केतु+शुक्र**–माता बीमार रहेगी।
7. **केतु+शनि**–मातृ सुख कमजोर रहेगा।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति पंचम भाव में



मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां पंचम स्थान में केतु तुला (सम) राशि में है। लालकिताब वालों ने पांचे घर में केतु को '**रक्षक**' कहा है। यह संतति और विद्या दोनों के तेजस्विता की रक्षा करता है। प्रारम्भिक अवरोधों के बाद संतान और विद्या दोनों की प्राप्ति होती है। जातक को अपने जीवन मे बहुत से उतार-चढ़ाव देखने पड़ते है। कोई भी वस्तु आसानी में नहीं मिलती।

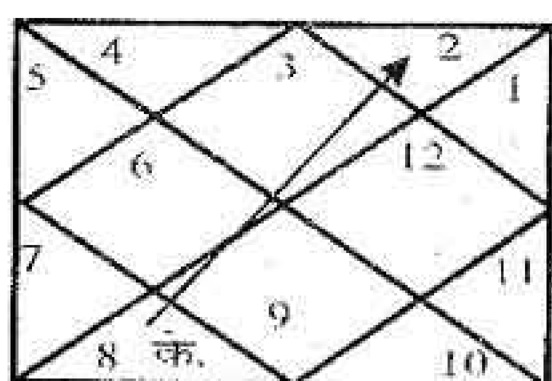
दृष्टि–पंचम भाव में स्थिति केतु की दृष्टि लाभ भाव (मेषराशि) पर होगी। फलत: जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

दशा–केतु की दशा अंतर्दशा थोड़े से संघर्ष के बाद पूर्ण सफलता की सूचक है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–गर्भपात का भय विद्या में रुकावट संभव।
2. **केतु+सूर्य**–एकाध गर्भपात संभव।
3. **केतु+मंगल**–गर्भक्षय एवं रुकावट के साथ विद्या का संकेत मिलता है।
4. **केतु+बुध**–विद्या पूरी होगी पर संघर्ष के साथ।
5. **केतु+गुरु**–धार्मिक क्रिया करने पर जातक तेजस्वी संतति का पिता होगा।
6. **केतु+शुक्र**–विलम्ब संतति या संघर्ष के साथ विद्या प्राप्ति।
7. **केतु+शनि**–स्त्री संतति की बाहुल्यता, एकाध गर्भपात संभव।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति षष्ट्म भाव में



मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां छठे स्थान में केतु वृश्चिक (उच्च) राशि में है। लाल किताब वालों ने छठे घर में बैठे केतु को 'शेर के समान खूंखार कुत्ता' कहा है। ऐसे जातक घुमक्कड व रसिक मिजाज के होते हुए भी अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णत: सक्षम होते है।

दृष्टि–छठे भावगत केतु की दृष्टि व्ययभाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–यदि शुक्र कमजोर हो तो गृहस्थ व संतान सुख में बाधा आएगी।

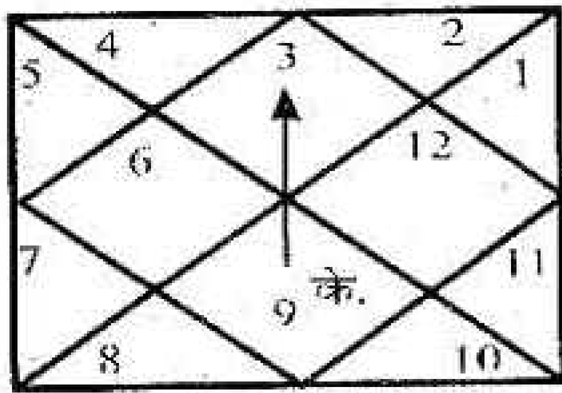
दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मे परेशानी बढ़ेगी पर शत्रु परास्त होंगे।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–शत्रुओं से भय बना रहेगा।
2. **केतु+सूर्य**–जातक को लम्बी बीमारी होगी।
3. **केतु+मंगल**–शत्रुओं का प्रकोप रहेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध शुभ फल देगा। पर गुप्त शत्रुओं से चिंता बनी रहेगी।
5. **केतु+गुरु**–नीति वाक्यों एवं धैर्य के माध्यम से जातक अपने शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होगा।

6. **केतु+शुक्र**–शल्य चिकित्सा योग गुप्त बीमारी रहेगी।
7. **केतु+शनि**–गुप्त शत्रु या रोग जातक को परेशान करेंगे।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति सप्तम भाव में



मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां सप्तम स्थान में केतु धनु अपनी स्वराशि में होने से स्वगृही है। केतु यहां शुभ फल देगा। लाल किताब वालों ने इस केतु को 'गढरिए का पालतू कुत्ता' कहा है। ऐसा जातक प्रत्येक व्यक्ति को सही राह दिखाता है। ऐसा जातक यदि भक्ति (साधना) का मार्ग पकड़ ले तो उसके दुश्मन अपने आप तबाह-बरबाद हो जाते हैं।

दृष्टि–सप्तम भावगत केतु की दृष्टि लग्नस्थान (मिथुनराशि) पर होगी। फलत: ऐसे जातक को परिश्रम का फल मिलेगा।

निशानी–यदि ऐसा व्यक्ति वचन का पक्का हो तो उसे कभी निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

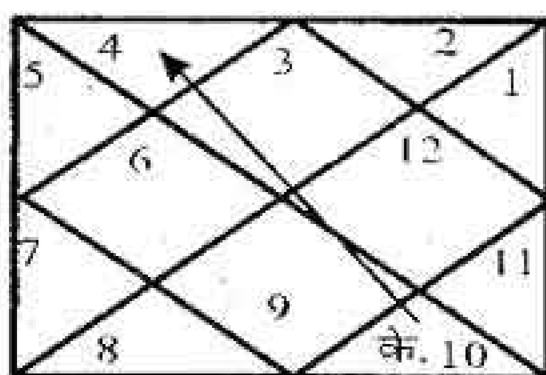
दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–गृहस्थ सुख विवादास्पद रहेगा।
2. **केतु+सूर्य**–जातक की पत्नी सुंदर होगी। पत्नी से वैचारिक मतभेद रहेगा।
3. **केतु+मंगल**–गृहस्थ सुख में कोई-न-कोई न्यूनता रहेगी।
4. **केतु+बुध**–वैवाहिक तनाव संभव है।
5. **केतु+गुरु**–समझौते वाली नीति एवं धैर्य के माध्यम से जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगी।
6. **केतु+शुक्र**–गृहस्थ सुख में कलह रहेगी।
7. **केतु+शनि**–जीवन साथी में बिछोह संभव।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति अष्टम भाव में

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व



केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां अष्टम स्थान में केतु मकर (मित्र) राशि में है। यह केतु की मूल त्रिकोण राशि भी है, जहां वह शुभफल देने के लिए बाध्य है। आठवें घर में बैठे केतु को बच्चों के गम में 'छत पर रोने वाले कुत्ते' की संज्ञा दी है। प्रथम संतान की उत्पत्ति के बाद ऐसे व्यक्ति की आयु को कोई खतरा नहीं है। जातक वाणी का जरूर कर्कश हो सकता है।

दृष्टि–अष्टम भावगत केतु की दृष्टि धनस्थान (कर्कराशि) पर होगी। फलत: ऐसा जातक फिजूलखर्ची होता है।

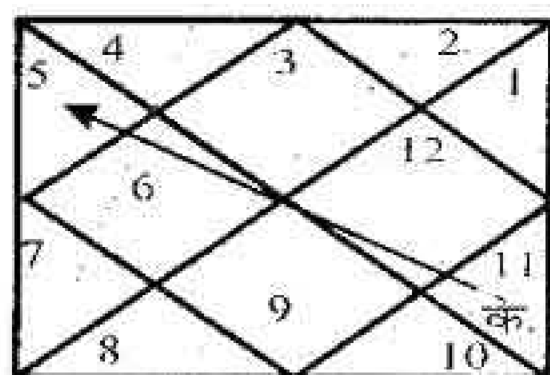
निशानी–यदि छत पर बैठकर कुत्ता रोए, तो आठवें घर में बैठा केतु अशुभ फल देगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में दुश्मनों से सावधान रहे।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–जातक को गुप्त रोग बीमारी संभव है।
2 **केतु+सूर्य**–शल्य चिकित्सा या दुर्घटना योग है।
3. **केतु+मंगल**–शल्य चिकित्सा योग, दीर्घ बीमारी संभव।
4. **केतु+बुध**–शल्य चिकित्सा, पैरों में चोट संभव है।
5. **केतु+गुरु**–यदि धैर्य एवं समझौते वादी नीति से काम न लिया तो गृहस्थ जीवन कष्टमय हो सकता है।
6. **केतु+शुक्र**–शल्य चिकित्सा योग बनता है।
7. **केतु+शनि**–शरीर कष्ट एवं शल्य चिकित्सा संभव।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति नवम भाव में



मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एव उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां नवम स्थान में केतु कुंभ (मित्र) राशि में है। लालकिताब वालों ने इस केतु को 'बाप

का अज्ञाकारी बेटा' कहा है। ऐसा जातक सौभाग्यशाली एवं पराक्रमी होता है। ऐसे जातक का संतान उन्नतिशील एवं बलवान होगी। संतान के जन्म के बाद जातक का भाग्योदय होगा।

दृष्टि–नवम् भावगत केतु की दृष्टि पराक्रम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलत: भाईयों व कुटम्बी जनों से कम निभेगी।

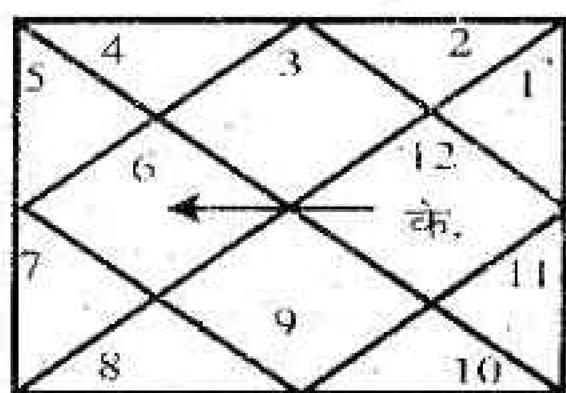
निशानी–यदि व्यक्ति दुरगां कुत्ता पाले या 'Tiger-eye' टाईगर आई नामक रत्न पहने तो भाग्योदय शीघ्र होगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में भाग्योदय होगा। पराक्रम बढ़ेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**– वैराग्य की भावना बनी रहेगी। आध्यात्मिक जीवन की ओर झुकाव रहेगा।
2. **केतु+सूर्य**–भाग्योदय हेतु संघर्ष की स्थिति रहेगी।
3. **केतु+मंगल**–संघर्ष रहेगा पर सफलता मिलेगी।
4. **केतु+बुध**–संघर्ष परेशानी एवं भाग्योदय संबंधी चिंता बनी रहेगी।
5. **केतु+गुरु**–विवाह के भाग्योदय होगा तथा जातक सिद्धांतवादी व्यक्ति होगा।
6. **केतु+शुक्र**–जातक के जीवन में संघर्ष की स्थिति रहेगी।
7. **केतु+शनि**–भाग्योदय हेतु संघर्ष की स्थित रहेगी।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति दशम भाव में



मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां दशम स्थान में केतु मीन राशि अपनी स्वराशि में है। जातक को नौकरी-व्यापार में लाभ होगा। जातक अपने रोजी-रोजगार में उन्नति प्राप्त करेगा। जातक के निजी जमीन-जायदाद होगी।

दृष्टि–दशमस्थ केतु की दृष्टि चतुर्थभाव (कन्याराशि) पर होगी। फलत: जातक को वाहन का सुख मिलेगा।

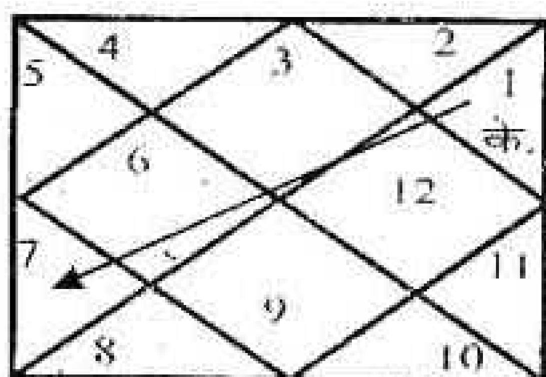
निशानी–जातक पराई स्त्री के चक्कर में रहेगा तो तबाह-बरवाद हो जाएगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा। रोजी-रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–थोड़ा संघर्ष रहेगा पर सफलता मिलेगी।
2. **केतु+सूर्य**–सरकारी कार्य में बाधा आएगी।
3. **केतु+मंगल**–जातक के राज्यपक्ष से भय रहेगा।
4. **केतु+बुध**– राज्य-सरकार या राजनीति में कार्यरत लोगों के माध्यम से चिंताग्रस्त रहेगे।
5. **केतु+गुरु**–जातक राजा के तुल्य ऐश्वर्यशाली, न्यायप्रिय एवं कीर्तिवान् होगा।
6. **केतु+शुक्र**–सरकार पक्ष से गुप्त संघर्ष की स्थिति रहेगी।
7. **केतु+शनि**–राजनीति में गुप्त शत्रु आपके लिए सक्रिय रहेंगे।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति एकादश भाव में



मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां एकादश स्थान में केतु मेष (मित्र) राशि में है। यह केतु व्यापार-व्यवसाय में कीर्ति देगा। लाल किताब वालों ने इस केतु को 'गीदड स्वभाव' का कहा है। जातक लड़ाकू होते हुए भी ड़रपोक होगा। ऐसा जातक राज्य (सरकार) पक्ष के प्रतिष्ठित लोगों के सम्पर्क में रहकर उच्चपद को प्राप्त करता है।

दृष्टि–एकादश भाव में स्थित केतु की दृष्टि पंचम स्थान (तुला राशि) पर होगी। अतः एकाध गर्भपात कराएगा।

निशानी–व्यक्ति स्वयं अपनी जमीन-जायदाद खुद बनाएगा।

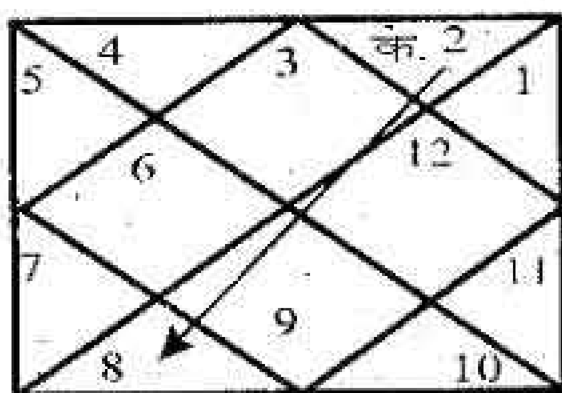
दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा उन्नतिदायक साबित होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–कुटुम्ब सुख में हानि महसूस करेंगे।
2. **केतु+सूर्य**–जातक मानसिक रुप से उद्विग्न रहेगा।
3. **केतु+मंगल**–परिवार में विग्रह-विवाद, शत्रुओं से सामना करना पड़ेगा।

4. **केतु+बुध**—व्यापार-व्यवसाय में तरक्की की चिंता बनी रहेगी।
5. **केतु+गुरु**—ऐसा जातक यशस्वी उद्योगपति होगा।
6. **केतु+शुक्र**—व्यापार-व्यवसाय, लाभ में रुकावट रहेगी।
7. **केतु+शनि**—व्यापार के लाभंश में रुकावट महसूस होगी।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति द्वादश भाव में



मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां द्वादश स्थान में केतु वृष (नीच) राशि का है। लालकिताब वालों ने इस केतु को शुभफल देने वाला कहा है। ऐसे जातक का जीवन ऐशो-आराम से व्यतीत होगा। ऐसा जातक जीवन में निरंतर उन्नति व लाभ को प्राप्त करता रहेगा। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णत: सक्षम (समर्थ) होगा।

दृष्टि—द्वादश भावगत केतु की दृष्टि छठे स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक दीर्घ आयु को प्राप्त करेगा।

निशानी—ऐसे व्यक्ति को किसी संतानहीन व्यक्ति से भूमि, जमीन-जायदाद नहीं खरीदनी चाहिए अन्यथा उसके दिन बुरे शुरु हो जाएंगे।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा में व्यर्थ की यात्रा एवं खर्च बढ़ जाएगें।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—कोर्ट-कचहरी से कारावास का भय रहेगा।
2. **केतु+सूर्य**—जातक को यात्रा के दौरान संकट का सामना करना पड़ेगा।
3. **केतु+मंगल**—यात्रा में धनहानि, परेशानी संभव है।
4. **केतु+बुध**—कारोबार के प्रति, धन के प्रति चिंता रहेगी।
5. **केतु+गुरु**—जातक धार्मिक कार्य, परोपकार, तीर्थयात्रा में, शुभ कार्य मे रुपया खर्च करेगा।
6. **केतु+शुक्र**—यात्रा में कष्ट नेत्र-पीड़ा संभव। शल्य चिकित्सा होगी।
7. **केतु+शनि**—मानसिक चिंता व तनाव रहेगा।

❑❑❑

प्रबुद्ध पाठकों के लिए अनमोल सुझाव फलादेश करते समय कृपया ध्यान रखें

1. फलादेश करते समय कृपया जल्दबाजी न करें।
2. जन्म कुण्डली का अध्ययन एकान्त में करे। गम्भीरता पूर्वक करे। आलतू-फालतू लोगों को पास न बैठावें। जहां तक हो सके दैवज्ञ विद्वान् के पास अकेला पृच्छक (जिज्ञासु) ही होना चाहिए।
3. दैवज्ञ को फलादेश करने के पूर्व सरस्वती अथवा अपने इष्ट देव का स्मरण करना चाहिए।
4. फलादेश प्रारम्भ करने के पूर्व जिज्ञासु सज्जन से फल-पुष्प दक्षिणा भेंट इत्यादि स्वीकार करके, उसे प्रभुचरणों में समर्पित करके ही आगे प्रवृत होना चाहिए।
5. यह शास्त्रवचन है कि जो दैवज्ञ ज्योतिषी के समीप और ईश्वर के दरबार में खाली हाथ जाता है, वह खाली हाथ ही वापस लौटता है।
6. आगन्तुक पृच्छक से हमेशा प्रश्न लिखित में लिखकर ले और प्रत्युत्तर हमेशा मय हस्ताक्षर, तारीख और समय के साथ लिखित में लिखकर देने का साहस रखें, तभी आत्मविश्वास एवं साधना दोनों बढ़ेगी।
7. घटना घटित होने के बाद उसकी सफलता एवं असफलता के कारणों की पुष्टि ज्योतिषीय सिद्धान्तों के आधार पर निरन्तर करते रहना चाहिए। फलित सत्य होने पर ज्यादा फूले नहीं क्योंकि यह सत्यखोजी ऋषियों की कृपा से हुआ है तथा फलित सत्य होने पर निराश या हताश नहीं होना चाहिए क्योंकि गलती हमेशा व्यक्तिगत ही होता है। **'मनुष्य मात्र भूल का पात्र'** गलती हमसे है, ऋषियों की वाणी में नहीं, ऐस विश्वास रखना चाहिए।
8. जन्मपत्रिका को लग्न के अनुसार देखना सीखे।

शास्त्र कहते हैं–

9. **फलानि ग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिण।**
को वक्तां तारतम्यस्य तमेकं वेधसं विना॥

ग्रहों की स्थिति पर से जानकार दैवज्ञ शुभ-अशुभ फलो की सूचना करते हैं, परन्तु (फलों के) कम अथवा अधिक प्रमाण तो एक मात्र जगत्सृष्टा ब्रह्मा के सिवाय कौन कह सकेगा?

10. **पापत्वे सति नीचत्वे ऊच्चत्वे वापि किं फलम्।**
ते योगाः किं करिष्यन्ति स्वदशानामनागमे।

ग्रहों की अशुभत्व, नीचत्व अथवा उच्चत्व इनका योग होने पर भी यदि उनकी दशा नहीं आती हो तो उनके फल कहां से प्राप्त होंगे? और क्यों मिलना चाहिये? दशाओं में ग्रहों के शुभ-अशुभ फल प्राप्त होते हैं। इस जगह '**दशा**' शब्द से '**महादशा**' और '**अन्तर्दशा**' इन दोनों का बोध होता है। दशा में विशेष्ज्ञ फल मिलता है, परन्तु अन्य समय में थोड़ा बहुत फल मिलना ही चाहिए।

11. **मित्रशत्रुसमायोगे फलं मिश्रं शुभं विदुः।**
केन्द्रत्रिकोणेष्युच्चत्वे मित्रग्रहसमन्विते॥

मित्र और शत्रु ग्रहों का योग हो तो मिश्रफल जानना। केन्द्र त्रिकोण अथवा उच्च, स्थानों में मित्र ग्रहों से युक्त ग्रह हों तो शुभफल जानना चाहिए।

12. मित्रराशिगत वापि मन्त्रिणा यदि वीक्षिते।
मित्रयुक्ते बलवपि राजतुल्यो भवेन्नरः॥

मित्र ग्रहों के स्थान में स्थित, मित्रग्रह से युक्त और बलवान ऐसा ग्रह यदि गुरु से दृष्ट हो तो मनुष्य उस समय राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।

13. कोई ग्रह यदि राहु के साथ बैठा है। जब ऐसे ग्रह की दशा हो तो उस दशा में अरिष्ट होता है।

14. जब लग्नेश अष्टम स्थान में हो तो उसकी दशा में बहुत दुःख होता है।

15. जब ग्रह '**दिग्बल**' से युक्त हो तो उसकी दशा में बड़ी प्रतिष्ठा उसी दिशा में मिलती है, जिसका वह स्वामी हो।

16. जब पाप ग्रह की महादशा में, शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो आरंभ से कष्ट होता है और अंत में भय होता है।

17. जब शुभ ग्रह की महादशा हो, तो पाप ग्रह की अन्तर्दशा हो तो आरंभ में सुख होता है और अंत में भय होता है।

18. जब क्रूर ग्रह की महादशा हो, उसमें क्रूर ग्रह की अन्तर्दशा, यदि वे दोनों आपस में शत्रु हों तो मृत्यु होती है, परन्तु जब वे आपस में मित्र हों तो जीवन में संदेह होता है।

19. जब दो ग्रह एक दूसरे से छठे अथवा आठवें स्थान में स्थित हों तो उनके दशांतर में बड़ा भय होता है।

20. जब मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो मनुष्य की मृत्यु संभव है।

21. जब पाप ग्रह क्रूर राशि में स्थित छठे अथवा आठवें स्थान में हों, शुक्र अथवा सूर्य की उस पर दृष्टि हों तो अपनी दशा में मृत्यु करता है।

22. जब लग्नेश की दशा में, लग्नेश के शत्रु की अन्तर्दशा हो तो अकस्मात् मृत्यु हो जाती है। ऐसा सत्याचार्य कहते हैं।

23. जिस ग्रह की महादशा हो उससे 6, 8, 12 स्थानों में स्थित ग्रह की अन्तर्दशा शुभ नहीं होती है। शेष स्थानों में स्थित शुभ ग्रह की महादशा तथा पापग्रह की अन्तर्दशा कष्ट देने वाली होती है।

24. जब कर्म, लग्न, लाभ, पराक्रम, सुख तथा त्रिकोण स्थित शुभ ग्रह हो और वह स्वगृही हो अथवा उच्च का हो, अथवा मित्र घर का हो, अथवा मित्र नवांश का हों तो उस ग्रह की दशा शुभ होती हैं। परन्तु जो ग्रह 8-12, 6-7-2 स्थानों में अथवा अष्टमेश में हो अथवा शत्रु के घर का हों पाप ग्रह हों, अथवा नीच का हो अथवा अस्तंगत हो उसकी दशा शुभ नहीं होती है।

25. जब मित्र ग्रह की महादशा में, मित्र ग्रह की अन्तर्दशा हो, अथवा शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो वह शुभ होती है। परन्तु जब शत्रु ग्रह की महादशा में शत्रु ग्रह की अन्तर्दशा हों, अथवा पाप ग्रह की महादशा में, पाप ग्रह की अन्तर्दशा हो तो शुभ नहीं होती है। यदि शुभ तथा पाप ग्रह अथवा शत्रु तथा मित्र ग्रहों की दशा और अन्तर्दशा मिश्रित हो तो मिश्रित फल होता है।

26. उक्त दशाओं के साथ-साथ गोचर में चलायमान ग्रहों का शुभाशुभ प्रभाव जन्मकुण्डली पर घटित करके देखना चाहिए तथा बाद में अन्तिम निर्णय पर पहुंचना चाहिए।

❑❑❑

अनिष्ट निवारण के विविध उपाय

1. अनिष्ट बुध की शांति की सर्वोत्तम उपाय बुध मंत्र के अनुष्ठान सहित नित्य विष्णु सहस्त्र नाम का पाठ है।
2. पुरुष सुक्त के द्वारा भगवान विष्णु को षोडशोपचार पूजा भी कर ली जाए, तो बुधकृत समस्त अरिष्ट निश्चित रूप से शांत होते हैं। संतान कष्ट, गर्भदोष, वाणी एवं मानसिक कष्ट दूर हो जाते हैं तथा सुख शांति की वृद्धि होती है।
3. नित्य शालिग्राम पूजन करके तुलसी पत्र का सेवन करें तथा मंत्र जाप कर लें। चमत्कारिक लाभ होगा।
4. व्यापारिक अड़चनों एवं संतान कष्ट मे गोपालसहस्त्रनाम एवं कृष्ण पूजा भी अमोघ है।
5. कलह, शत्रुता, हानि, बाधाओं आदि से त्रस्त, मानसिक रूप से बहुत आकुल व्यक्ति यदि अधिक न कर सकें तो श्रीमद्भागवत गजेन्द्र मोक्ष या रामरक्षा स्त्रोत के पाठ से ही पर्याप्त लाभ उठा सकते हैं।
6. शत्रु बाधा एवं अभिचार कर्मों के शमन के लिए प्रत्यांगिरा जप तथा हवन अमोघ है।
7. शारीरिक व्याधियों के लिए महाधन्वतरी मंत्र अथवा मृत्युंजय प्रयोग प्रशस्त है।
8. शिक्षा में बाधा एवं वाणी दोष के लिए वैदिक मार्ग प्रेम ऋग्वेदीय सारस्वत मंत्र एवं तंत्र प्रेमी नील सरस्वती मंत्र एवं स्त्रोत का अनुष्ठान करें, कल्याण होगा।
9. बुद्धिस्थान को मजबूत करने हेतु, धन प्राप्तिहेतु पन्नायुक्त '**बुधयंत्र**' धारण करें।
10. बुधवार को इलायची एवं तुलसी पत्र का भक्षण करें तथा एक हरी इलायची जल में प्रवाहित करें।
11. सवा रत्ती स्वर्ण का दान करें (बुधवार के दिन)
12. ग्यारह एकादशी एवं 11 बुधवार को व्रत रखें।
13. ग्यारह बुधवार तक मुट्ठीभर मूंग भिखारियों को दान करें।

14. ब्राह्मणों को प्रति बुधवार दुग्ध का दान करें।
15. बुध अथवा पाण्डुरंग स्त्रोत का पठन करें।
16. निगणपतिजी के दर्शन करें।
17. बुध की होरा में निर्जल रहें।
18. धनु या मीन लग्न में बुध छठे, आठवें या बारहवें हो तो बुध के अशुभ प्रभाव से बचने के लिये, विवाह समय में दो बराबर वजन के पन्ने एवं मूंग के दाने ले। विवाह समय में संकल्पपूर्वक एक हिस्सा बहते पानी में छोड़ दे तथा दूसरा हिस्सा अपने पास रखें। जब तक वह हिस्सा जातक के पास रहेगा। उसका बुध के अशुभ प्रभाव से बचाव होता रहेगा तथा उसका वैवाहिक जीवन सुखी रहेगी।
19. बुधवार का व्रत 5 या 11 या 43 बार करना।
20. दुर्गा पाठ करना, कन्याओं का (दान-दक्षिण देकर) आर्शीवाद लेना या दुर्गा तीर्थों की यात्रा करना।
21. मूंग साबूत, हरी चीजें दान देना या जल प्रवाह करना।
22. रेड़ियों, घड़ियां, टेलिविजन, गाने बजाने के यंत्र ठीक रखना।
23. तांबे के पैसे में सुराख करके चलते पानी में बहाना।
24. पन्ना धारण करना, पन्ने के अभाव में कली (धातु) धारण करें।
25. बकरी, तोते की सेवा करना।
26. हरा रंग निषेध (तुलसी, मणी प्लांट) 96 घण्टानाक छेदन।
27. लड़की-बहन-बुआ, साली की सेवा करना और आर्शीवाद लेना।
28. तड़ागी या बेल्ट बांधना।
29. कौड़ियों को जला कर चलते पानी में बहाना।
30. हीजड़ों को हरी चूड़ियां, हरे रंग के कपड़े आदि देना।
31. भभूती-ताबीज, साधुओं की तस्वीर, धार्मिक ग्रंथ बंद करके न रखना।
32. बुध उच्च हो तो बुध की चीजों का दान न देना ।
33. बुध नीच हो तो बुध की चीजों का दान न लेना। उपरोक्त उपाय 5 या 11 या 43 दिन या सप्ताह या माह लगातार करने चाहिए।
34. बुध पीड़ा की विशेष शान्ति हेतु चावल, शहद, सफेद सरसों, गोबर, गोरोचन एवं नेवारी मल्वल मिलाकर 7 बुधवार तक स्नान करें।
35. बुध पीड़ा की विशेष शान्ति हेतु हरड़े, गोमय, अक्षत, गोरोचन, स्वर्ण आंवला और मधु मिलाकर 7 बुधवार तक स्नान करें।

36. यदि संतान अवरोधक ग्रह बुध है तो समझिये कि बिल्ली को मारने के कारण या मछलियों तथा अन्य प्राणियों के अण्डों को नष्ट करने के कारण, कम उम्र के बालक-बालिकाओं (झडौलियों) के शाप से, भगवान् विष्णु के अनदार के कारण संतान नहीं हो रही है। ऐसे में जातक को बुध के वेदोक्त मंत्र के चार हजार जप करने चाहिये। बुध संबंध वस्तुओं का दान करते हुए, बुधवार का नियमित व्रत रखना चाहिए।

37. हरिवंश पुराण के अनुसार ऐसे जातक का महाविष्णु या अतिविष्णु यज्ञ कर कास्यपात्र दुध में देना चाहिये।

38. बुध का अशुभत्व नष्ट करने के लिए छेद किया हुआ ताम्बे का पैसा या प्लेट बहते पानी में डाल दे अथवा कौड़ियों को जलाकर उसकी राख को दरिया में बहा दें।

39. जब बुध या केतु लग्न या सुखस्थान को छोड़कर कहीं भी बैठे हो तो अशुभ होते हैं। ऐसे जातक को विवाह के 34 वर्षों तक आर्थिक संघर्ष के मध्य में से गुजरना पड़ता है, विवाह देरी से होता है। बचाव के लिए जातक नाक मे छेद करावे तथा फिटकारी से दांत साफ करे, छोटी कन्याओं को पीले हलवे का भोजन करावे, मंदिर में केसर चढ़ावे।

40. यदि बुध तीसरे स्थान में बैठकर अशुभ फल दे रहा है, पराक्रम में कमी, मान भंग की आशा हो, तो मंगल की रात्रि को साबित मूंग की दाल लाकर भिगो दें। बुध की प्रातः उसे पक्षियों को चुगा दें। 43 दिन तक नियमित प्रयोग करने से व्यक्ति का प्रभुत्व-पराक्रम बढ़ता है या साबूत मूंग का दान भी जातक कर सकता है।

41. बुध तीसरे हो तथा उसके शत्रु ग्रह केतु या शुक्र 6, 7वें स्थान में हो तो पिता की सम्पत्ति खतरे में पड़ जाती है, मासी व मौसे का स्वास्थ्य चिंता का विषय हो जाता है। ऐसी स्थिति में जातक नित्य फिटकरी से दांत साफ करे, पक्षी को चुग्गा दे तथा भेड़ का दान करे। जब अनिष्टकारी बुध सप्तम स्थान में हो तो उसकी निशानी यह होगी कि अपनी बहिन तथा बाप की बहिन को कष्ट होगा। ऐसे समय में साबूत मूंग का दान करना चाहिए।

❑❑❑

बुधवार व्रत कथा

बुध मनुष्य की विद्या, वाक्पटुता व बुद्धि को प्रभावित करता है। बुध को ग्रहों का राजकुमार कहा जाता है। बुध बुद्धि व स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने वाला है। बुध ग्रह की शांति व सुख-समृद्धि के लिए बुधवार का पूजन विशेष लाभकारी है। मनोकामनाओं की पूर्ति व शांति हेतु स्त्री-पुरुषों को बुधवार का व्रत रखना चाहिए।

बुध का तांत्रिक मंत्र—ॐ बुं बुधाय नमः।

विधि विधान—बुधवार का उपवास विशाखा नक्षत्र वाले बुधवार से आरंभ करना चाहिए। इस व्रत में सफेद वस्तुओं का ही प्रयोग करना चाहिए। यह व्रत सात, सत्रह अथवा सत्ताइस बुधवारों को करना चाहिए। दिन में एक ही समय भोजन करना चाहिए। सर्वप्रथम बुधवार के दिन नित्यकर्मों से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर, स्वच्छ स्थान पर पूजन की सामग्री रखें तथा बुध के तांत्रिक मंत्र का जाप इक्कीस बार करें। तत्पश्चात कथा पढ़ें। कथा के मध्य में न तो उठें, ना ही बीच में बोलें। कथा सुनकर आरती करके प्रसाद ग्रहण करना चाहिए।

व्रत कथा—एक बार एक व्यक्ति जिसकी पत्नी अपने मायके गई हुई थी, वह अपनी पत्नी को विदा करवाने के लिए अपनी ससुराल गया। कुछ दिन वहां रहने के पश्चात उसने सास-ससुर से जाने के लिए आज्ञा मांगी। किंतु सास-ससुर ने कहा आज बुधवार का दिन है। आज के दिन गमन नहीं करते। उसने किसी की बात नहीं सुनी और अपनी पत्नी को विदा करवाकर अपने नगर के लिए चल पड़ा मार्ग में उसकी पत्नी को प्यास लगी। वह व्यक्ति गाड़ी से उतरकर पात्र लेकर जल की खोज में चल पड़ा। कुछ देर पश्चात वह वापस आया तो उसने देखा कि उसके जैसी शक्ल-सूरत, वेशभूषा वाला एक व्यक्ति उसकी पत्नी के पास बैठा है। यह देखक उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और क्रोध भी आया। वह क्रोध में बोला ''तू कौन है और मेरी पत्नी के निकट क्यों बैठा है?'' दूसरे व्यक्ति ने कहा—''यह मेरी पत्नी है। मैं अभी अपनी ससुराल से इसे विदा कराकर ला रहा हूं।'' दोनों में परस्पर झगड़ा होने लगा। तभी उधर से राज्य के सैनिक जा रहे थे, उन्होंने सारा हाल सुनकर स्त्री से पूछा—''तुम्हारा

पति इन दोनों में से कौन है?'' उसकी पत्नी चुप थी क्योंकि दोनों व्यक्ति बिलकुल एक जैसे थे और उसमें से असली को पहचान पाना मुश्किल था। असली व्यक्ति ने ईश्वर से प्रार्थना की–''हे प्रभु! यह कैसी माया है कि पराया व्यक्ति मेरी पत्नी को अपना बना रहा है।'' तभी आकाशवाणी हुई कि हे मूर्ख, बुधवार के दिन तूने गमन किया, तूने किसी की बात नहीं मानी, अतः बुध देव की माया से तुझे इस कष्ट का सामना करना पड़ा है।

उसने भगवान् बुध देव से क्षमा याचना की। मनुष्य के रूप में आए भगवान बुध देव अं तर्ध्यान हो गए। वह व्यक्ति खुशी-खुशी अपनी पत्नी को लेकर अपने घर आया। इसके पश्चात् पति-पत्नी दोनों नियमपूर्वक बुधवार का उपवास करने लगे। इस प्रकार जो कोई भी बुधवार का उपवास रखता है तथा श्रद्धापूर्वक व्रत कथा को सुनता है उसे बुधवार के दिन गमन करने का दोष नहीं लगता है तथा उसे सर्वप्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है और उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती है।

बुधदेव की आरती

जय श्री बुध देवा,
स्वामी जय श्री बुध देवा।
छोटे बड़े सभी नर-नारी,
करें तेरी सेवा।। स्वामी जय०।।
सुख करता दुःख हरता,
जय जय आनन्द दाता।
जो प्रेम भाव से पूजे,
वह सब कुछ है पाता ।।स्वामी जय०।।
सिंह आपका वाहन है,
है ज्योति सबसे न्यारी।
शरणागत प्रतिपालक,
हो भक्तन के हितकारी ।।स्वामी जय०।।
तुम हो दीनदयाल दयानिधि,
भय बंधन हारी।
वेद पुराण बखानत,
तुम हो भय पातक हारी ।।स्वामी जय०।।

सद गृहस्थ हृदय में,
बुधराजा तेरा ध्यान करें।
जग के सब नर-नारी,
व्रत पूजा पाठ करें।।स्वामी जय०।।
विश्व चराचर पालक,
कृपासिन्धु शुभ करता।
सफल मनोरथ पूर्ण करता,
भव बन्धन हरता।।स्वामी जय०।।
श्री बुधदेव की आरती,
जो प्रेम सहि गावे।
सब संकट मिट जाएं,
अतुलित वैभव पावे।।स्वामी जय०।।

बुध के वैदिक, पौराणिक व तांत्रिक मंत्र



ध्यानम्–

सौम्योदङ्मुख पीतवर्ण मगधश्चात्रेय गोत्रोद्भवो।
बाणेशनिदिशः सुहृच्छनिभृगुः शत्रु सदा शीतगुः॥
कन्या युग्मपतिदर्शाष्ट चतुरः षड़नेत्रकः शोभनो।
विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्॥

बुध की उत्पत्ति अत्रि गोत्र में मानी जाती है। बुध चेतना, इच्छा, सदाचार, मानव जीवन में तरक्की और चेतना शक्ति की मुख्य रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐश्वर्य, प्रेम, उदारता, आकांक्षा, आत्मविश्वास आदि के ये संतुलनकर्ता हैं। ये पुरातत्ववेत्ता, आविष्कर्ता, राजा, मंत्री आदि का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। हृदय, रक्त का संचालन, आंख, कान, हड्डी आदि पर भी बुध अपना अधिक-से-अधिक प्रभाव डालते हैं।

आह्वान्–

बुधोबुद्धिप्रदाता च सौम्यदृष्टिर्महायश:
यजमान-हितार्थाय बुधमावाहयाम्यहम्॥1॥
अहो चन्द्र सुत: श्रीमान् मागधायसमुद्भव:।
अत्रिगोत्र: चतुर्बाहु: खड्गखेटक धारक:॥2॥
गदावरदसिंहस्य सुवर्णाभश्समाविश।
कृष्णवर्दि सपत्रे च इदं विष्णु प्रपूजयेत्॥3॥
ॐ इदं विष्णुविचक्रमेवेधानिदधेपदम।
समूढमस्यपा ठं सुरे स्वाहा ॥15/15॥
इशाने . बुध स्थापयामि–

वैदिक मंत्र

विनियोग–ॐ उद्बुध्यस्वेति मंत्रस्य परमेष्ठीऋषि: बृहती छन्द: बुधो देवता। त्वमिष्ठापूर्तसम् इति बीजं बुधप्रीतये जपे विनियोग:। 'ॐ परमेष्ठीऋषये नम: शिरसि' 1 'ॐ बृहतीछन्दसे नम: मुखे 2'

न्यास–'ॐ बुधायै नम: हृदये' 'ॐ त्वमिष्टापूर्तसम्' इति बीजाया नम: गुह्ये 4 'ॐ बुधप्रतीये जपे विनियोगाय नम: सर्वाङ्गे' 5 इति ऋष्यादिन्यास:। 'ॐ उद्बुद्धयस्वाग्नेप्रतिजागृहि' अङ्गुष्ठाभ्यां नम: 1 'ॐ त्वमिष्ठापूर्तसम्' तर्जनीभ्यां नम: 2 'ॐ सृजेयामयज्च' मध्यमाभ्यां नम: 3 'ॐ अस्मिन्त्सध स्थे ऽअध्युत्तरस्मिन्' अनामिकाभ्यां नम: 4 ॐ विश्वेदेवा' कनिष्ठिाभ्यां नम: 5 'ॐ यजमानश्चसीदत-करतलकरपृष्ठाभ्यां नम: इति करन्यास:।

हृदयादिन्यास–ॐ त्वमिष्टा पूर्तसम् इति शिरसे स्वाहा 2 'ॐ सृजेथामयज्च' इति शिखायै वषट् 3 'ॐ अस्तिन्त्वसधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्' इति कवचाय हुम् 4 'ॐ विश्वेदेवा' नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ यजमानश्च सीदत इति अस्राय फट् 6 इति हृदयादिन्यास:।

'ॐ उदबुध्यस्व' इति शिरसि। 'ॐ अग्नेप्रति' इति ललाटे 2 'ॐ जागृहित्वम्'। इति मुखे 3 'ॐ इष्टापूर्तेसम् इति हृदये 4 'ॐ सजेथामयज्च' इति कय्याम् 6 'ॐ अध्युत्तरस्मिन्' इत्यूर्वो: 7 'ॐ विश्वेदेवा' नाभौ 5 'ॐ अस्मिन्त्सधस्थ' इति जानुनो: 8 'ॐ यजमानश्च' ति पादयो: 9 'ॐ सिदत' इति सर्वाङ्गे 10 एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्–'ॐ पीताम्बर: पीतवायु: किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारी।

चर्मासिधृक् सोमसुत: सदा मे सिंहाधिरूढो वरदो 'बुधयच' 1 इति ध्यात्वाजयं कुर्यात्

जपयोग वैदिक मंत्र–ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वामिष्टापूर्ते स ठ. सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वदेवा यजमानश्च सीदता:

यह वैदिक मंत्र है। यद्यपि यह उच्चारण की दृष्टि से कठिन होने के कारण सर्व–साध्य नहीं है, व्यावहारिक दृष्टि से सरल, उच्चारण में सहज और सर्वसाध्य मंत्र निम्न हैं।

तंत्रोक्त बुध मंत्र–ब्रां ब्रीं ब्रौं स: बुधाय नम:।

पुराणोक्त बुध मंत्र–

ह्रीं प्रियंगु कलिकाश्यामं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्य गुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

यदि दैनिक पूजा में स्नानोपरांत कोई व्यक्ति इस मंत्र की प्रतिदिन 5-7 माला जपता रहे तो कुछ समय उपरांत वह किसी स्थिति में सुखद परिवर्तन का अनुभव करेगा। यह पौराणिक और अत्यंत सरल मंत्र है। इसके अतिरिक्त वैदिक और तांत्रिक मंत्र भी प्राप्त होते हैं, जो इस प्रकार है–

इन तीनों मंत्रों में से किसी एक मंत्र का नौ हजार जप अवश्य करना चाहिए। जप के प्रभाव से ग्रह पीड़ा में परिवर्तन होना स्वाभाविक है, जपकर्त्ता 108 दाने की माला से ही जाप करें।

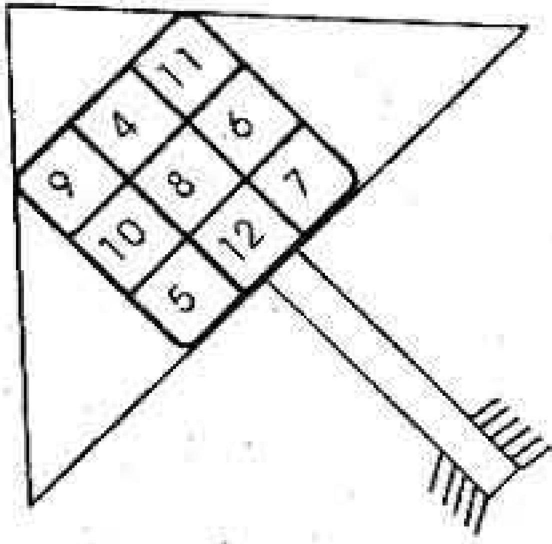
बुध गायत्री मंत्र–

ॐ सौम्य रूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्य: प्रचोदयात्।

इस बुध गायत्री मंत्र का जप उनके लिए अत्यधिक आवश्यक है, जिन पर बुध की कठोर दृष्टि है। यदि वे इस मंत्र का जाप नियमित रूप से एवं पवित्रता से करें तो उसके लिए अत्यंत ही लाभकारी होगा। कम-से-कम एक माला प्रतिदिन जपनी चाहिए।

बुध यंत्र–बुध यंत्र को काष्ठ पीठिका पर आच्छादित श्वेत या हरित वस्त्र खण्ड पर स्थापित करें। गंगाजल अथवा शुद्ध जल छिड़क कर इसे स्नान कराएं। तत्पश्चात चंदन, पुष्प, अक्षत, धूप-दीप आदि से पूजन करके किसी मीठी वस्तु का नैवेद्य अर्पित करें। यह समस्त प्रक्रिया पूर्व की ओर मुख करके की जानी चाहिए।

यंत्र की पूजा कर चुकने के पश्चात् यथा-सामर्थ्य 1, 5 या 7 माला बुध मंत्र जपना चाहिए। उपवास भी आवश्यक होता है। इस प्रकार 7, 11 या 12 बुधवारों तक लगातार बुध-यंत्र की नियमित रूप से श्रद्धापूर्वक उपासना करने की अवश्य ही लाभ होता है।



9	4	11
10	8	6
5	12	7

उपरोक्त बताई गई रीति के अनुसार ही यंत्र पूजन कर ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए।

बुधमंत्र-जपसंख्या 400, रत्न-पन्ना, समिधा-अपामार्ग, दान-मूंग, नीलवस्त्र, कास्य, कस्तूरी, घी, पंचरत्न, हाथी, दासी।

बुध कवच

विनियोग–अस्य श्रीबुधकवच स्तोत्रमंत्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः बुधो देवता-बुध प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

बुधस्त पुस्तकधरः कुंकुमस्य समद्युतिः।
पीताम्बरधरः पातु पीतमाल्यानुलेपन॥
कटिं च पातु मे सौम्यः शिरोदेशं बुधस्तथा।
नेत्र ज्ञानमयः पातु श्रुति पातु निशाप्रियः॥
घ्राणं गंधप्रियः पातु जिह्वां विद्याप्रदो मम।
कण्ठं पातु विधोः पुत्रीं भुजौ पुस्तक भूषणः॥
वक्षः पातु वराङ्गश्च हृदयं रोहिणीसुतः।
नाभि पातु सुराराध्यो मध्यं पातु खगेश्वरः॥
जानुनी रोहिणेयश्च पातु जङ्घेऽखिलप्रदः।
पादौ मे बोधनः पातुःपातु सौम्योऽखिलं वपुः॥
एतद्धि कवचं दिव्य सर्वपाप प्रणाशनम्।
सर्वरोग प्रशमनं सर्वदुख निवारणम्॥
आयुरारोग्यशुभदं पुत्रपौत्र प्रवर्धनम्।
यः पठेच्छृणुयाद् वाऽपि सर्वत्र विजयी भवेत्॥

उक्त बुध कवच ब्रह्मवैवर्त पुराण में वर्णित है। कवच का पाठ करनेवाला प्राणी यदि नियमित रूप से एकाग्र होकर पूजन करे तो उस पर बुध ग्रह की अवश्य ही कृपा बनी रहेगी तथा दीर्घ आयु, निरोगी, वंश वृद्धि होने के साथ ही दुखों का सर्वनाश होना स्वाभाविक है।

बुधपंचविंशतिनाम स्तोत्र

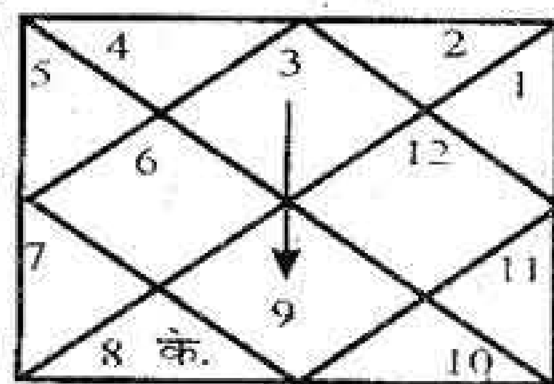
विनियोग–अस्य श्रीबुधपंचविंशतिनाम स्त्रेत्रस्य प्रजापति कृषिः त्रिष्टप्छन्दः बुधो देवता, बुध प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठों बुद्धिदाता धनप्रदः।
प्रियंगुकलिकाश्यामः कञ्जनेत्रो मनोहरः॥
ग्रहोपमो रोहिणयो नक्षत्रेशो दयाकरः।
विरुद्धकार्यहन्ता च सौम्यो बुद्धिविवर्धन॥
चंद्रात्मजोविष्णुरूप ज्ञानी ज्ञो ज्ञानिनायकः।
ग्रहपीडाहरो दार पुत्र धान्य पशुप्रदः।
लोकप्रियः सौम्यमूर्तिगुणदो गुणिवत्सलः।
पंचविंशतिनामानि बुधस्यैतानि यः पठेत्॥
स्मृत्व बुधं सदा तस्य पीडा सर्वा विनश्यति।
तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोगतम्॥

❑❑❑

रत्न चिकित्सा

मिथुनलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन



1. **माणिक्य**–मिथुनलग्न की कुण्डली में सूर्य तृतीय भाव की स्वामी होता है। अतः इस कुण्डली के जातक को यह रत्न भी धारण करना लाभदायक नहीं होगा।
2. **मोती**–मिथुनलग्न में चंद्र धन भाव का स्वामी है। चंद्र की महादशा में इस लग्न का जातक मोती पहनना चाहे तो पहन सकता है। परन्तु यदि इसके बिना काम चल सके तो अच्छा होगा। क्योंकि चंद्र मारकेश भी है परंतु कुण्डली में यदि चंद्र द्वितीय होकर एकादश, दशम या नवम भाव में स्थित हो या द्वितीय ही में स्वराशि में हो तो चंद्र की महादशा में मोती धारण करने से लाभ होगा।
3. **मूंगा**–मिथुनलग्न इसमें मंगल षष्ठम और एकादश या षष्टम में ही स्थित हो तो मंगल की महादशा में मूंगा धारण किया जा सकता है। मिथुन लग्न के जातक यदि मूंगे से दूर रहें तो अच्छा ही है। क्योंकि लग्नेश बुध और मंगल परस्पर मित्र नहीं है।
4. **पन्ना**–मिथुनलग्न के लिए बुध लग्न और चतुर्थ का स्वामी है। इस लग्न के जातक को पन्ना सदा रक्षा-कवच के रूप में धारण करना चाहिए। इसके धारण से धन शिक्षा, यश, मान–प्रतिष्ठा आदि में वृद्धि होती है। ध्यान रखें, पन्ना आपका जीवनरत्न है।
5. **पुखराज**–मिथुनलग्न के बृहस्पति और दशम भावों का स्वामी होने के कारण केन्द्राधिपति दोष से दूषित है। तब भी यदि बृहस्पति लग्न द्वितीय, एकादश, या किसी त्रिकोण में स्थित हो तो बृहस्पति की महादशा में पीला पुखराज

धारण करने से संतान, सुख-समृद्धि में वृद्धि तथा धन की प्राप्ति होती है। यह मारकेश भी है। आर्थिक या सांसारिक सुख देकर वह मारक भी बन सकता है।

6. **हीरा**–मिथुनलग्न के लिए शुक्र द्वादश और पंचम का स्वामी होता है। पंचम त्रिकोण में उसकी मूल त्रिकोण राशि पड़ती है। अतः इस लग्न के लिए शुक्र शुभ माना गया है। इसके अतिरिक्त शुक्र और लग्नेश बुध में परस्पर मित्रता है। इस कारण से शुक्र की महादशा में हीरा धारण करने से उन्नति, संतान-सुख, मान, यश, प्रतिष्ठा हो तो और भी शुभ फलकारी बन जाएगा।
7. **नीलम**–मिथुनलग्न का शनि अष्टम् और नवम् का स्वामी होता है। नवम् त्रिकोण का स्वामी होने से इस लग्न के लिए शुभ ही माना गया हैं। यदि शनि की महादशा में यह रत्न धारण किया जाये तो लाभदायक होगा। यदि नीलम को पन्ने के साथ धारण किया जाये तो अति उत्तम होगा।

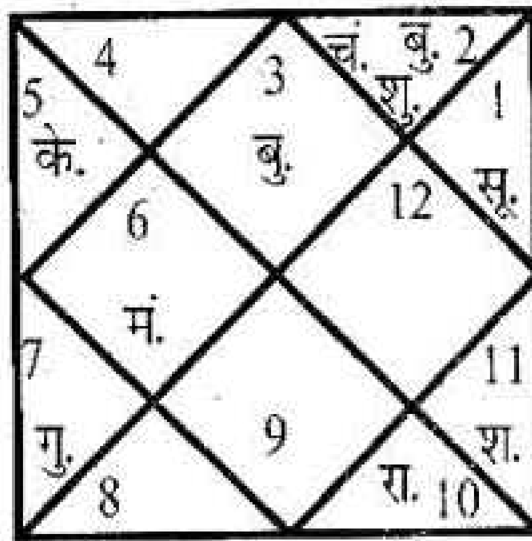
विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**–हीरा सवा पांच रत्ती, पन्ना सवा पांच रत्ती।
2. **भाग्योदय हेतु**–पन्ना सवा पांच रत्ती, नीलम सवा चार रत्ती।
3. **आरोग्य हेतु**–केवल पन्ना सवा छः रत्ती।
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**–पन्ना, हीरा दोनों सवा चार-चार रत्ती।

❑❑❑

दृष्टांत कुण्डलियां

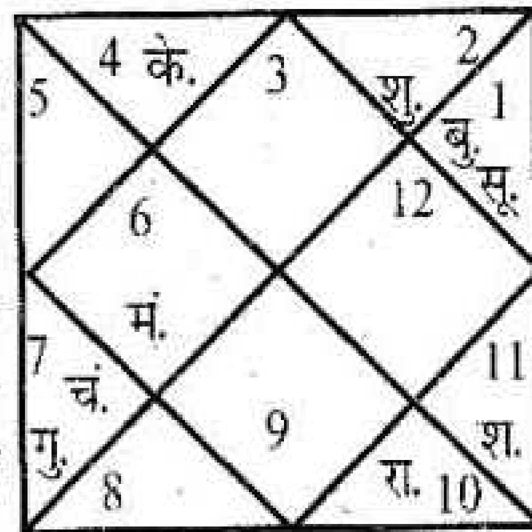
संत दलाईलामा





विश्व राजनीति में शान्ति दूत के रूप में विख्यात दलाईलामा तिब्बत के महान धर्म गुरु हैं। चीनी सरकार से पीड़ित श्री दलाईलामा भारत में विशेष सम्माननीय संत के रूप में पूजे जाते हैं। व्यय भाव में तीन ग्रहों होने के कारण ये सदैव भ्रमणशील रहे। लग्न मे बुध **'भद्र योग'** बना रहा है। एक मात्र राजयोग के कारण वे संत होने के साथ-साथ राजपुरुष भी हैं।

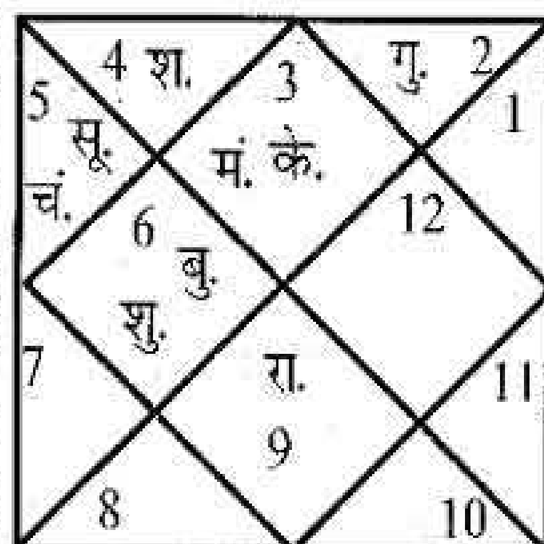
डा. नारायणदत्त श्रीमाली



जन्म स्थान-ढ़ीढस (जोधपुर), जन्म समय-10.20, जन्म तिथि- 20.4.1935। इस कुण्डली में **'बुधादित्य योग'**, **'गजकेसरी योग'** होने से जातक ने बुद्धि वैचित्र्य एवं प्रकाशन से करोड़ों रुपये कमाये। अत्यंत साधारण परिवार में जन्मे ये भारत के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने दुनिया को बताया कि ज्योतिषशास्त्र के माध्यम से भी करोड़ों

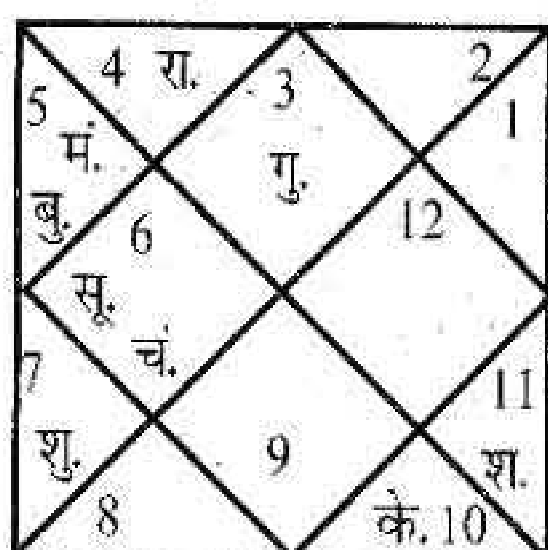
रुपये कमाये जा सकते हैं। शनि भाग्य स्थान में मूलत्रिकोण राशि में होने से ये 'भाग्यशूर' थे। भाग्य पक्ष और पत्नी पक्ष इनकी उन्नति में बराबर के सहयोगी थे।

डॉ. गिरधारी लाल गोस्वामी



जन्म स्थान-चिलियोट (पाक.), जन्म समय-प्रात 3.00, जन्म तिथि-19.8.1935। यह भी भारत प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य की कुण्डली है। जिनके नाम से दिल्ली में एक राजमार्ग भी है। नेहरु परिवार से इनके घरेलू संबंध थे। इस कुण्डली में तृतीयेश सूर्य स्वगृही एवं चतुर्थेश बुध उच्च का **'भद्र योग'** एवं **'नीचभंग राजयोग'** बना कर बैठा है, फलतः पराक्रम एवं सुख दोनों ही घर शक्तिशाली थे। इनके तीन पुत्र हैं और तीनों यशस्वी हैं।

काका हाथरसी (महान हास्य कवि)

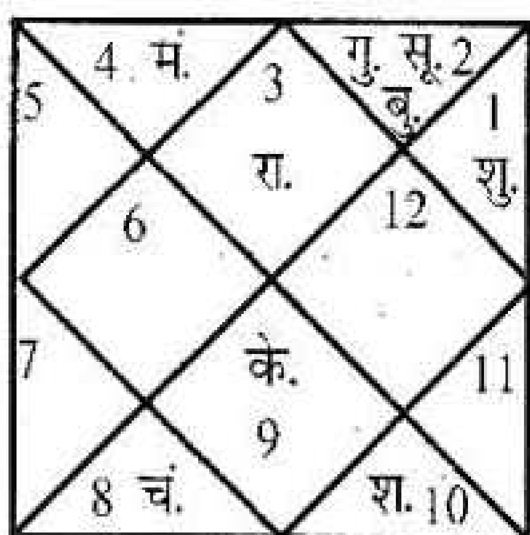




जन्म स्थान-हाथरस, जन्म समय-12.00, जन्म तिथि-18.9.1906। काका हाथरसी का जन्म एक गरीब परविार में हुआ। उनकी युवावस्था संघर्षशील थी। सप्तमेश बृहस्पति के अपने स्थान को देखने के कारण विवाह के बाद काका का भाग्योदय हुआ। तृतीयेश सूर्य बुध के घर में, एवं चतुर्थेश बुध सूर्य के घर के परस्पर **'परिवर्तन योग'** के कारण काका की लेखनी यशस्वी बनी और उसी से उन्हें भौतिक सुखों की प्राप्ति हुई।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन

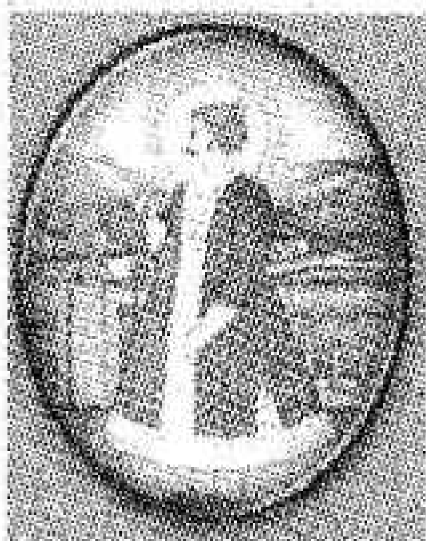
जन्म स्थान-हैदराबाद, जन्म तिथि-8.2.1897, जन्म समय-प्रात 15.00। कुण्डली में उच्चस्थ शुक्र केन्द्र में होने से **'मालव्य नामक राजयोग'** बना।

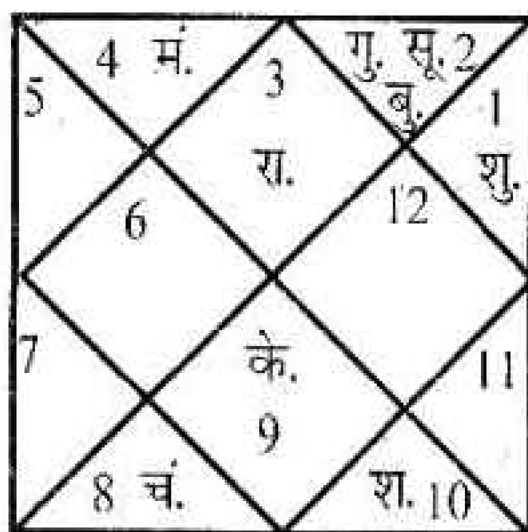




लग्नेश आठवें होने से जन्म साधारण परिवार में होकर बड़े संघर्ष के साथ जातक आगे बढ़ता है। मंगल यहां **विपरीत राजयोग** बनाता है। जातक शुक्र की दशा में भारत के राष्ट्रपति पद पर पहुंच गये।

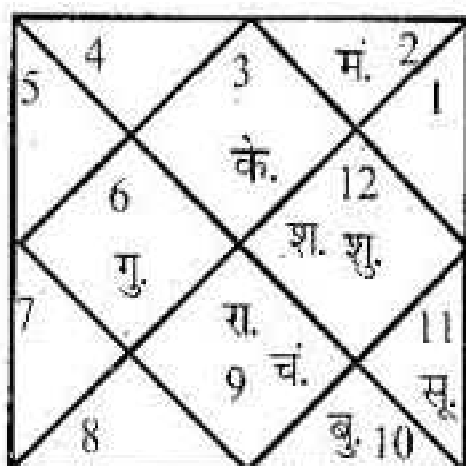
जयपुर महाराजा जयसिंह जी





जयपुर महाराजा श्री जयसिंह ज्योतिषशास्त्र के मूर्धन्य विद्वान थे। उन्होंनें जयपुर, दिल्ली, बनारस व उज्जैन में विभिन्न वेधशालाओं का निर्माण कराया। इस कुण्डली में उच्च का राहु लग्नस्थ होने से ही विशेष राजयोग मुखरित हुआ। वे राहु की दशा में ही महाराजा बने।

अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन

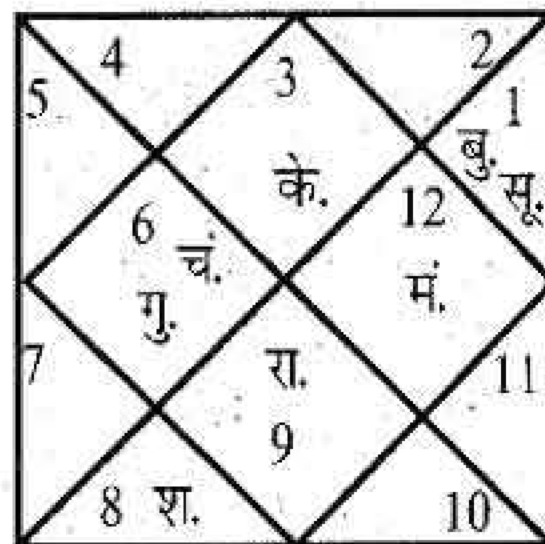




यहां चारों केन्द्र भरे हुए होने के कारण **'आसमुद्रात'** नामक राजयोग बना। उच्च का शुक्र केन्द्र में होने से **'मालव्य'** नामक राजयोग बना। तृतीयेश सूर्य भाग्य में होने से जातक का पराक्रम, यश, कीर्ति, प्रतिष्ठा सात समुद्र पार फैली।

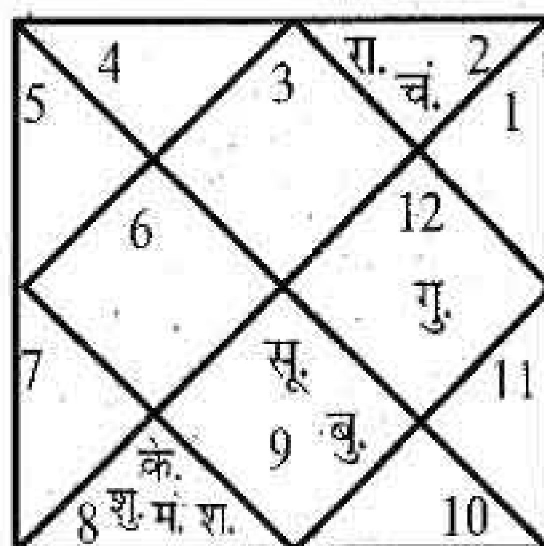
प्रधानमंत्री गोल्डा मेयरे





जन्म स्थान-इजराइल, जन्म तिथि-3.5.1898, जन्म समय-प्रात 9.30। **'गजकेसरी योग'** एवं **'बुधादित्य योग'** के कारण यह महिला आगे बढ़ी। यहां शनि विपरीत राजयोग बनाकर बैठा है। शनि भाग्येश है फलत: शनि की दशा में ही गोल्डा मेयरे इजराइल की प्रधानमंत्री बनी। सूर्य उच्च का होने से इनका पराक्रम विलक्षण था।

पूर्व प्रधानमंत्री श्री जुल्फिकार भुट्टो (पाक.)



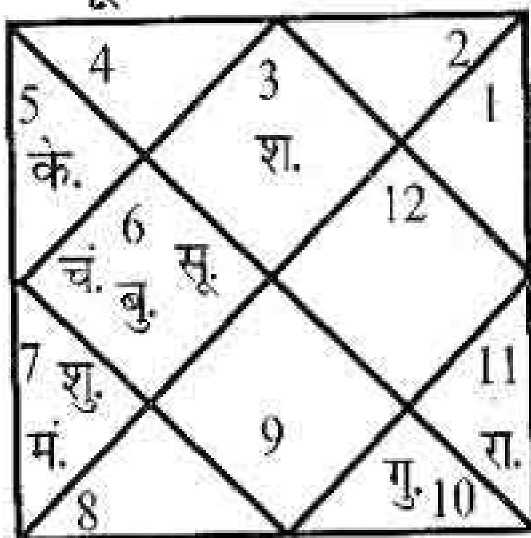


जन्म स्थान-लरकाना (पाक.), जन्म समय- प्रात 5.30, जन्म तिथि-5.1.1928। इनकी पहली शादी 13 वर्ष की आयु में तथा दूसरी 24 वर्ष की आयु में नुसरत भुट्टो से हुई। इनकी बेटी बेनजीर भुट्टो भी पाकिस्तान की प्रधानमंत्री बनी। 1 जनवरी 1963 भुट्टो पहली बार विदेश मंत्री बने। 1970 में श्री भुट्टो पाकिस्तान के प्रधानमंत्री बने। 3 सितम्बर 1977 को इन्हें गिरफ्तार किया तथा 3.4.1979 को

रावलपिंडी में इन्हें फांसी पर लटका दिया। अज्ञातदर्शन के मार्च 79 के अंक में भुट्टो को फांसी देने की भविष्यवाणी की गई थी जो सच हुई। बुध लग्नेश होकर लग्न को देखता हुआ **'लग्नाधिपति योग'** बना रहा है। स्वगृही गुरु केन्द्रस्थ होकर राजयोग बना रहा है। जिसके कारण ये एक बार पाकिस्तान के प्रधानमंत्री पद पर पहुंच गए। चंद्रमा उच्च का एवं मंगल स्वगृही है जो मंगल को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। भुट्टो की मृत्यु फांसी से होगी इसकी भविष्यवाणी हमने बहुत पहले अज्ञातदर्शन में कर दी थी। हैंड प्रिंट व जन्मकुंडली के आधार पर घोषित की गई मृत्यु की तारीख में सिर्फ चार दिन का अंतर निकला।

भुट्टो की कुंडली में छठे स्थान में द्वादश भाव पर्यन्त **'महापद्म नामक कालसर्प योग'** बना जिसके कारण बिलकुल झूठे आरोप में फंसे एवं मृत्युदंड को प्राप्त हुए। जीवन भर कार्य में बाधा एवं निरंतर संघर्ष एवं परस्पर धोखे के कारण इनका जीवन कष्टमय ही रहा।

पूर्व प्रधानमंत्री (भारत) चौधरी देवीलाल





जन्म-25.9.1914, नक्षत्र-चित्रा। चौधरी देवीलाल किसान राजनेता के रूप में पूरे भारत में मशहूर हैं। उनके पुत्र हरियाणा के मुख्यमंत्री है। पंचम भाव में स्वगृही शुक्र एवं मंगल तेजस्वी पुत्रों को जन्म देता है। केन्द्र में **'भद्र योग'** तथा **'बुधादित्य योग'** ने उन्हें भारत का प्रधानमंत्री बना दिया।



ग्वालियर राजमाता श्रीमति विजयराजे सिंधिया

जन्म स्थान-सागर, जन्म तिथि-12.10.1919, जन्म समय-11.00। श्रीमति विजयराजे सिंधिया की कुंडली के तृतीय स्थान में मंगल व शनि की युति से पराक्रम में विग्रह रहा। सम्पत्ति का विवाद सदैव उलझा ही रहा। सप्तमेश गुरु उच्च का होने से श्रीमति विजयराजे सिंधिया

का विवाह शाही खानदान में महाराजा जिवाजी राव सिंधिया से हुआ। वे भाजपा की उपाध्यक्ष पद पर रहीं। उन्होंने बृहस्पति के कारण अनेक बार लोकसभा चुनाव जीते। उनके पुत्र व पुत्री दोनों ही राजनीति में सक्रिय हैं।

4 गु. 3 के. 2
1 चं.
मं. 5 शु. श.
6 सू. 12
7 11
बु. 9 रा.
8 10

राजनेता श्री अर्जुन सिंह (कांग्रेस)



4 मं. 3 2
1 चं.
5 गु. 12
6 के. रा.
7 सू. श. 11
9
बु. 8 शु. 10

जन्म स्थान–सतना, जन्म समय–22.00, जन्म तिथि–5.11.1930, श्री अर्जुन सिंह कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं में से एक हैं। वे मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री, पंजाब के गवर्नर एवं राजीव गांधी के प्रमुख सलाहाकार थे। चारों केन्द्र भरे हुए होने से **'आसमुद्रात् योग'** एवं **'बुधादित्य योग'** के कारण उन्होंने भारत की राजनीति में अपना प्रमुख स्थान बनाया।

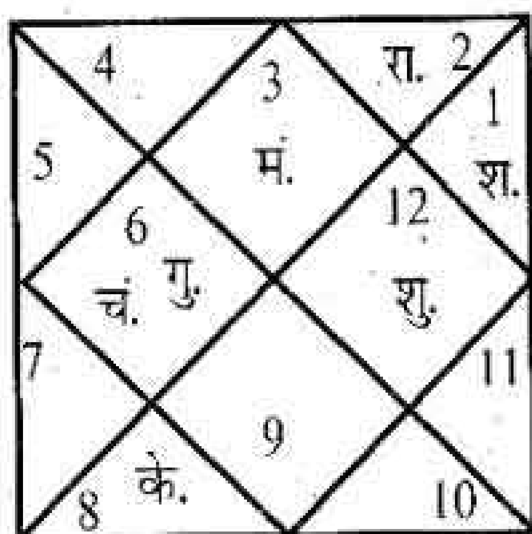
श्री हेनरी किंसिजर

4 3 बु. सू. 2
1 शु.
5 रा. मं. 12
6 श.
7 चं. 11
गु. 9 के.
8 10



जन्म स्थान-फर्थ (जर्मनी), जन्म समय-प्रात 5.30, जन्म तिथि-27.5.1923। अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन के राज्य शासन सचिव श्री हेनरी किंसिजर उन भाग्यशाली व्यक्तियों में हैं। जिन्हें नोबल शान्ति पुरस्कार मिला। पंचम स्थान में **'गजकेसरी योग'** से उन्हें दलाली के व्यापार में भारी लाभ हुआ। धनेश चंद्रमा पंचम होने से ये महाधनी व्यक्तियों में एक हैं। **बुधादित्य योग** व्यय भाव में होने से इन्होंने पूरे विश्व का भ्रमण अनेक बार किया।

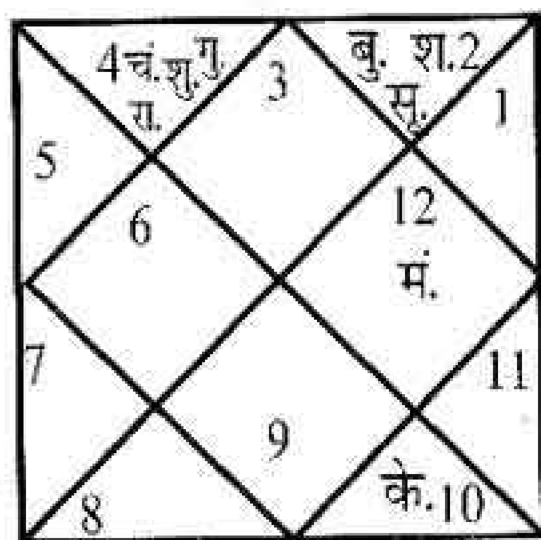
नाथूराम विनायक गोडसे





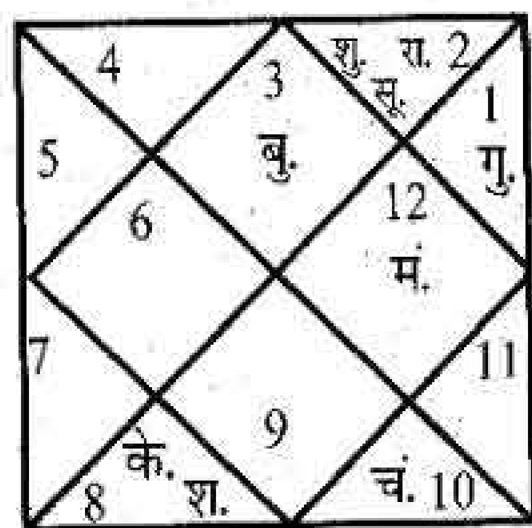
जन्म समय-प्रात 8.30, जन्म तिथि-19.5.1910। लग्नस्थ मंगल व्यक्ति को क्रोधी, दुस्साहसी व खूनी बनता है। द्वादश राहु जेल भेजता है। **'गजकेसरी योग'** के कारण गोडसे बुद्धिजीवी पत्रकार, साहित्यकार थे। बृहस्पति दशा उन्हें 1945 में लगी। बृहस्पति केन्द्राधिपत्य दोष से पीड़ित था। शनि नीच का था। उनके द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या 30 जनवरी 1948 को हुई। जब उन्हें बृहस्पति की दशा में शनि का अंतर चल रहा था। वहीं से दुर्दिनों की शरुआत हुई और इन्हें जेल व मृत्युदण्ड की सजा हुई।

श्री बी.के. मलिक



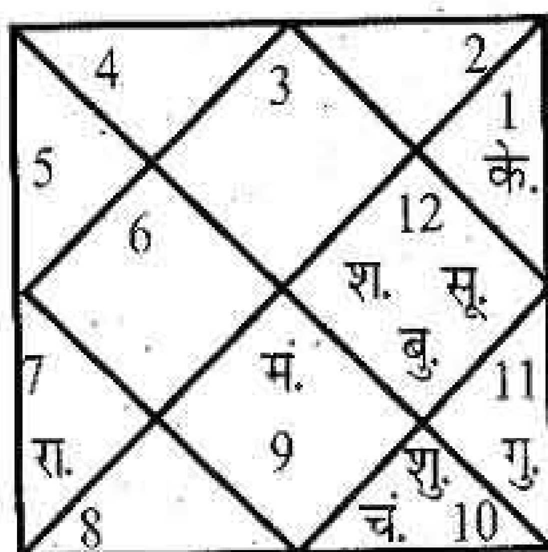
जन्म स्थान-अमृतसर, जन्म समय-7.39, जन्म तिथि-8.6.1943। दिल्ली स्पेशल सुरक्षा बल के डायरेक्टर जनरल पद पर कार्यरत हैं। उनकी कुण्डली में **कालसर्प योग** पूर्ण है। राजयोग कर्त्ता-दसमस्थ मंगल गजकेसरी है। मंगल दिक्बली है वक्री है। दशमेश बृहस्पति उच्च का है। परन्तु व्यय भाव में तीन ग्रहों की युति में उनको अपनी योग्यता के अनुसार उच्च पद न मिल पाया।

श्री जयकरण बालानी (डी.आई.जी.)



जन्म स्थान–नबाब शाह (सिंध), जन्म समय–8.45, जन्म तिथि–1.6.1928। जोधपुर शहर में प्रतिष्ठित सिंधी परिवार में जन्में डी.आई.जी. जयकरण बालानी का नाम प्रसिद्ध समाजसेवी व्यक्तियों में अग्रगण्य हैं। वे अत्यधिक विनम्र स्वभाव के रहे। लग्न में स्वगृही बुध ने **'भद्र योग'** बनाया। जिससे उनका कार्यकाल यशस्वी रहा।

बंगारू लक्ष्मण (राष्ट्रीय अध्यक्ष भाजपा)

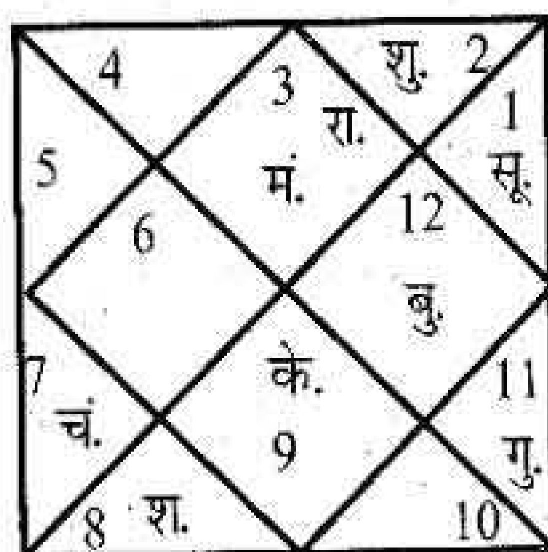




जन्म स्थान–हैदराबाद, जन्म समय–15.00, जन्म तिथि–17.3.1939। केन्द्र में **'बुधादित्य योग'** भाग्य में गुरु के कारण बंगारू लक्ष्मण भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जैसे पद पर आरूढ़ हुए। परन्तु पूर्ण **कालसर्प योग** के कारण मुंह में आया, कौर वापस उलट गया। वे रिश्वत काण्ड में फंसे एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष पद से हाथ धो बैठे।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर

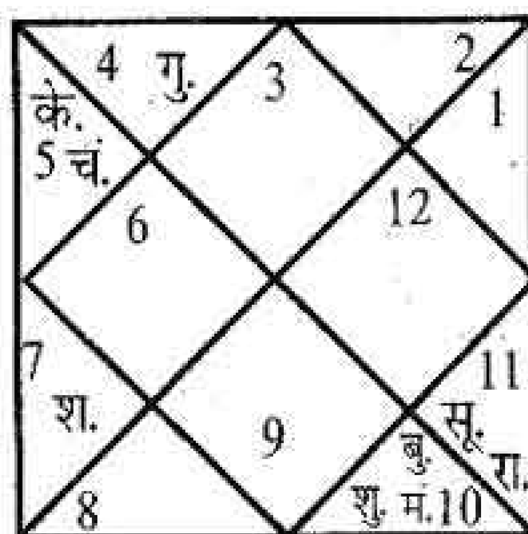




जन्म स्थान-बलिया (उत्तर प्रदेश), जन्म समय- प्रात 11.00, जन्म तिथि-17. 4.1927। लग्नेश बुध केंद्र में, गुरु त्रिकोण में स्वगृहाभिलाषी है। पंचम स्थान में चंद्रमा, देवगुरु बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि लग्न पर है जो स्वगृहाभिलाषी है। जिससे **'पद्मसिंहासन योग'** की सृष्टि हुई। इसी प्रकार पराक्रमेश सूर्य उच्च का लाभ स्थान में **उभयचारी योग** के साथ है। जिन्होंने इन्हें प्रधानमंत्री पद पर पहुंचाया। 'यह कुंडली भारत के अल्पकालिक प्रधानमंत्री की है।' ऐसी अचूक भाविष्यवाणी इनके प्रधानमंत्री बनने के एक वर्ष पूर्व हमारे कार्यालय द्वारा की जा चुकी थी।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई

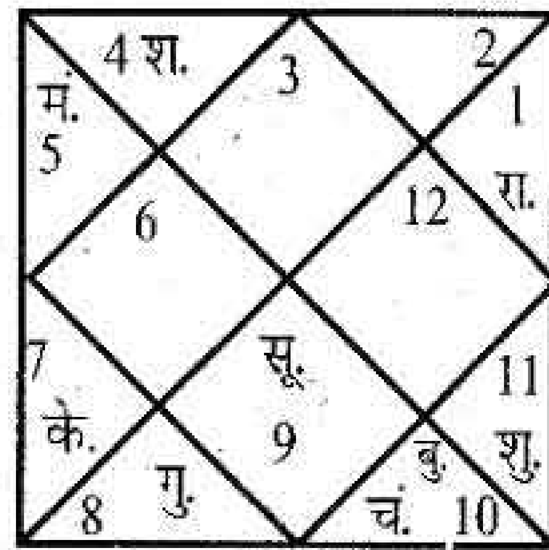




जन्म स्थान-बलसाड़ (गुजरात) जन्म समय- 13.20, जन्म तिथि-29.2. 1896। दूसरे, छठे, आठवें बारहवें स्थान में ग्रह हो, तो **'सिंहासन'** नाम का राजयोग होता है। यह कुंडली बड़ी विचित्र है, जिसमें चारों केन्द्र खाली हैं। गुरु उच्च का, शनि उच्च का, मंगल उच्च का, इन तीन उच्च के ग्रहों ने इन्हें उपप्रधानमंत्री एवं भारत के प्रधानमंत्री तक के पद तक पहुंचा दिया। अष्टम स्थान में मंगल ने इन्हें शांतजीवी बना दिया। अष्टमेश शनि और पंचमेश शुक्र ने परस्पर स्थान परिवर्तन किया जिससे आयु सौ वर्ष से ऊपर की चली गई। चिरंजीवी आयु की दृष्टि से प्रस्तुत कुंडली ज्योतिष प्रेमियों के लिए संग्रहणीय है तथा 'दीर्घायु' का अनुपम उदाहरण है।

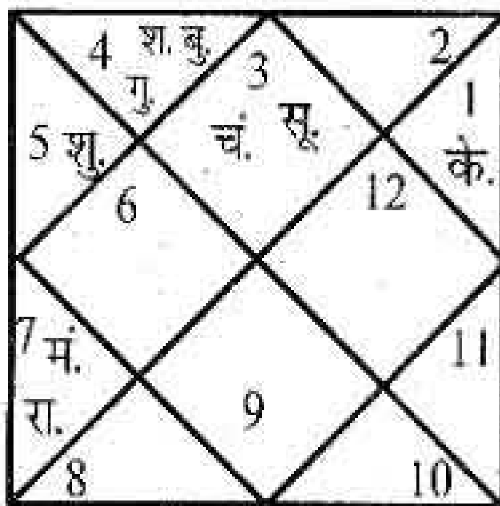
जोधपुर महाराजा श्री गजसिंह जी साहब

जन्म समय-(इष्ट) 24.57, जन्म तिथि- 13.1.1948। जोधपुर महाराजा गजसिंह का नाम नवकोटि मारवाट के धनी के रूप में आदर के साथ लिया जाता है। पराक्रमेश सुख केन्द्र में होने से पराक्रम अक्षुण्ण रहेगा। शुक्र उच्चाभिलाषी है। इस कुण्डली में धनेश चन्द्र ने लाभेश भाग्येश शनि के साथ 'राशि परिवर्तन' किया

है। यह **महाधनशाली** एवं **कीर्तिवन्त योग** है। इनका राजतिलक 12 मई 1952 को हुआ।

श्री एस.बी. चव्हाण



जन्म समय-5.30, जन्म तिथि-14.7.1920। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एस. बी. चव्हाण पी.वी. नरसिम्हा राव के कार्यकाल में भारत के गृहमंत्री जैसे महत्वपूर्ण पद पर रह चुके हैं। लग्न

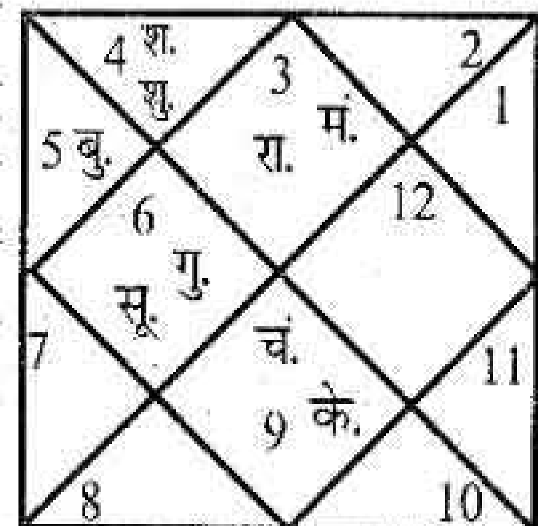


में सूर्य एवं उच्च के गुरु ने इन्हें राजपद तो दिया पर पूर्ण **कालसर्प योग** के कारण इन्हें स्थाई कीर्ति जितनी मिलनी चाहिए, नहीं मिल पाई। यहां चन्द्र एवं बुध ने परस्पर भाव परिवर्तन किया। इससे भी राजयोग शक्तिशाली बना। पंचम में राहु होने के कारण संतान शक्तिशाली राजयोग वाली नहीं हो पाई।

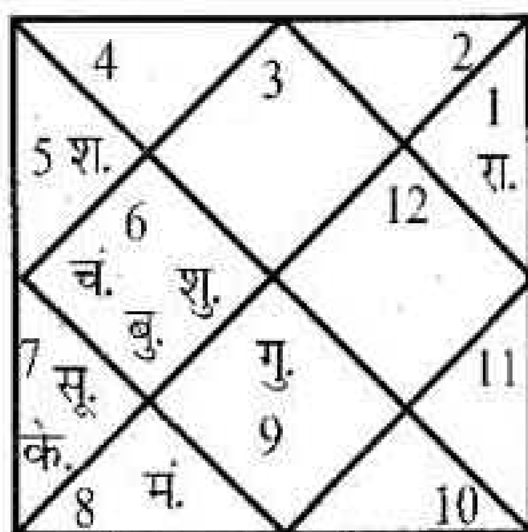


पूर्व वित्तमंत्री पी. चिदम्बरम्

जन्म स्थान- कराईकुण्डी (तमिलनाडू), जन्म समय-11.47, जन्म तिथि-16.9.1945। यहां मिथुन के राहु ने राजयोग प्रदान किया है। सूर्य एवं बुध ने परस्पर घर परिवर्तन किया है। इससे लग्न, सुख एवं पराक्रम तीनों स्थान शक्तिशाली हो गये। पी. चिदम्बरम परम बुद्धिशाली रहे तथा वित्त विभाग में संबंधित मंत्रालय में भी यशस्वी कार्यकाल में जुड़े रहे।



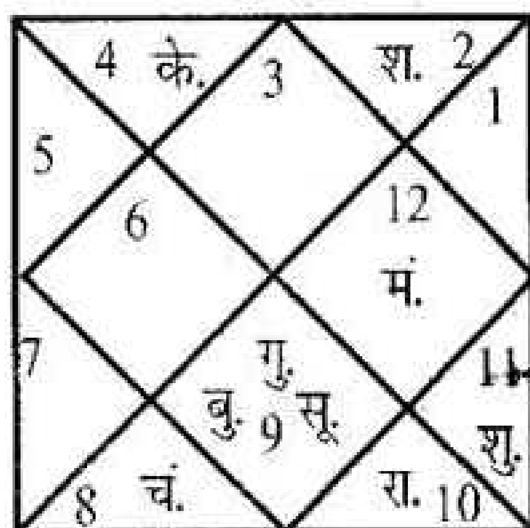
श्री प्रमोद महाजन युवा नेता (भाजपा)





जन्म स्थान-हैदराबाद, जन्म समय-प्रात 21.00, जन्म तिथि-30.10.1948। केन्द्रस्थ उच्च के बुध से **'भद्र योग'** बना। शुक्र के कारण **'नीचभंग राजयोग'** बना। फलत: भाजपा की राजनीति में युवा नेता प्रमोद महाजन का एक विशिष्ट स्थान है। गुरु स्वगृही केन्द्र में **'हंस योग'** बना रहा है। इससे वे भारत के पूर्व रक्षा मंत्री जैसे पद को प्राप्त कर चुके हैं। मंगल छठे विपरीत राजयोग बना रहा है। अत: आगे भी राजनीति में इनका भविष्य उज्जवल है।

श्रीमति प्रियंका गांधी

जन्म स्थान-दिल्ली, जन्म समय-प्रात 17.05, जन्म तिथि-12.1.1972। भारतीय राजनीति एवं नेहरु परिवार के वारिस के रूप में कांग्रेसजन प्रियंका की ओर बड़ी आशाभरी दृष्टि से देख रहे हैं। दशम स्थान में दिक्बली मंगल, सप्तम में बृहस्पति राजयोग की सृष्टि कर रहा है। **बुधादित्य योग** एवं **हंस योग** इनको उच्च पद अवश्य दिलायेगा।

मुख्यमंत्री जयललिता

जन्म स्थान-चैन्नई, जन्म समय-2.34, जन्म तिथि-24.2.1948। कु. जयललिता की कुण्डली में गुरु केन्द्र में होने से **हंस योग** बना। शुक्र उच्च का केन्द्र में होने



से **'मालव्य योग'** बना। ये दोनों राजयोग महान शक्तिशाली हैं। जिससे जातक शक्तिशाली मुख्यमंत्री पद पर वन्दित है। चन्द्र+मंगल **लक्ष्मी योग** पराक्रम बढ़ा रहा है। बुधादित्य योग भाग्य स्थान में राजपक्ष में शत्रुओं का मान-मर्दन करने में सहायक है।

दलित उपप्रधानमंत्री बाबू जगजीवन राम



बाबू जगजीवन राम का नाम दलित राज नेताओं में अग्रणी रहा। केन्द्र में उच्च के शुक्र ने **'मालव्य योग'** बनाया। **बुधादित्य योग नीचभंग राजयोग** ने उन्हें भारत के रक्षामंत्री से उप प्रधानमंत्री तक की कुर्सी तक पहुंचाया। आसमुद्रात् योग में उनकी कीर्ति भी अक्षुण्ण बनी रही।

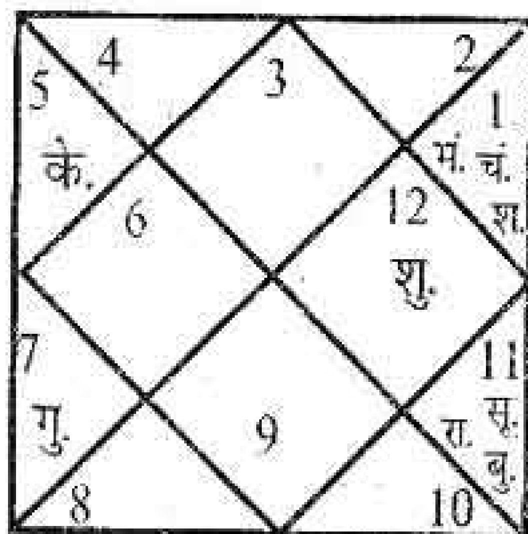
श्री बिल गेटस्, दुनिया का सबसे धनी व्यक्ति



जन्म स्थान-सिएटल (अमेरिका), जन्म समय-20.58, जन्म तिथि-28.10

1955। विश्व के सर्वाधिक धनी व्यक्तियों में बिल गेट्स का विशिष्ट स्थान है। कम्प्यूटर की दुनिया के माध्यम से उन्होंने देश-विदेश में अपूर्व ख्याति अर्जित की। केन्द्र में उच्च के बुध से **'भद्र योग'** ने उन्हें यशस्वी राजा बना दिया तो पंचम में **'किम्बहुना योग'** से वे अरब-खरबपति बन गये।

श्री उमर अब्दुल्ला (मंत्री)

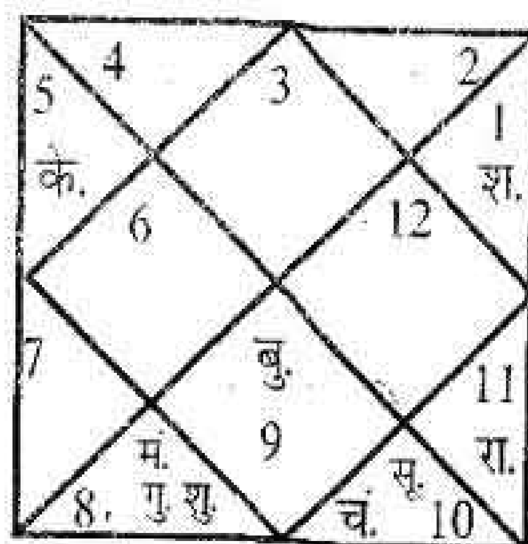




शेख श्री उमर अब्दुल्ला का नाम जम्मू-कश्मीर की राजनीति में प्रमुख स्थान रखता है। केन्द्रस्थ उच्च के शुक्र ने **'मालव्य'** योग बनाया, जिससे वे राज्य के मंत्री बने। केन्द्र की राजनीति में भी उनका महत्वपूर्ण हस्तक्षेप है। लाभ स्थान में **'नीचभंग राजयोग'** एवं भाग्य स्थान में **'बुधादित्य योग'** होने से आगे भी राजनीति में उन्हें सफलता प्रदान करता रहेगा।

युवराज दीपेन्द्र



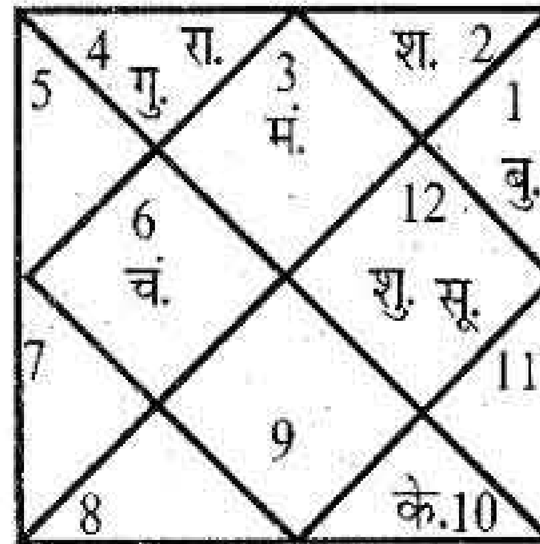


जन्म स्थान-नेपाल, जन्म समय-प्रात 18.00 सायं, जन्म तिथि-27.1.1971। नेपाल नरेश एक ऐसे कुख्यात व्यक्ति के रूप में याद किये जायेंगे, जिन्हें न तो राजगद्दी मिली न प्रेमिका। नीच का शनि मलिन बुद्धि देता है तथा छठे, आठवें स्थान में शुभ ग्रहों की उपस्थिति ने सारे राजयोग नष्ट कर दिये। 28 वर्ष की आयु

में वे स्वयं मारे गये एवं अपने परिवार को भी मार डाला। उनकी मृत्यु 4.6.2001 प्रात: 3.45 को काठमण्डू में हुई।

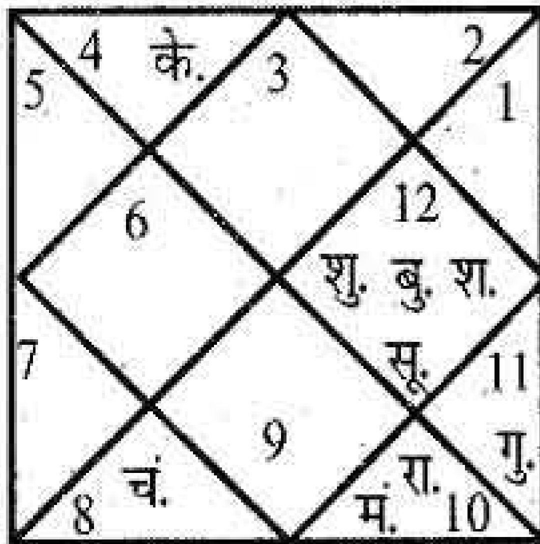
चार्ल्स शोभराज

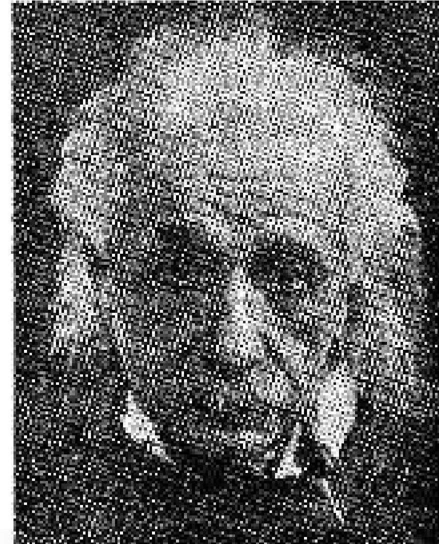




जन्म समय-प्रात 11.30, जन्म तिथि-6.4.1944। एक शातिर अपराधी की यह कुण्डली है। लग्न में मंगल इसे क्रोधी व दुस्साहसी बनाता है। शुक्र उच्च का केन्द्र में **'मालव्य योग'** बना रहा है। जिससे राजा तुल्य ऐश्वर्य एवं विलासी जीवन जिया। चंद्रमा शत्रुक्षेत्री एवं आंशिक **कालसर्प योग** के कारण इसका अन्त दु:खद रहा।

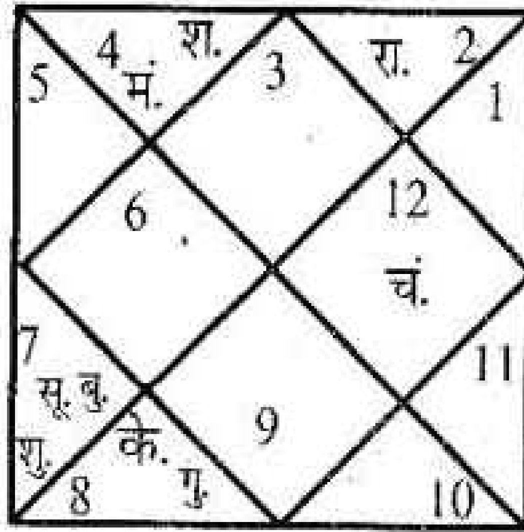
आंइसटीन वैज्ञानिक





जन्म स्थान-उल्म (जर्मनी), जन्म समय-प्रात 11.30, जन्म तिथि-14.3. 1879। महान वैज्ञानिक एलबर्ट आइस्टीन की कुण्डली में **नीचभंग राजयोग** दशम स्थान में है। जिसके कारण उन्हें अद्वितीय कीर्ति मिली। मंगल **विपरीत राजयोग** करके उच्च का है। चंद्रमा नीच का है। परंतु बृहस्पति राहु के नक्षत्र में होने से **'चाण्डाल योग'** बना। आंइसटीन की मृत्यु बृहस्पति की दशा में ही हुई तथा क्रूर रूप से हुई।

श्रीमति हिलेरी क्लिंटन





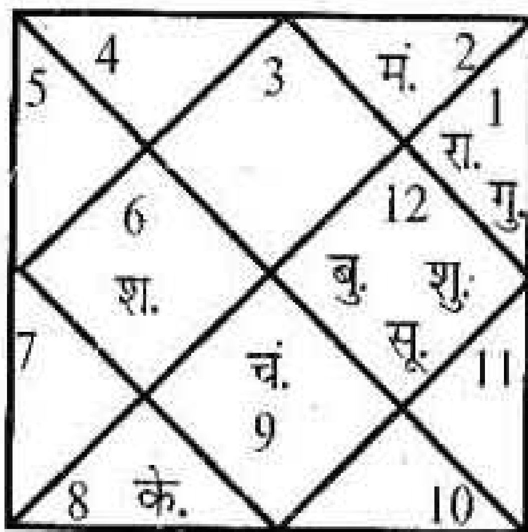
जन्म स्थान-शिकागो (अमेरिका), जन्म समय-रात्रि 8.00 बजे, जन्म तिथि-26.10.1947। अमेरीका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की पत्नी श्रीमति हिलेरी क्लिंटन, कानूनी शिक्षा व समाज शास्त्र की प्रोफेसर रही। पंचम स्थान में **नीचभंग राजयोग** की स्थिति यह बता रही है। विवाह के पांच वर्ष बाद एक प्यारी सी बच्ची चेल्सी की मां बनी। सन् 1998 में इनके पति के ऊपर मोनिका लेविंस्की काण्ड का गंभीर आरोप लगा। श्रीमति हिलेरी ने इसका जमकर मुकाबला किया। इन्हीं दिनों में अपने गृह प्रांत की सीनेटर बनी। मौजूदा दौर में 2006-2007 में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव में भी श्रीमति हिलेरी प्रमुख दावेदार के रूप में खड़ी होंगी।

श्री रामकृष्ण डालमिया

जन्म स्थान-दिल्ली, जन्म समय-11.50, जन्म तिथि-7.4.1893। यह कुंडली भारत के प्रसिद्ध पूंजीपति सेठ श्री रामकृष्ण डालमिया की है।

नीच स्थितो जन्मनि यो ग्रह स्यात्तद्राशिनाथोऽथ तदुच्चनाथः।
भवेत् त्रिकोणे यदि केंद्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवती॥

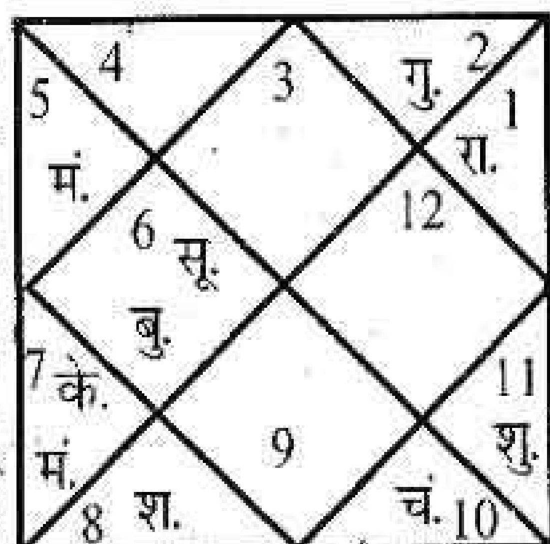
—लग्नचंद्रिका श्लोक 86/पृ. 17



जो ग्रह नीच राशि का हो उस ग्रह के राशि का स्वामी तथा उस राशि का उच्च नाथ केंद्र या त्रिकोण में हो तो श्रेष्ठ राजयोग होता है। यहां बुध नीच का गुरु की राशि में है, गुरु कर्क में उच्च का है। यहां उच्चनाथ चंद्रमा केंद्र में बैठकर लग्न को देख रहा है तथा लग्नेश बुध **''नीचभंग राजयोग''** बनाकर उच्च का शुक्र के साथ केंद्र में है। पराक्रमेश

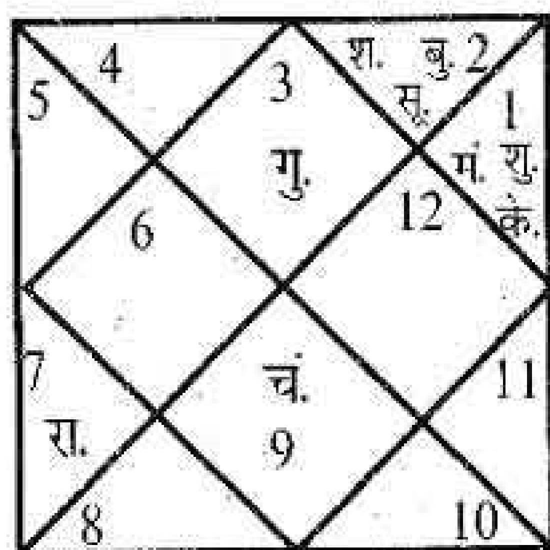
सूर्य दिक्‌बली होकर उच्चाभिलाषी है। उच्चाभिलाषी शनि भी केंद्रस्थ होकर उत्तरोत्तर श्रेष्ठ राजयोग की सृष्टि कर रहा है।

श्री दुर्गाप्रसाद साबू



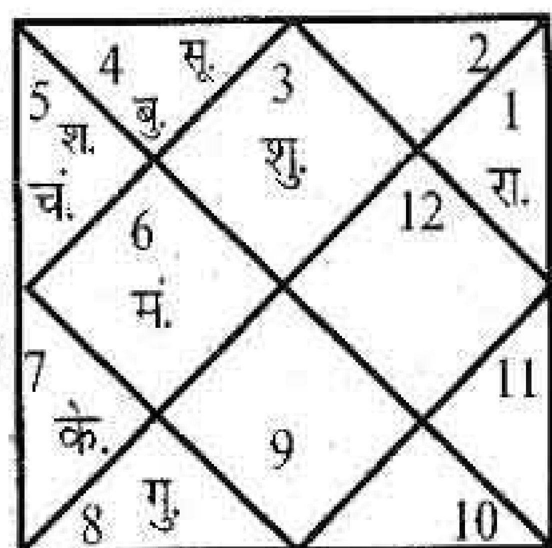
जन्म स्थान–नाटा सिटी, जन्म समय-इष्ट 39/9, जन्मतिथि–11.10.1929। यहां बुध उच्च का केन्द्र में होने से **'भद्र योग'** बना। **बुधादित्य योग** बना। धनेश चंद्रमा अपने घर (धनस्थान) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। लघु सीमेंट प्लांट बनाने वाले भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री दुर्गाप्रसाद साबू विनम्र स्वभाव के तथा धनी होने के साथ-साथ समाजसेवी भी हैं।

श्री जुगलकिशोर बिड़ला



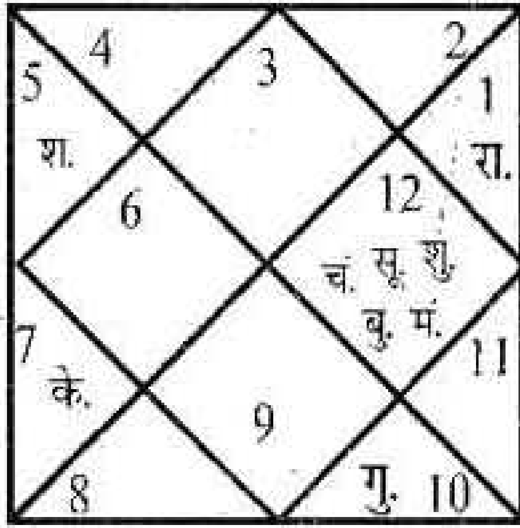
श्री जुगलकिशोर बिड़ला का नाम धनपति घरानों में विशेष है। पर कुण्डली विचित्र है। लग्न में बृहस्पति, **कुलदीपक योग**, **केसरी योग** बना रहा है। सामने चंद्रमा होने से **गजकेसरी योग** बना। **बुधादित्य योग** द्वादश स्थान होने श्री बिड़ला महान् दानी थे तथा पूरे विश्व का भ्रमण किया। शनि द्वादश में विपरीत राजयोग बना रहा है। इसी से वे करोड़पति-अरबपति बने।

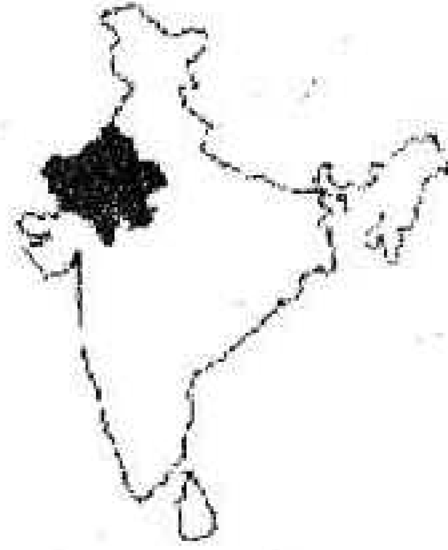
श्री पद्‌म मेहता



जन्म स्थान–जोधपुर, जन्म समय–2.25, जन्मतिथि–6.8.1948। श्री पद्‌म मेहता सम्पादक एवं स्वामी दैनिक जलतेरीय एवं माणक तथा माणक टी.वी. न्यूज के प्रणेता है। **बुधादित्य योग** धनस्थान में शुभ है। मंगल दिक्बली है। परंतु आंशिक **कालसर्प योग** के कारण जीवन संघर्षमय रहेगा।

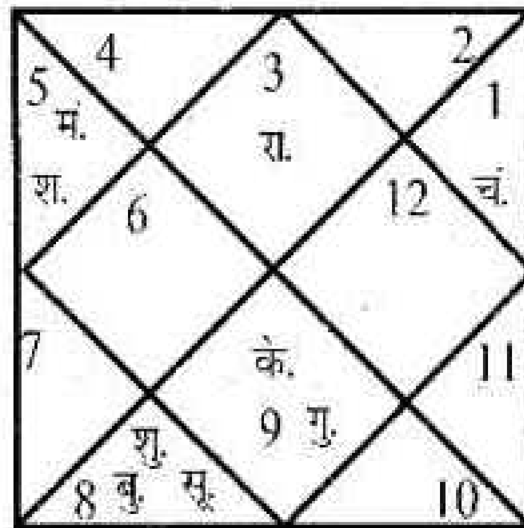
स्वतंत्र राजस्थान की कुण्डली





जन्म समय-प्रात 12.00, जन्म तिथि-30.3.1949। शुक्र केन्द्र में **'मालव्य योग'**, **'नीचभंग राजयोग'**, **'बुधादित्य योग'** मंगल दिक्बली, पंचग्रह युति केन्द्र में होने से राजस्थान प्रान्त में जो भी बाहर का आकर बसेगा, मालोमाल हो जायेगा। राजस्थान सदैव उन्नति पथ पर आगे बढ़ेगा तथा अन्य राज्यों के अपेक्षाकृत बहुत श्रेष्ठ, सभ्य एवं विकासशील राज्य होगा।

शहीद खुदीराम बोस (मृत्युदण्ड भोगी)

केन्द्र के पाप ग्रह, गुरु पाप पीड़ित हैं। लग्न छठे **'लग्नभंग योग'** **पराक्रमभंग योग संततिहीन योग** शुभ ग्रह छठे होने से जातक को देशभक्ति हेतु फांसी की सजा मिली। यहां बृहस्पति ने **'हंस योग'** बनाकर जातक को अमर अनन्त कीर्ति प्रदान कर दी।

